वर्तमान तीर्थंकर
श्री सीमंधर स्वामी

दादा भगवान कथित

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी

मूल गुजराती संकलन : डॉ. नीरू बहन अमीन

पुनः गुजराती संकलन : दीपक भाई देसाई

हिन्दी अनुवाद : महात्मागण

प्रकाशक : अजीत सी. पटेल
दादा भगवान विज्ञान फाउन्डेशन
1, वरूण अपार्टमेन्ट, 37, श्रीमाली सोसायटी,
नवरंगपुरा पुलिस स्टेशन के सामने,
नवरंगपुरा, अहमदाबाद - 380009,
Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2100

© Dada Bhagwan Foundation,
5, Mamta Park Society, B\h. Navgujarat College,
Usmanpura, Ahmedabad - 380014, Gujarat, India.
Email : info@dadabhagwan.org
Tel : + 91 79 3500 2100

All Rights Reserved. No part of this publication may be shared, copied, translated or reproduced in any form (including electronic storage or audio recording) without written permission from the holder of the copyright. This publication is licensed for your personal use only.

प्रथम संस्करण : 1000, प्रतियाँ, नवम्बर, 2020

भाव मूल्य : 'परम विनय' और 'मैं कुछ भी जानता नहीं', यह भाव!

द्रव्य मूल्य : 40 रुपए

मुद्रक : अंबा मल्टीप्रिन्ट
B-99, इलेक्ट्रॉनिक्स GIDC,
क-6 रोड, सेक्टर-25,
गांधीनगर-382044.
Gujarat, India.
फोन : +91 79 3500 2142

त्रिमंत्र

नमो अरिहंताणं
नमो सिद्धाणं
नमो आयरियाणं
नमो ऊवज्झायाणं
नमो लोए सव्वसाहूणं
एसो पंच नमुक्कारो
सव्व पावप्पणासणो
मंगलाणं च सव्वेसिं
पढमं हवइ मंगलं ॥ १ ॥
ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ २ ॥
ॐ नम: शिवाय ॥ ३ ॥
जय सच्चिदानंद

‘दादा भगवान’ कौन?

जून 1958 की एक संध्या का करीब छः बजे का समय, भीड़ से भरा सूरत शहर का रेल्वे स्टेशन, प्लेटफार्म नं. 3 की बेंच पर बैठे श्री अंबालाल मूलजीभाई पटेल रूपी देहमंदिर में कुदरती रूप से, अक्रम रूप में, कई जन्मों से व्यक्त होने के लिए आतुर ‘दादा भगवान’ पूर्ण रूप से प्रकट हुए और कुदरत ने सर्जित किया अध्यात्म का अद्‌भुत आश्चर्य। एक घंटे में उन्हें विश्वदर्शन हुआ। ‘मैं कौन? भगवान कौन? जगत् कौन चलाता है? कर्म क्या? मुक्ति क्या?’ इत्यादि जगत् के सारे आध्यात्मिक प्रश्नों के संपूर्ण रहस्य प्रकट हुए। इस तरह कुदरत ने विश्व के सम्मुख एक अद्वितीय पूर्ण दर्शन प्रस्तुत किया और उसके माध्यम बने श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल, गुजरात के चरोतर क्षेत्र के भादरण गाँव के पाटीदार, कॉन्ट्रैक्ट का व्यवसाय करनेवाले, फिर भी पूर्णतया वीतराग पुरुष!

‘व्यापार में धर्म होना चाहिए, धर्म में व्यापार नहीं’, इस सिद्धांत से उन्होंने पूरा जीवन बिताया। जीवन में कभी भी उन्होंने किसीके पास से पैसा नहीं लिया बल्कि अपनी कमाई से भक्तों को यात्रा करवाते थे।

उन्हें प्राप्ति हुई, उसी प्रकार केवल दो ही घंटों में अन्य मुमुक्षुजनों को भी वे आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे, उनके अद्‌भुत सिद्ध हुए ज्ञानप्रयोग से। उसे अक्रम मार्ग कहा। अक्रम, अर्थात् बिना क्रम के, और क्रम अर्थात् सीढ़ी दर सीढ़ी, क्रमानुसार ऊपर चढ़ना। अक्रम अर्थात् लिफ्ट मार्ग, शॉर्ट कट।

वे स्वयं प्रत्येक को ‘दादा भगवान कौन?’ का रहस्य बताते हुए कहते थे कि ‘‘यह जो आपको दिखते हैं वे दादा भगवान नहीं हैं, वे तो ‘ए.एम.पटेल’ हैं। हम ज्ञानीपुरुष हैं और भीतर प्रकट हुए हैं, वे ‘दादा भगवान’ हैं। दादा भगवान तो चौदह लोक के नाथ हैं। वे आप में भी हैं, सभी में हैं। आपमें अव्यक्त रूप में रहे हुए हैं और ‘यहाँ’ हमारे भीतर संपूर्ण रूप से व्यक्त हुए हैं। दादा भगवान को मैं भी नमस्कार करता हूँ।’’

निवेदन

ज्ञानी पुरुष संपूज्य दादा भगवान के श्रीमुख से अध्यात्म तथा व्यवहारज्ञान से संबंधित जो वाणी निकली, उसको रिकॉर्ड करके, संकलन तथा संपादन करके पुस्तकों के रूप में प्रकाशित किया जाता है। विभिन्न विषयों पर निकली सरस्वती का अद्‌भुत संकलन इस पुस्तक में हुआ है, जो नए पाठकों के लिए वरदान रूप साबित होगा।

प्रस्तुत अनुवाद में यह विशेष ध्यान रखा गया है कि वाचक को दादाजी की ही वाणी सुनी जा रही है, ऐसा अनुभव हो, जिसके कारण शायद कुछ जगहों पर अनुवाद की वाक्य रचना हिन्दी व्याकरण के अनुसार त्रुटिपूर्ण लग सकती है, लेकिन यहाँ पर आशय को समझकर पढ़ा जाए तो अधिक लाभकारी होगा।

प्रस्तुत पुस्तक में कई जगहों पर कोष्ठक में दर्शाए गए शब्द या वाक्य परम पूज्य दादाश्री द्वारा बोले गए वाक्यों को अधिक स्पष्टतापूर्वक समझाने के लिए लिखे गए हैं। जबकि कुछ जगहों पर अंग्रेजी शब्दों के हिन्दी अर्थ के रूप में रखे गए हैं। दादाश्री के श्रीमुख से निकले कुछ गुजराती शब्द ज्यों के त्यों *इटालिक्स* में रखे गए हैं, क्योंकि उन शब्दों के लिए हिन्दी में ऐसा कोई शब्द नहीं है, जो उसका पूर्ण अर्थ दे सके। हालांकि उन शब्दों के समानार्थी शब्द अर्थ के रूप में, कोष्ठक में और पुस्तक के अंत में भी दिए गए हैं।

ज्ञानी की वाणी को हिन्दी भाषा में यथार्थ रूप से अनुवादित करने का प्रयत्न किया गया है किन्तु दादाश्री के आत्मज्ञान का सही आशय, ज्यों का त्यों तो, आपको गुजराती भाषा में ही अवगत होगा। जिन्हें ज्ञान की गहराई में जाना हो, ज्ञान का सही मर्म समझना हो, वह इस हेतु गुजराती भाषा सीखें, ऐसा हमारा अनुरोध है।

अनुवाद से संबंधित कमियों के लिए आपसे क्षमाप्रार्थी हैं।

❖❖❖❖❖

आत्मज्ञान प्राप्ति की प्रत्यक्ष लिंक

'मैं तो कुछ लोगों को अपने हाथों सिद्धि प्रदान करने वाला हूँ। बाद में अनुगामी चाहिए या नहीं चाहिए? बाद में लोगों को मार्ग तो चाहिए न?'

– दादाश्री

परम पूज्य दादाश्री गाँव-गाँव, देश-विदेश परिभ्रमण करके मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाते थे। आप श्री ने अपने जीवनकाल में ही पूज्य डॉ. नीरू बहन अमीन (नीरू माँ) को आत्मज्ञान प्राप्त करवाने की ज्ञानसिद्धि प्रदान की थी। दादाश्री के देहविलय पश्चात् नीरू माँ उसी प्रकार मुमुक्षुजनों को सत्संग और आत्मज्ञान की प्राप्ति, निमित्त भाव से करवा रही थीं। पूज्य दीपक भाई देसाई को दादाश्री ने सत्संग करने की सिद्धि प्रदान की थी। नीरू माँ की उपस्थिति में ही उनके आशीर्वाद से पूज्य दीपक भाई देश-विदेश में कई जगहों पर जाकर मुमुक्षुओं को आत्मज्ञान करवा रहे थे, जो नीरू माँ के देहविलय पश्चात् आज भी जारी है। इस आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद हज़ारों मुमुक्षु संसार में रहते हुए, ज़िम्मेदारियाँ निभाते हुए भी मुक्त रहकर आत्मरमणता का अनुभव करते हैं।

ग्रंथ में मुद्रित वाणी मोक्षार्थी को मार्गदर्शन में अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगी, लेकिन मोक्षप्राप्ति हेतु आत्मज्ञान प्राप्त करना ज़रूरी है। अक्रम मार्ग के द्वारा आत्मज्ञान की प्राप्ति का मार्ग आज भी खुला है। जैसे प्रज्वलित दीपक ही दूसरा दीपक प्रज्वलित कर सकता है, उसी प्रकार प्रत्यक्ष आत्मज्ञानी से आत्मज्ञान प्राप्त करके ही स्वयं का आत्मा जागृत हो सकता है।

समर्पण

भेद प्रत्यक्ष-परोक्ष की भजना में;
फल की प्राप्ति में साधक को अंतर बहुत।

कागज़ पर चित्रित दीया देगा क्या प्रकाश अँधेरे में ?
शास्त्र की आराधना उसी प्रकार आतम निरावृत न करे!

हाज़िर 'ज्ञानी' जगाएँ आत्म प्रकाश,
अर्जुन का जागा, न जागा संजय या धृतराष्ट्र का।

प्रत्यक्ष तीर्थंकर के दर्शन, आराधना; उस भव में,
करवाए प्राप्त निश्चय ही मोक्ष, न उसमें कोई शंका।

भरत क्षेत्र में न मिलेंगे कोई तीर्थंकर अभी,
महाविदेह क्षेत्र में विचरण करते सीमंधर अभी।

भक्ति सीमंधर की बाँधे ऋणानुबंध,
छूटे बंधन यहाँ के तो बंधे वहाँ का संबंध।

एकावतारी पद की प्राप्ति 'अक्रम ज्ञान' द्वारा,
आत्मज्ञान की प्राप्ति दो घड़ी की 'ज्ञानविधि' द्वारा।

'दादा' ने जोड़ा तार हमारा सीमंधर के संग,
निश्चय ही परभव सीमंधर के सुचरणों में।

रोम-रोम में सीमंधर का गुंजन भजन,
स्वामी के बिना न चाहिए अन्य स्वजन।

प्रभु चरणों में दिल से सर्व समर्पण,
प्रभु भक्ति हेतु जग को यह ग्रंथ समर्पण।

❖❖❖❖❖

प्रस्तावना

मुक्ति का उपाय इस काल में

जीवन में मुक्ति की इच्छा किसे नहीं होती होगी? जीवन के अंतिम ध्येय रूपी मोक्ष की अभिलाषा किसे नहीं होती होगी? लेकिन मोक्ष का वास्तविक स्वरूप समझकर, उस राह पर प्रयाण करने वाले कितने हैं? और फिर उस मार्ग का सही मार्गदर्शन देकर जीव को मुक्ति मार्ग पर प्रयाण करवाने वाला कोई पथदर्शक तो चाहिए न?

शास्त्रों में वर्णन है कि इस पंचम *आरे* (कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा) में भरत क्षेत्र से मोक्ष नहीं है। तीर्थंकर हाज़िर नहीं हैं तो फिर क्या इस क्षेत्र के जीवों की मुक्ति के लिए कोई उपाय ही नहीं है? पूर्व काल में तीर्थंकर और ज्ञानी हो चुके हैं और अनेकों की मुक्ति का कारण बन चुके हैं। लेकिन हाल में जब वे सिद्ध क्षेत्र में विराजमान हैं तब वर्तमान समय में मुक्ति की लिंक क्या? मुक्ति पिपासु जीवों के पुण्योदय से ज्ञानी पुरुष का प्राकट्य होता है और उनके माध्यम से इस पंचम *आरे* में भी मुक्ति का मार्ग खुल जाता है। वर्तमान समय में इस काल में भविजीवों के अनंत काल के पुण्यानुबंधी पुण्य के परिणाम स्वरूप ऐसा ही यह शॉर्ट कट मार्ग ज्ञानी पुरुष श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल को प्राप्त हुआ, जो अक्रम मार्ग के रूप में पहचाना गया। इस अक्रम मार्ग के प्रणेता श्री अंबालाल मूलजी भाई पटेल के अंदर प्रकट हुए परम पूज्य दादा भगवान ने आत्मविज्ञान के माध्यम से मात्र दो ही घंटों में आत्मज्ञान की प्राप्ति करवाई। अनेकों को मोक्ष पंथ पर प्रयाण करवाकर मुक्ति में मग्न कर दिया और आज भी मुक्ति के उस मार्ग पर अनेक मुमुक्षु प्रयाण कर रहे हैं।

ज्ञानी पुरुष जो कि निरंतर मोक्षानुभव से मुक्ति में ही रहते हैं और जगत् के तमाम रहस्यों की थाह पा चुके हैं, वे मुमुक्षुओं को दिशानिर्देश देते हैं कि, मुक्ति अभिलाषियों के लिए प्रत्यक्ष-प्रकट

तीर्थंकर का परिचय होना, उनके प्रति अनन्य भक्ति का उद्‌भव होना, उनके साथ निरंतर तार जोड़ लेना और उनकी शरण प्राप्त करके उनके प्रत्यक्ष दर्शन से केवलज्ञान प्राप्त कर लेना, वही एक मात्र अंतिम उपाय है।

अब यदि इस क्षेत्र से मोक्ष नहीं है या फिर वर्तमान काल में इस क्षेत्र में तीर्थंकर भगवान विहरमान नहीं हैं तो फिर उस ध्येय प्राप्ति का उपाय क्या है?

तो वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी भगवान से तार जोड़ लेना ही एक मात्र उपाय है, जो इस समय में उपलब्ध है।

तो उपकारी कौन?

वर्तमान में तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी हाज़िर हैं। चाहे वे इस क्षेत्र में नहीं हैं लेकिन अन्य क्षेत्र में हैं। अपने भरत क्षेत्र के लिए अत्यंत उपकारी होने के बावजूद भी लोग उनसे अनजान हैं, यह देखकर हृदय द्रवित हो उठता है। हाँ, जैन संप्रदाय में कुछ लोगों को श्री सीमंधर स्वामी के बारे में जानकारी है लेकिन वह सिर्फ सामायिक विधि तक ही सीमित है लेकिन, श्री सीमंधर स्वामी अभी अरिहंत हैं, भरत क्षेत्र के जीवों के कल्याण के मोक्ष के निमित्त हैं, उनका पूर्ण परिचय नहीं है। इसलिए उनके प्रति अनन्य भक्ति भी उत्पन्न नहीं होती। और उनके माध्यम से इस कलियुग में मोक्ष की प्राप्ति हो सकती है, ऐसा है फिर भी उसका योग्य लाभ नहीं ले पाते।

जैन संप्रदाय में नवकार महामंत्र की आराधना तो बहुत होती है लेकिन ऐसे महामंत्र का जितना फल मिलना चाहिए उतना पूर्ण फल नहीं मिलता, तो क्या मंत्र में कोई गलती होगी या फिर बोलने वाले में? समझकर उसकी आराधना हो तो परिणाम अलग ही आएगा न? इसकी स्पष्टता करते हुए दादाश्री कहते हैं कि मंत्र की वास्तविक अर्थ में समझ सहित आराधना नहीं होती है। पत्र तो लिखते हैं लेकिन सही पता मालूम नहीं होने से वह डेड लेटर बोक्स में चला जाता

है। अब क्या भूल हो जाती होगी? तो ज्ञानी उसकी स्पष्टता करते हुए बताते हैं कि मंत्र का प्रथम चरण, 'नमो अरिहंताणं', गत् चौबीसी के तीर्थंकरों के लिए नहीं है लेकिन प्रत्यक्ष देहधारी अरिहंत भगवान श्री सीमंधर स्वामी के लिए है। गत् चौबीसी के तीर्थंकर तो नमो सिद्धाणं पद में आ जाते हैं, क्योंकि वे अभी सिद्धगति में विराजमान हैं। अत: 'नमो अरिहंताणं' में तो प्रत्यक्ष उपकारी श्री सीमंधर स्वामी की ही भजना होनी चाहिए।

वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में बीस तीर्थंकर विराजमान हैं, तो फिर सिर्फ श्री सीमंधर स्वामी भगवान की ही आराधना क्यों करनी चाहिए? तो ज्ञानी पुरुष उसकी विशेष स्पष्टता करते हुए कहते हैं कि उनका इस क्षेत्र के साथ ऋणानुबंध है। कभी उनका जन्म इस क्षेत्र में हुआ होगा, तो वे इस क्षेत्र को अभी भी भूले नहीं हैं! अब ऐसी सटीक समझ अनुभवी ज्ञानी के अलावा और कौन दे सकता है?

ऐसे अत्यंत उपकारी श्री सीमंधर स्वामी तो, जब (भरत क्षेत्र में) अठारहवे तीर्थंकर थे, तब के भगवान हैं और उन्हें सभी तीर्थंकरों ने मान्य किया है। तो यदि हम भी उन्हें मान्य करेंगे तो हमें भी अलभ्य फल की प्राप्ति हो सकती है न!

सीमंधर स्वामी का परिचय

परम पूज्य दादाश्री मानो जैसे कि प्रत्यक्ष देखकर व अनुभव करके वर्णन कर रहे हों, उस तरह छोटी से छोटी हकीकत पर प्रकाश डालते हुए वर्णन करते हैं कि सीमंधर स्वामी अभी पौने दो लाख साल की उम्र के हैं और अभी सवा लाख साल और रहेंगे। उनके शरीर का आकार बड़ा (लगभग पाँच सौ धनुष्य) है, खाने-पीने का हम लोगों से अलग तरह का। वाणी देशना रूपी होती है, संपूर्ण अहंकार रहित, मालिकी रहित वाणी, वीतराग भाव से निकलती रहती है और सब अपनी-अपनी भाषा में समझ जाते हैं। जीवों के लिए निरंतर करुणा रहती है, कल्याण की ही भावना रहती है। केवलज्ञान स्वरूप निमित्त भाव से कल्याण करते हैं, तीर्थ स्वरूप होते हैं। जहाँ-

जहाँ विचरण करते हैं वह तीर्थ बन जाता है। उनके शरीर के परमाणु एकदम शुद्ध होते हैं। उनमें अन्य विशिष्ट प्रकार के चौबीस अतिशय होते हैं। पूरे वर्ल्ड में जितना अन्य कोई जीव पुण्यशाली नहीं होगा, वे उतने पुण्यशाली होते हैं। उनका चरम शरीर होता है, संपूर्ण लावण्य वाला, देखते ही अनन्य भक्ति भाव से मुग्ध हो जाते हैं और जिन्हें आत्म दृष्टि प्राप्त हुई हो, ऐसे लोगों को तो दर्शन मात्र से ही केवलज्ञान हो जाता है। भगवान की दृष्टि पड़ते ही मुक्ति की मुहर लग जाती है। स्वयंबुद्ध होते हैं, जन्म से ही उनमें तीन प्रकार के ज्ञान होते हैं (मति, श्रुति और अवधि) और दीक्षा अंगीकार करने के बाद चौथे, मनःपर्याय ज्ञान की प्राप्ति के बाद केवलज्ञानी का पद प्राप्त करके, बाकी के डिस्चार्ज कर्मों की *निर्जरा* (आत्म प्रदेश में से कर्मों का अलग होना) होती रहती है और वे केवलज्ञान पद में रहकर अनेकों के कल्याण का निमित्त बनते हैं, ऐसे पूर्ण कल्याणकारी प्रकट अरिहंत भगवान को अपने हृदय से कोटि-कोटि वंदन करके, निरंतर उनके प्रत्यक्ष दर्शन की अभिलाषा करके जीवन सार्थक कर लें।

श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के कल्याण यज्ञ के निमित्तों में चौरासी गणधर, दस लाख केवलज्ञानी महाराज, सौ करोड़ साधु, सौ करोड़ साध्वी जी, नौ सौ करोड़ श्रावक और नौ सौ करोड़ श्राविका जी हैं और उनके शासक रक्षक देवों में यक्ष देव श्री चांद्रायण यक्ष देव और यक्षिणी देवी श्री पांचागुली देवी हैं।

तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी का वर्णन शास्त्रों में देखने को मिलता है लेकिन जो बात ज्ञानी के हृदय में है वह अन्य और कहाँ देखने को मिल सकती है? तीर्थंकर के हृदय की जो बात शास्त्रों में नहीं है, वह हमें ज्ञानी पुरुष की वाणी के आधार पर आसानी से समझ में और अनुभव में आती है। तीर्थंकर पद की प्राप्ति, वह कोई एक जन्म के पुरुषार्थ का परिणाम नहीं है लेकिन अनेक जन्मों से लोगों के कल्याण की भावना के फलस्वरूप तीर्थंकर गोत्र बंधता है। कभी भी खुद के सुख का विचार नहीं, खाने-पीने की, सोने की, किसी की नहीं पड़ी होती लेकिन सिर्फ लोक कल्याण की भावना

होती है, वह इस जन्म में उदय में आती है। उनकी वाणी के कोड ऐसे चार्ज हुए होते हैं कि वाणी से किसी भी जीव को दु:ख तो नहीं होता लेकिन किसी जीव का प्रमाण भी आहत नहीं होता। अत: समझ में आता है कि किसी को दु:ख नहीं देने का निश्चय और लोगों के कल्याण की भावना जीव को किस पद तक पहुँचा सकती है! ऐसे कल्याणकारी भगवान के दर्शन मात्र से मोक्ष की मुहर लग जाती है परंतु ज्ञानी पुरुष दिशानिर्देश करते हैं कि केवल दृष्टि मात्र से ही मुक्ति देने में समर्थ ऐसे तीर्थंकर भगवान को पहचानकर, अनन्यता प्राप्त करने की विशेष दृष्टि और समझ हमारे पास होनी चाहिए तभी उनकी वीतरागता के यथार्थ दर्शन होंगे और अपना काम होगा।

रूप-रेखा महाविदेह क्षेत्र की

समग्र ब्रह्मांड को प्रकाशमान करने वाले, केवलज्ञानी भगवान श्री सीमंधर स्वामी जहाँ विद्यमान हैं वह महाविदेह क्षेत्र कैसा होगा? कहाँ होगा? वगैरह का वर्णन शास्त्रों में तो वर्णित है लेकिन परम पूज्य दादाश्री से भी हमें जो विश्वास सहित वर्णन मिलता है तब ज़रूर अहो भाव हो जाता है कि प्रत्यक्ष वहाँ जाए बिना मात्र शास्त्रों के आधार पर ऐसा वर्णन संभव नहीं है। ज्ञानी उनके सूक्ष्म शरीर के माध्यम से उस क्षेत्र का परिचय प्राप्त करते हैं। लेकिन भौतिक विज्ञान से इसकी थाह नहीं पाई जा सकती। स्थूल रूप से वहाँ नहीं पहुँचा जा सकता। ज्ञानी वर्णन करते हैं कि पृथ्वी (से वहाँ महाविदेह) के बीच में ऐसे ठंडे ज़ोन (प्रदेश) आते हैं, जिससे वहाँ जाना संभव ही नहीं है।

शास्त्रों के वर्णन के अनुसार अपने भारत वर्ष से उत्तर दिशा में 19,31,50,000 (उन्नीस करोड़, इकतीस लाख, पचास हज़ार) किलोमीटर की दूरी पर जंबू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र की शुरुआत होती है। इस ब्रह्मांड में कुल पंद्रह क्षेत्र हैं। जहाँ मानव सृष्टि है, जीव सृष्टि है, सज्जन हैं, दुर्जन हैं, राजा हैं, प्रजा हैं, घर-बार सभी कुछ है। लेकिन मनुष्यों की लंबाई-चौड़ाई और आयु वगैरह में उल्लेखनीय अंतर है।

इन पंद्रह क्षेत्रों में से पाँच भरत क्षेत्रों में तथा पाँच ऐरावत क्षेत्रों में पाँचवे *आरे* में तीर्थंकरों की प्रकट उपस्थिति नहीं है। लेकिन पाँच महाविदेह क्षेत्रों में कुल बीस तीर्थंकर विचरण करके करोड़ों जीवों को परम पद की प्राप्ति करवाकर, इस संसार के समसरण मार्ग की भयंकर भटकन से मुक्त करवाकर शाश्वत मोक्ष के अधिकारी बना रहे हैं।

महाविदेह क्षेत्र की विशेषता यह है कि वहाँ पर हमेशा चौथा *आरा* रहता है। वहाँ हमेशा तीर्थंकर भगवान की उपस्थिति होती है और मन-वचन-काया की एकता रहती है इसीलिए उस क्षेत्र से मोक्ष का मार्ग हमेशा के लिए खुला ही रहता है। जबकि यहाँ भरत क्षेत्र में अभी पाँचवाँ *आरा* चल रहा है। मन-वचन-काया की एकता नहीं है, इसीलिए इस क्षेत्र से अभी मोक्षमार्ग खुला हुआ नहीं है लेकिन वाया महाविदेह क्षेत्र अवश्य ही जा सकते हैं।

नियम, क्षेत्र परिवर्तन का

परम पूज्य दादाश्री भरत क्षेत्र में से महाविदेह क्षेत्र में जाने का नियम समझाते हुए बताते हैं कि जीव का स्वभाव जिस *आरे* वाला हो जाता है, जीव नियम से ही वहाँ पर खिंच जाता है। भरत क्षेत्र में रहने वाले पुण्यात्माओं को ऐसा कोई क्षयोपशम का योग या ज्ञानी पुरुष का प्रत्यक्ष योग हो जाए जिससे कि उसके स्वभाव में बदलाव आ जाए, हर एक कर्मोदय का समता भाव से *निकाल* (निपटारा) कर दे, राग-द्वेष नहीं करे, किसी के साथ किंचित्मात्र भी बैर न बाँधे, किसी को किंचित्मात्र भी दु:ख न दे या किसी को किंचित्मात्र भी दु:ख नहीं देने का निरंतर भाव बर्तता रहे, किसी बात में वर्तन से किसी को दु:ख दे दिया जाए तो उसका तुरंत ही प्रतिक्रमण कर ले, तो वह जीव चौथे *आरे* में जन्म लेने के लायक हो गया, ऐसा माना जाएगा। वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी के प्रति ग़ज़ब का आकर्षण रहे, रात-दिन उनकी अनन्य भक्ति हो तो इस क्षेत्र का जीव उनके साथ ऋणानुबंध बाँधकर उनके पास पहुँच जाएगा। यह सब नियम से होता है।

कल्याण अभिलाषी मुमुक्षुओं व महात्माओं के लिए

जिन्हें परम पूज्य दादाश्री का आत्मज्ञान प्राप्त हुआ है, वैसे महात्माओं को भी वे बताते हैं कि, 'मैं तो मात्र निमित्त हूँ। वास्तव में उपकारी तो श्री सीमंधर स्वामी ही हैं। मुझे ही उनके पास जाना है और आपको भी उनकी आराधना करके उनके पास पहुँचने का निर्देश देता हूँ।' आत्मज्ञान प्राप्ति के बाद भूतकाल के तीर्थंकरों की आराधना एक *निकाली* कर्म है। लेकिन वर्तमान तीर्थंकर की आराधना, वह चार्ज कर्म है, जिससे पुण्यानुबंधी पुण्य बंधते हैं और सीमंधर स्वामी के पास जाकर मोक्ष प्राप्ति के सर्व साधन सुलभ हो जाते हैं, इस प्रकार लिंक बद्ध सेटिंग करने में कारण रूप होती है।

महात्माओं को परम पूज्य दादाश्री से दृढ़ विश्वास पूर्वक प्रतीति हो जाती है कि ज्ञान लेने के बाद में, पाँच आज्ञा का पालन करके और सीमंधर स्वामी के प्रति प्रशस्त राग से उनका अगला जन्म जैसे नियम से ही महाविदेह क्षेत्र के लिए गढ़ा जा रहा है। पाँच आज्ञा पालन से एक-दो जन्म लायक कर्म चार्ज होते हैं लेकिन वे कैसे कि पुण्यानुबंधी पुण्य, जो कि सीमंधर स्वामी भगवान की निश्रा में पहुँचा देंगे। इसके लिए कुछ लौकिक क्रिया नहीं करनी है। सिर्फ आज्ञा पालन करेंगे तो उस आज्ञा पालन से उत्पन्न होने वाली शक्तियाँ ही ऐसी हैं जो कि सब काम कर लेंगी।

इसके पीछे विज्ञान इतना ही है कि शुद्धात्मा पद प्राप्त होने के बाद में, स्व-पद में रहकर कर्मों का *निकाल* करें। उससे फिर नया कर्म नहीं बंधेगा, फिर सिर्फ आज्ञा पालन करने लायक ही कर्म बंधन होगा लेकिन वह तो कल्याणकारी है यानी कि आर्तध्यान-रौद्रध्यान नहीं होंगे, पुराने कर्मों का समता भाव से *निकाल* होगा। प्रतिक्रमण से दोष धुलेंगे। कर्म बंधन और गांठों से मुक्ति होगी और नियम से ही अन्य क्षेत्र के लायक बनेगा इसलिए यहाँ पर नहीं रह पाएगा और जहाँ पर चौथा *आरा* चल रहा है वहाँ, महाविदेह क्षेत्र में चला जाएगा।

परम पूज्य दादाश्री कहते हैं कि हमारा सीमंधर स्वामी के साथ

संबंध है। जो कोई आज्ञा पालन करेगा उसे मोक्ष में ले जाने की हम ज़िम्मेदारी लेते हैं। पूज्य दादाश्री की करुणा तो देखो कहते हैं कि हमें तो मोक्ष बर्तता ही है। हमें उस अंतिम मोक्ष की जल्दी नहीं है। हम तो सभी को मोक्ष में पहुँचाने के बाद में मोक्ष जाएँगे। ऐसी निःस्वार्थ करुणा अन्य कहाँ देखने को मिलेगी? जो निरंतर इसी भावना में रहते हों कि लोगों का किस प्रकार से कल्याण हो, ऐसे प्रकट परमात्मा स्वरूप ज्ञानी पुरुष को सहज रूप से कोटि-कोटि वंदन हो ही जाता है।

कोटि-कोटि जन्मों के पुण्य के प्रताप से ऐसा अलभ्य ज्ञान और ज्ञानी मिलते हैं। तो अब दृढ़ निश्चय कर लें कि परम पूज्य दादाश्री द्वारा प्रबोधित आज्ञाओं के पालन द्वारा और मन-वचन-काया की एकता करके मुक्तिदाता श्री सीमंधर स्वामी भगवान की अनन्य शरण स्वीकार करके मुक्ति पंथ पर प्रयाण कर लें।

मुक्ति मार्ग के प्रणेता, ज्ञानी पुरुष दादा भगवान

भक्ति तो हम सभी बहुत करते हैं लेकिन ध्येय और परिणाम लक्षी वास्तविक भक्ति हो, वह अत्यंत आवश्यक है। इसलिए यहीं पर आत्यंतिक मुक्ति का अनुभव करवा देने वाले और वर्तमान तीर्थंकर से संधान करवा देने वाले उत्तम निमित्त, ऐसे ज्ञानी का परिचय प्राप्त करके उनके मार्गदर्शन में ध्येय सिद्धि का पुरुषार्थ कर लेना मुमुक्षुओं के लिए अत्यंत आवश्यक हो जाता है। ज्ञानी तीर्थंकर भगवान के रिप्रेज़ेन्टेटिव (प्रतिनिधि) कहलाते हैं। वे उनके विशेष कृपा पात्र होते हैं और उनका जगत् कल्याण का काम निमित्त भाव से करते हैं। ज्ञानी पुरुष का सीमंधर स्वामी भगवान के साथ कनेक्शन रहता है और यहाँ रहकर भी सूक्ष्म देह से भगवान के पास जाकर प्रश्नों के खुलासे प्राप्त कर सकने का सामर्थ्य रखते हैं।

ऐसा अद्भुत सामर्थ्य रखने के बावजूद भी ज्ञानी तीर्थंकर भगवान को ही *ऊपरी* (पूज्य) के तौर पर रखते हैं और उनका परम विनय कभी भी नहीं चूकते। लघुत्तम पद में रहकर सीमंधर स्वामी को ही

प्राधान्य देकर, लोगों को उनके बारे में सही समझ देकर विशिष्ट प्रकार से कनेक्शन करवा देते हैं ताकि उनके प्रति भक्ति द्वारा वह जीव कल्याण प्राप्त करे और इसलिए उनके सभी प्रयत्न सिर्फ लोगों के कल्याण के लिए ही होते हैं। खुद पूजे जाएँ, ऐसी भावना के बिना वे सीमंधर स्वामी भगवान को पूजनीय पद पर स्थापित करके जगत् के लोगों के लिए एक आदर्श उदाहरण बन जाते हैं।

आराधना देवी-देवताओं की

ज्ञानी पुरुष परम पूज्य दादा भगवान निष्पक्षपाती रूप से सभी देवी-देवताओं की आराधना को प्राधान्य देते हैं। परम विनय पूर्वक सभी धर्मों के देवी-देवताओं को मान्य करते हैं, उनकी भक्ति-आरती करने के लिए समझाते हैं। उनकी भक्ति करने पर पहले यदि कोई विराधना हो गई हो तो उसका *निकाल* हो जाता है और किसी का क्लेम बाकी नहीं रहता और मोक्षमार्ग के अंतराय दूर करने में सहायक होती है। और सभी को तत्त्व दृष्टि से आत्मा के रूप में शुद्धात्मा स्वरूप से नमस्कार करने से मिथ्यात्वी हो जाने के प्रश्न के लिए कोई स्थान ही नहीं रहता।

मोक्षमार्ग में सहायक सभी देवी-देवताओं की आराधना कल्याणकारी होने से हम अत्यंत भक्ति पूर्वक सभी को नमस्कार करके उनके आशीष व कृपा की भावना कर लें।

प्रत्यक्ष की भजना, त्रिमंदिर के माध्यम द्वारा

मंदिर व मूर्तियों की रचना के पीछे तो हिन्दुस्तान का बहुत बड़ा साइन्स रहा हुआ है। मंदिर नाम कमाने के लिए नहीं हैं बल्कि समझकर काम निकाल लेने के लिए हैं। मंदिर हैं, तो लोग थोड़ी-बहुत भक्ति करेंगे, तो उनका कुछ तो कल्याण होगा और उल्टे मार्ग पर जाने से रुकेंगे।

परम पूज्य दादाश्री का खास प्रोपोगेन्डा था कि हिन्दुस्तान के लोग श्री सीमंधर स्वामी भगवान को पहचानकर उनकी भक्ति करें,

उनकी शरण प्राप्त करें तो उनका कल्याण होगा। वे मंदिर का विज्ञान समझाते हुए बताते हैं कि, 'ये मंदिर तो मतार्थ मिटाने के लिए हैं और पंथों व संप्रदायों से मुक्ति हो जाए, उसके लिए हैं।' लेकिन वास्तव में उल्टा ही हो रहा है। परम पूज्य दादाश्री कहते थे कि हम से इन लोगों के दु:ख नहीं देखे जाते। हमारी भावना है कि लोग पंथों व संप्रदायों में से बाहर निकलकर निष्पक्षपाती बनकर कल्याण के मार्ग पर आगे बढ़ें! लोगों को सत् मार्ग की प्रेरणा देने के लिए, निष्पक्षपाती बनाने के लिए त्रिमंदिर की रचना, वह सीमंधर स्वामी का संकेत है। ये सीमंधर स्वामी जो कि प्रत्यक्ष हैं, यदि उनका मंदिर बनेगा तो लोग प्रत्यक्ष को पहचानेंगे, प्रत्यक्ष की आराधना करेंगे और तभी लोगों का कल्याण होगा। जिस दिन घर-घर श्री सीमंधर स्वामी भगवान की आराधना होने लगेगी, जगह-जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे तब हिन्दुस्तान का नक्शा कुछ और ही होगा!

मंदिर में मूर्ति उपासना परोक्ष है लेकिन सीमंधर स्वामी के प्रत्यक्ष हाज़िर होने के कारण उनकी भक्ति से प्रत्यक्ष भक्ति जितना ही फल मिलता है। कुछ जगहों पर सीमंधर स्वामी के मंदिर हैं लेकिन वे पंथों व संप्रदायों के बंधन से मुक्त नहीं रह सके हैं। हिन्दुस्तान की प्रजा के कल्याण के लिए किसी भी भेदभाव के बिना पंथों व संप्रदाय से मुक्त प्रत्यक्ष सीमंधर स्वामी के मंदिरों की रचना अत्यंत कल्याणकारी है। तभी तो परम पूज्य दादाश्री त्रिमंदिर बनवाने के हिमायती थे। ऐसे मंदिर बनें, जिनमें हर एक संप्रदाय के लोग किसी भी जाति-ज्ञाति के भेदभाव के बिना अंदर प्रवेश कर सकें, भगवान की आराधना कर सकें। वे उनके चरण स्पर्श करके धन्यता अनुभव कर सकें। मंदिर में आने वाले हर एक व्यक्ति को यही लगना चाहिए कि, 'ये मेरे ही भगवान हैं'।

त्रिमंदिर में सीमंधर स्वामी भगवान की प्रतिमा, वह प्रकट परमात्मा की प्रतिकृति है। भगवान प्रत्यक्ष हैं इसलिए उनके परमाणु भी बहुत काम करते हैं और भगवान के रक्षक देवी-देवता भी लोगों के कल्याण में बहुत मदद करते हैं, आशीर्वाद देते हैं।

इस त्रिमंदिर में हर एक दर्शनाभिलाषी मुमुक्षु को किसी भी रोक-टोक के बिना किसी भी तरह के सख़्त नियमों के बिना आसानी से प्रवेश उपलब्ध है। और यह निर्विवाद है कि परम पूज्य दादा भगवान की लोक कल्याण की ज़बरदस्त भावना के फलस्वरूप आज यह संभव हुआ है। और हम देख रहे हैं कि त्रिमंदिर में आकर दर्शन करने वाले पुण्यात्मा अवश्य ही निष्पक्षपाती होने का संदेश प्राप्त करके वास्तविक दर्शन करने की तृप्ति का अनुभव करते हैं।

पूजनीय फिर भी न पूजे जाने की कामना

अनेक लोगों को जिनके लिए पूज्य भाव है, ऐसे आत्मज्ञानी परम पूज्य दादा भगवान के लिए लोगों को सहज ही भावना होती है कि उनके बाद जगत् उन्हें पहचान सके, उस हेतु से मंदिर में उनकी मूर्ति रखी जाए लेकिन ज्ञानी पुरुष ने साफ मना कर दिया कि, 'मंदिर में जिनकी मूर्ति हैं उनकी ही रहने दो। हमारी मूर्ति मत रखना। हमें वह मूर्ति प्रथा नहीं चाहिए! और मूर्ति क्यों रखनी है? मैं तो अनंत जन्मों से पुजा-पुजाकर तृप्त हो चुका हूँ। मुझे पूजे जाने की कामना बिल्कुल भी नहीं रही है। यदि आपको रखनी ही हो तो सीमंधर स्वामी भगवान को नमस्कार करती हुई मूर्ति रखना और वह भी प्रतीक के रूप में कि वे पूजने के कामी हैं परंतु पूजे जाने के नहीं! कितना लघुत्तम भाव! कितना विनय! कितनी कारुण्यता!!

मोक्ष प्राप्ति की लिंक आज भी चल रही है

परम पूज्य दादाश्री की अत्यंत करुणाभरी भावना थी कि दस लाख सालों में प्रकट हुआ यह अक्रम मार्ग रुंध नहीं जाना चाहिए। मोक्षमार्ग खुला ही रहना चाहिए। जितने लायक जीव हैं, वे सभी आत्मज्ञान प्राप्त करके महाविदेह क्षेत्र में चले जाने चाहिए। इसलिए कहते थे कि "मैं कुछ लोगों को मेरे हाथों सिद्धि देने वाला हूँ। क्योंकि बाद के लोगों को मार्ग तो चाहिए ही न?"

आज भी आत्मज्ञानी की प्रत्यक्ष लिंक द्वारा अनेक लोग मात्र दो ही घंटों में आत्मज्ञान प्राप्त करके, मुक्ति मार्ग पर प्रयाण कर रहे हैं।

हम सब भावना करें कि सभी जीवों का कल्याण हो और मुक्ति प्राप्त हो...

कैसी अनन्य भक्ति! कैसा समर्पण!

सन् 1976 में परम पूज्य दादाश्री की बीमारी के समय मामा की पोल में उनके निवास पर मुझे उनकी सेवा करने का मौका मिला था। दोपहर को साढ़े बारह बजे खाना खाकर दादाश्री नियमानुसार एक बेंच पर बैठे थे। मैं उनके सामने सोफे पर बैठी थी। बिल्कुल मेरे सामने वाले भाग में ही दीवार पर श्री सीमंधर स्वामी की फोटो लगी हुई थी। बातें करते-करते परम पूज्य दादाश्री को न जाने कोई प्रेरणा हुई होगी या फिर मुझ पर अपनी असीम कृपा बरसाने का समय आ गया होगा कि श्री सीमंधर स्वामी के साथ मेरा विशेष प्रकार से संधान करवा दिया। उस समय के परमानंद की स्थिति का वर्णन करने के लिए मेरे पास शब्द नहीं हैं! तब से लेकर आज तक समय मिलते ही चित्त श्री सीमंधर स्वामी भगवान के चरण कमलों में व्यस्त हो जाता है। उस दिन श्री सीमंधर स्वामी के प्रति उत्कृष्ट भाव उत्पन्न हुआ, जिसके परिणाम स्वरूप वीतराग प्रभु की आरती रची गई। इस आरती में उस अद्‍भुत संधान के सभी रहस्य समा गए हैं!

इस प्रकार वीतरागों का रहस्य परम कृपालु श्री दादा भगवान ने समझाया और श्री सीमंधर स्वामी से संधान करवा दिया। इस घटना के बाद अपूर्व आनंद की अनुभूति होने लगी और ह्रदय में ऐसी प्रबल भावना हुई कि भारत के घर-घर में श्री सीमंधर स्वामी की कीर्तन-भक्ति, पूजा और आरती हो तथा उनकी छवि विराजमान हो।

ह्रदय में ऐसे भावों का प्रवाह सतत बहता रहता है कि इस युग के मनुष्य श्री सीमंधर स्वामी से तार जोड़कर उनके चरणों में स्थान प्राप्त कर लें। अन्यथा यह कार्य आकाश-कुसुमवत् हो जाएगा। 'यह धरती इतने समय तक तीर्थंकर रहित रहने वाली है। इसलिए यदि जल्दी से जल्दी महाविदेह क्षेत्र में 'ट्रान्सफर' हो जाएँ तो वहाँ से श्री

सीमंधर स्वामी के दर्शन प्राप्त करके मोक्ष में चले जाएँ', मन में ऐसी धुन सवार हो गई है। लोग घर-घर श्री सीमंधर स्वामी के गुणगान गाएँ, भजन कीर्तन करें, आरती करें तथा उन्हें हृदयासन पर बिठा दें। और ऐसा होगा भी सही, ऐसी अटल श्रद्धा है। क्योंकि इसके पीछे श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के शासन देवी-देवता, चांद्रायण यक्ष देव और पांचागुली यक्षिणी देवी हैं! जगत् का कल्याण होना ही चाहिए और वह क्यों न हो? अपने सिर पर श्री सीमंधर स्वामी जैसे तीर्थंकरों का आशीर्वाद है और वर्तमान में भरत क्षेत्र में विचर रहे अक्रम मार्गी ज्ञानी पुरुष हैं। इसीलिए ऐसा होना ही चाहिए और वैसा हुआ भी सही! आज सीमंधर स्वामी भगवान घर-घर पहुँच चुके हैं और लाखों लोग सीमंधर स्वामी भगवान से तार जोड़कर धन्यता का अनुभव कर रहे हैं।

- डॉ. नीरू बहन अमीन

वर्तमान तीर्थंकर
श्री सीमंधर स्वामी

[1] हाज़िर अरिहंत भगवान

भजना, सही समझ सहित

दादाश्री : मोक्ष में नहीं जाना है? मोक्ष में जाने का विचार होता है?

प्रश्नकर्ता : जाना तो है ही न!

दादाश्री : तो फिर क्यों खटपट नहीं करते? कोई सिफारिश लाओ न!

प्रश्नकर्ता : भगवान का नाम लेते हैं, वही सिफारिश।

दादाश्री : कौन से भगवान का नाम लेते हो?

प्रश्नकर्ता : दिन भर नवकार मंत्र का जाप करते हैं।

दादाश्री : वह ठीक है। नवकार मंत्र तो शांति देगा। लेकिन नवकार मंत्र का अर्थ समझकर करते हो या बिना समझे?

प्रश्नकर्ता : वह किताब पढ़ी है लेकिन याद नहीं रहता।

दादाश्री : 'नमो अरिहंताणं' का मतलब क्या है?

प्रश्नकर्ता : वह तो पता नहीं, साहब। सभी देवी-देवताओं को

नमस्कार होते हैं इतना हमें पता है, और कुछ पता नहीं है। हमें नवकार मंत्र में विश्वास है। वह करते रहते हैं। ज़्यादा गहराई में उतरा नहीं हूँ मैं।

दादाश्री : देखो तो, ये कहते हैं, 'हम सब जानते हैं।' लेकिन कुछ भी नहीं जानते। सही जाने तो कितना फायदा होगा?

प्रश्नकर्ता : अरिहंत अर्थात् तीर्थंकर।

दादाश्री : हाँ, लेकिन वे कौन हैं? क्या नाम है?

प्रश्नकर्ता : चौबीसों तीर्थंकर आ गए उसमें।

दादाश्री : लेकिन अब वे जो चौबीस तीर्थंकर थे न, वे अभी सिद्ध हो चुके हैं। यदि आप उन्हें 'नमो अरिहंताणं' कहोगे, तो गुनाह है यानी कि वह तो उन्हें खराब लगेगा। उससे तो बहुत नुकसान होगा, हमें दोष लगेगा। वास्तव में तो उन्हें खराब नहीं लगेगा लेकिन उसका प्रतिस्पंदन हम पर आएगा और हमें दोष लगेगा। क्योंकि वे खुद सिद्ध हो चुके हैं फिर भी हमने उन्हें अरिहंत कहा। कोई कलेक्टर हो और उसके गवर्नर बनने के बाद में भी यदि हम उनसे कहें कि, 'एय... कलेक्टर! यहाँ आओ।' तो कितना बुरा लगेगा। नहीं?

प्रश्नकर्ता : लगेगा ही।

दादाश्री : उसी प्रकार से इन्हें अरिहंत मानने से बहुत ही नुकसान होता है, यानी कि जिसका जो पद है, वह पद उसी को शोभा देता है।

अरिहंत किसे कहा जाता है? जो सिद्ध नहीं हुए हों और यहाँ पर देहधारी, केवलज्ञानी हों, उन्हें अरिहंत कहा जाता है। क्रोध-मान-माया-लोभ (रूपी) दुश्मनों का जिन्होंने नाश कर दिया है, ऐसे केवलज्ञानी, उन्हें अरिहंत कहा जाता है। तो अरिहंत को नमस्कार नहीं करते? कौन से अरिहंत को नमस्कार करते हो? क्या भूल हुई, वह जानते हो?

जो चौबीस तीर्थंकर हो चुके हैं, उन्हें अरिहंत कहते हैं। लेकिन यदि सोचा जाए तो वे लोग तो सिद्ध बन चुके हैं। तो जो 'नमो सिद्धाणं' बोलते हैं उसमें वे आ ही जाते हैं। तो अरिहंत का भाग ही बाकी रह जाता है। यानी कि पूरा नमस्कार मंत्र पूर्ण नहीं होता। और अपूर्ण रहने से उसका फल नहीं मिलता, अतः अभी वर्तमान तीर्थंकर होने चाहिए।

एक आचार्य महाराज थे। उनसे मैंने पूछा, 'नवकार मंत्र बोलते हैं?' तब उन्होंने कहा, 'वह तो रोज़ बोलते ही हैं'। मैंने कहा, 'क्या फल मिलता है?' तब कहा, 'वह तो जैसा चाहिए, वैसा फल नहीं मिलता'। मैंने कहा, 'इसमें भूल क्या है, वह जानते हो?'

इसमें कोई भूल होगी क्या, नवकार मंत्र में? आपको क्या लगता है?

प्रश्नकर्ता : नवकार मंत्र में भूल नहीं हो सकती।

दादाश्री : मंत्र में भूल नहीं हो सकती, लेकिन मंत्र बोलने वाले में तो भूल हो सकती है न? यह तो, मंत्र समझने में भूल हुई है।

भूतकाल के तीर्थंकर, वर्तमान में सिद्ध

प्रत्यक्ष उपकारी को 'नमो अरिहंताणं' कहा गया है, वे तो इस भरत क्षेत्र में हैं नहीं और लोग गाते रहते हैं। किसे गाते रहते हैं? यह चिट्ठी किसे पहुँचेगी फिर? यह क्या एक व्यक्ति की भूल है? सभी ऐसी भूल करते हैं? 'इज़ दिस द वे?' मेरी बात समझ में आई आपको?

प्रश्नकर्ता : हाँ, समझ में आई।

दादाश्री : जब तक महावीर थे तब तक तीर्थंकरों को अरिहंत संबोधित करने का अधिकार था। जब तक वह चौबीसी चल रही थी तब तक उनके पर्याय भी चल रहे थे। अब भगवान महावीर ने चौबीसी बंद की और सभी 'एन्ड पोइन्ट' बंद करके फिर चले गए! अब अभी कुछ समय बाद जब और अवतरित होंगे, तब बोला जा सकेगा, 'नमो अरिहंताणं'। तब, चौबीसी चल रही है, ऐसा कहा जाएगा... अभी

चौबीसी ही बंद है अत: प्रकट होने वाले नहीं हैं। और तीर्थंकर कहकर गए थे कि 'अब चौबीसी बंद हो रही है, अब तीर्थंकर नहीं होंगे इसलिए महाविदेह क्षेत्र में जो तीर्थंकर हैं उन्हें भजना। वहाँ पर वर्तमान तीर्थंकर हैं। तो अब वहाँ की भजना करना।' लेकिन वह तो अभी लोगों के *लक्ष* (जागृति) में ही नहीं है। और फिर सभी लोग इन चौबीस तीर्थंकरों को ही अरिहंत कहते हैं। बाकी, भगवान तो सब बताकर गए हैं। लेकिन इन लोगों की समझ टेढ़ी है, तो क्या हो सकता है? इसलिए फल नहीं मिलता न!

भूल तो सुधारनी चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : वह तो शुरू से ही ऐसा चला आया है। इसीलिए सब उसी अनुसार करते रहते हैं। किसी ने सोचा ही नहीं कि अरिहंत अर्थात् जो देह सहित प्रत्यक्ष विचरण कर रहे हों, वैसे होने चाहिए।

दादाश्री : हाँ, देखो न, अब कितनी बड़ी भूल चल रही है! आपको क्या लगता है? अब कुछ सुधरना चाहिए या नहीं सुधरना चाहिए? यह जानने के बाद में लोगों को भूल सुधारनी चाहिए न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, और फिर ऐसा तो मानते ही हैं कि महाविदेह क्षेत्र में वर्तमान तीर्थंकर हैं।

दादाश्री : हाँ, मानते हैं लेकिन उन्हें भजते नहीं हैं, उन्हें अरिहंत मानकर नहीं भजते। 'नमो अरिहंताणं' इन्हीं को, चौबीस तीर्थंकरों को ही कहते हैं।

वर्तमान तीर्थंकर की भजना से 'मोक्ष'

तीन प्रकार के तीर्थंकर हैं। एक हैं भूतकाल के तीर्थंकर, एक हैं वर्तमान काल के तीर्थंकर और एक हैं भविष्य काल के तीर्थंकर! इनमें से भूतकाल के तो हो चुके। उन्हें याद करने से हमें पुण्य फल मिलेगा। उसके उपरांत जिनका शासन हो न, उनकी आज्ञा में रहने से धर्म उत्पन्न होता है। वह मोक्ष की ओर ले जाने वाला होता है।

लेकिन यदि कभी वर्तमान तीर्थंकर को याद करें तो उसकी तो बात ही अलग है! सारी कीमत वर्तमान की ही है, नकद रुपये होंगे तो उसी की कीमत है। फिर जो आएँगे वे रुपये भावी और जो गए, वे तो गए। इसलिए नकद बात होनी चाहिए अपने लिए! इसलिए नकद से पहचान करवा देता हूँ न! और यह सारी बात भी नकद है। दिस इज़ द कैश बैंक ऑफ डिवाइन सॉल्यूशन! नकद होना चाहिए, उधार नहीं चलेगा। और चौबीस तीर्थंकरों को भी हम नमस्कार करते हैं न!

बाकी, संयति पुरुष चौबीस तीर्थंकरों को क्या कहते थे? भूत तीर्थंकर कहते थे, जो भूतकाल में हो चुके हैं, वे। लेकिन अब वर्तमान तीर्थंकरों को ढूँढ निकालो। भूत तीर्थंकरों की भजना करने से अपनी सांसारिक प्रगति होती है, लेकिन अन्य कोई मोक्ष फल नहीं देते। मोक्ष फल तो आज जो हयात हैं, वे देंगे।

पहचान, अरिहंत भगवान की

तब कहते हैं, '**अभी अरिहंत कहाँ पर हयात हैं?**' तब मैंने बताया, '**इन सीमंधर स्वामी को नमस्कार करो**'।

सीमंधर स्वामी ब्रह्मांड में हैं। वे आज अरिहंत हैं, इसलिए उन्हें नमस्कार करो। अभी वे हाज़िर हैं। अरिहंत के रूप में होने चाहिए, तो हमें फल मिलेगा। अत: पूरे ब्रह्मांड में अरिहंत जहाँ कहीं भी हों उन्हें नमस्कार करता हूँ ऐसा समझकर बोलने से उसका फल बहुत अच्छा मिलता है।

महावीर भगवान अभी आज यहाँ दिल्ली में हों, लेकिन यहाँ से उनका नाम लें तो पहुँच जाएगा। उसी प्रकार से यह भी पहुँच जाता है। यह फोन ज़रा आधा मिनट देर से पहुँचता है, लोकिन पहुँच जाता है।

तीर्थंकर श्री 'सीमंधर' स्वामी

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी कौन हैं, वह समझाने की कृपा करेंगे?

दादाश्री : सीमंधर स्वामी अभी महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर साहब हैं। वे अभी अन्य क्षेत्र में हैं। वे खुद हाज़िर हैं, लेकिन अपनी दुनिया में नहीं हैं, अलग दुनिया में हैं। जिस प्रकार ऋषभदेव भगवान हो गए, महावीर भगवान हो गए... उसी प्रकार सीमंधर स्वामी, वे भी तीर्थंकर हैं।

ध्यान में तो सीमंधर स्वामी ही

लोग मुझसे कहते हैं कि, 'आप सीमंधर स्वामी का क्यों बुलवाते हैं? चौबीस तीर्थंकरों का क्यों नहीं बुलवाते?' मैंने बताया, 'चौबीस तीर्थंकरों का तो बोलते ही हैं। लेकिन हम तरीके से बोलते हैं। इन सीमंधर स्वामी का अधिक बोलते हैं। वे वर्तमान तीर्थंकर कहे जाते हैं और यह 'नमो अरिहंताणं' उन्हीं को पहुँचता है।'

नवकार मंत्र बोलते समय साथ में सीमंधर स्वामी का ध्यान आना चाहिए, तभी आपका नवकार मंत्र सही तरीके से हुआ कहा जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वर्तमान में विहरमान बीस तीर्थंकर हैं न?

दादाश्री : हाँ, उन वर्तमान बीस को अरिहंत मानोगे तो आपका नवकार मंत्र फलेगा, वर्ना नहीं फलेगा। आज वर्तमान में होने चाहिए, तभी यह फल मिलेगा। कुल बीस तीर्थंकर हैं। लेकिन अन्य किसी के नाम हमें याद रहते हैं?! उसकी बजाय ये जो महत्वपूर्ण हैं, अपने हिन्दुस्तान के लिए खास महत्वपूर्ण माने गए हैं, उन सीमंधर स्वामी की भजना ज़रूरी है। तभी मंत्र फल देगा। यानी कितने ही लोग इन बीस तीर्थंकरों के बारे में नहीं जानने के कारण या फिर 'उनका और हमारा क्या लेना-देना', ऐसा करके इन चौबीस तीर्थंकरों को ही, 'ये अरिहंत हैं', ऐसा मानते हैं। ऐसी तो कितनी ही गलतियाँ होने से यह नुकसान हो रहा है।

दर्शन से हो सकते हैं निष्पक्षपाती

इस नवकार में ये जो अरिहंत हैं, वे सीमंधर स्वामी हैं, ऐसा मानकर बोलना अब और अन्य मंत्र हैं, तीनों ही मंत्र, वे सब साथ में बोलना। उनके मंदिर में दर्शन करने गए हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं। हम स्थानक वासी हैं।

दादाश्री : आप स्थानक वासी हो फिर भी उनके दर्शन तो करने चाहिए आपको। स्थानक वासी एक मत हैं। अत: अपने मत से बाहर निकलना है, अब कब तक इस मत में पड़े रहना है? मोक्ष में जाना है न, या मोक्ष में नहीं जाना?

दर्शन का वास्तविक तरीका

भगवान के मंदिर में या देरासर में जाकर वास्तविक दर्शन करने की इच्छा हो तो, मैं आपको दर्शन करने का सही तरीका सिखाता हूँ। बोलो, है इच्छा?

प्रश्नकर्ता : हाँ, है। सिखाइए दादा। कल से ही उस अनुसार दर्शन करने जाएँगे।

दादाश्री : भगवान के मंदिर में जाकर कहना कि "हे वीतराग

भगवान! आप मेरे अंदर ही विराजमान हैं, लेकिन मुझे उसकी पहचान नहीं है इसलिए आपके दर्शन कर रहा हूँ। यह मुझे 'ज्ञानी पुरुष' दादा भगवान ने सिखाया है, इसीलिए इस अनुसार आपके दर्शन कर रहा हूँ। तो मुझ पर आप ऐसी कृपा कीजिए कि मुझे मेरे खुद की पहचान हो।'' जहाँ जाओ वहाँ इस अनुसार दर्शन करना। ये तो अलग-अलग नाम दिए हैं। 'रिलेटिवली' अलग-अलग हैं, सभी भगवान 'रियली' एक ही हैं।

मंदिर जाने निकलो तब भी धर्म के विचार नहीं करते! दुकान के बारे में सोचते हैं। कितने ही लोगों को तो रोज़ मंदिर जाने की आदत पड़ चुकी होती हैं। अरे, आदत पड़ी है, इसलिए तू भगवान के दर्शन कर रहा है? भगवान के दर्शन तो रोज़ नए-नए ही लगने चाहिए और दर्शन करने जाते समय अंदर उल्लास, 'फ्रेश का फ्रेश' ही होना चाहिए।

प्रत्यक्ष-परोक्ष की स्तुति में अंतर

प्रश्नकर्ता : महावीर भगवान की स्तुति करें, प्रार्थना करें और हम सीमंधर स्वामी की स्तुति करें, प्रार्थना करें तो, इन दोनों की फलश्रुति में क्या अंतर है?

दादाश्री : सीमंधर स्वामी का नाम नहीं लेता हो और महावीर भगवान का नाम लेता हो तो भी अच्छा है लेकिन भगवान महावीर की स्तुति कौन सुनेगा? वे खुद तो सिद्धगति में जाकर बैठे हैं, उन्हें यहाँ से कोई लेना-देना नहीं है न! वे तो हम अपनी तरह से रूपक बना-बनाकर रखते रहते हैं, वे तो सिद्ध क्षेत्र में जाकर बैठे हैं। उन्हें तीर्थंकर नहीं कहा जाएगा। वे तो अब सिद्ध ही कहे जाएँगे। सिर्फ ये सीमंधर स्वामी ही फल देंगे।

प्रश्नकर्ता : तो फिर 'नमो अरिहंताणं' का फल क्या मिलेगा? और 'नमो सिद्धाणं' बोलने से, दोनों के फल में क्या अंतर होता है?

दादाश्री : 'सिद्धाणं' नहीं बोलेंगे तो चलेगा, लेकिन 'नमो

अरिहंताणं' तो बोलना होगा। मोक्ष हो, उसके लिए 'नमो अरिहंताणं' बोलना होगा।

प्रश्नकर्ता : अत: जो फल मिलता है वह इसी से, 'नमो अरिहंताणं' से ही फल मिलता है, ऐसा हुआ न? 'नमो सिद्धाणं' से कोई फल नहीं मिलता?

दादाश्री : और कोई फल नहीं मिलेगा, वह तो यदि हम ऐसा तय कर लें कि, 'भाई, कौन से स्टेशन जाना है?' तब कहते हैं, 'भाई, आणंद जाना है।' तो आणंद अपने *लक्ष* में रहा करेगा। यानी कि मोक्ष में जाना है, सिद्धगति में जाना है, तो उसका *लक्ष* रहा करेगा। बाकी, सर्व श्रेष्ठ उपकारी अरिहंत कहलाते हैं। अरिहंत किसे कहा जाता है? जो हाज़िर हों, उन्हें। जो गैरहाज़िर हों, उन्हें अरिहंत नहीं कहा जाएगा। प्रत्यक्ष-प्रकट होने चाहिए। इसीलिए अब सबकुछ सीमंधर स्वामी पर ले जाओ। और उनके लिए जीवन अर्पण कर दो अब।

दोनों की भजना के फल में अंतर?

प्रश्नकर्ता : हम सीमंधर स्वामी की भजना करते हैं वह ठीक है लेकिन जो चौबीस तीर्थंकर थे, उनमें से किसी की भजना करें तो क्या उसका फल नहीं मिलेगा?

दादाश्री : कुछ भी न करे उसकी बजाय करे तो अच्छा। लेकिन उससे वास्तविक फल, तीर्थंकरों वाला फल नहीं मिलेगा। जिन्हें तीर्थंकर मानकर करते हैं लेकिन... वे तीर्थंकर नहीं हैं, वे सिद्ध हैं। आपको समझ में आया कि वे सिद्ध हैं?

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : यहाँ पर प्रकट हो तो। भगवान महावीर उनके समय में तीर्थंकर थे। अब समय खत्म हो गया इसलिए सिद्ध हो गए। चौबीसों तीर्थंकर सिद्ध हो चुके हैं जबकि ये (सीमंधर स्वामी) तो, जब हम जाएँगे तब भी तीर्थंकर रहेंगे।

वर्तमान तीर्थंकर बीस

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी वर्तमान तीर्थंकर हैं। वर्तमान में ऐसे अन्य तीर्थंकर भी वहाँ पर हैं। उन सभी को नमस्कार पहुँचाने हैं ?

दादाश्री : हाँ। अभी वर्तमान में महाविदेह क्षेत्र में वैसे बीस तीर्थंकर हैं। वे तो हैं ही और ये सीमंधर स्वामी हैं, अन्य उन्नीस तीर्थंकर हैं, लेकिन अन्य तीर्थंकरों की मूर्ति स्थापित नहीं की है। क्योंकि इनका (सीमंधर स्वामी का) अपने क्षेत्र के साथ संधान है।

बीस तीर्थंकरों में से खास तौर पर सीमंधर स्वामी की भजना इसलिए करनी है कि अपने भरत क्षेत्र के सब से नज़दीक वे हैं और भरत क्षेत्र के साथ उनका ऋणानुबंध है।

हमारे लिए तो, एक तीर्थंकर खुश हो जाएँ तो बहुत हो गया! एक घर पर जाने की जगह हो तो भी बहुत हो गया न? सभी घरों में कहाँ घूमें? और एक को पहुँचा तो सभी को पहुँच गया जबकि सभी को पहुँचाने वाले रह गए। हमारे लिए तो एक ही अच्छे, सीमंधर स्वामी! सभी को पहुँच जाएगा। इन बीस तीर्थंकरों के नाम हैं...

प्रश्नकर्ता : बस, बस, यह तो सिर्फ जानने के लिए पूछा है।

दादाश्री : देख लो न, एक बार नाम तो देख लो। बात निकाली है तो नाम के दर्शन तो कर लो न!

(1) श्री सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(2) श्री युगमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(3) श्री बाहु स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(4) श्री सुबाहु स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(5) श्री सुजात स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(6) श्री स्वयंप्रभ स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(7) श्री ऋषभानन स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(8) श्री अनंतवीर्य स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(9) श्री सुरप्रभ स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(10) श्री विशालप्रभ स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(11) श्री वज्रधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(12) श्री चंद्रानन स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(13) श्री चंद्रबाहु स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(14) श्री भूयंग स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(15) श्री ईश्वर स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(16) श्री नमिप्रभ स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(17) श्री वीरसेन स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(18) श्री महाभद्र स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(19) श्री देवयश स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

(20) श्री अजितवीर्य स्वामी को नमस्कार करता हूँ।

सीमंधर स्वामी या युगमंधर स्वामी जो शब्द हैं वे अपनी भाषा में अर्थ करके नहीं रखे हैं। वहाँ के ही शब्द हैं और 'नमस्कार करता हूँ', वह अपनी भाषा का शब्द है। वर्तमान तीर्थंकर बीस तीर्थंकर हैं, उनमें से एक तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी का भरत क्षेत्र के साथ हिसाब है। तीर्थंकरों को भी हिसाब होते हैं। फिर सीमंधर स्वामी तो आज हाज़िर हैं।

इसीलिए आपको अब अरिहंत किसे मानना है? इन सीमंधर स्वामी को और जो दूसरे उन्नीस तीर्थंकर हैं, उन सभी तीर्थंकरों के साथ संबंध रखने की ज़रूरत नहीं है। एक के साथ रखेंगे न, तो उसमें सभी आ जाएँगे। अत: सीमंधर स्वामी के दर्शन करना। 'हे अरिहंत भगवान! अभी आप ही वास्तव में अरिहंत हैं।' ऐसा करके नमस्कार करना।

इस क्षेत्र से ऋणानुबंध किसलिए?

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी का भरत क्षेत्र के साथ क्या ऋणानुबंध है?

दादाश्री : बड़े लोगों का कभी कहीं जन्म हुआ होता है वहाँ पर उनकी *लागणियाँ* (भावनात्मक प्रेम) होती हैं। इसलिए यहाँ पर इस (भरत) क्षेत्र में पहले की जो *लागणी* होती है, उसे भूलते नहीं हैं।

सीमंधर स्वामी तो जब (भरत क्षेत्र में) अठारहवे तीर्थंकर थे तभी से भगवान हैं! सभी तीर्थंकरों ने अनुमोदना की है। तो इस अनुमोदना रूपी उनकी कृपा होती ही आई है। इसलिए यहाँ का सारा काम जैसे उन्हीं का हो, उस प्रकार से चलता है। बाकी, हैं तो बीस तीर्थंकर, लेकिन इन तीर्थंकर को सभी ज़्यादा एक्सेप्ट करते हैं, वह ऋणानुबंधी हिसाब होगा। हमेशा ही, जो पहले का हिसाब होता है न, वही छूटता है। वीतरागों का नया हिसाब नहीं होता। पहले वाला हिसाब छूट रहा होता है। जिस प्रकार द्रव्य कर्म के आठ कर्म छूटते हैं न, उसी प्रकार से छूटता है, अंदर से साथ में हिसाब छूटते हैं। उन्हें सभी तीर्थंकरों ने मान्य किया था और अभी अगर उन्हें मान्य करेंगे तो हमें फल मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : वे अभी विचरण कर रहे हैं न?

दादाश्री : हाँ, विचरण कर रहे हैं। अभी बहुत काल तक रहेंगे, तार जोइन्ट कर लेंगे तो काम निकल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी साक्षात् हों, ऐसा अनुभव होता है।

दादाश्री : होता है। साक्षात् हैं ही। भाव से संपूर्ण वीतराग ही हैं, तीर्थंकर ही हैं। लेकिन मूल रूप से तो तीर्थंकर नाम कर्म के आधार पर वे यह कर्म भोग रहे हैं अभी। सीमंधर स्वामी तो कैश (नकद) कहे जाते हैं। चाहे अन्य क्षेत्र में हों, लेकिन वे हाज़िर हैं, उनके साथ हमारा तार और सब (संधान) चलता रहेगा। पूरे जगत् का कल्याण होना ही चाहिए। हम तो निमित्त हैं। इसलिए 'दादा भगवान' थ्रू दर्शन करवाता हूँ और वह वहाँ पहुँच जाता है। इसलिए हमने एक जन्म कहा है न, तो यहाँ से फिर वहीं पर जाना है और उनके पास बैठना है। उसके बाद छुटकारा होगा। इसके लिए आज से पहचान करवा देते हैं और 'दादा भगवान' थ्रू नमस्कार करवाते हैं।

पूर्ण के दर्शन से पूर्णता

प्रश्नकर्ता : आपसे आत्मज्ञान की प्राप्ति के बाद जो लोग आत्मा को और इस शरीर को अलग देखना सीखे हैं, 'शुद्धात्मा' को देखना सीखे हैं, वे फिर कहाँ जाएँगे?

दादाश्री : वे सब तो यहाँ से दूसरे मनुष्य लोक, महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे। वहाँ पर तीर्थंकर भगवान हैं, वहाँ पर उनकी भक्ति होगी और एक जन्म रहकर या दो जन्म रहकर मोक्ष में चले जाना है।

प्रश्नकर्ता : आपने हमारे कॉज़ेज़ कर्म बंद कर दिए हैं, तो अब सभी डिस्चार्ज कर्म जब खत्म हो जाएँगे तो हम मोक्ष में जाएँगे। तो बीच में सीमंधर स्वामी से मिलने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : लेकिन हम क्या कहते हैं कि हमारा ज्ञान 356 डिग्री वाला है। मुझे भी अभी चार डिग्री एड करने के लिए वहाँ जाना है।

हम, हमारा जितना भी है उतना आपको दे सकते हैं। अन्य कोई ज्ञान लेना बाकी नहीं रहता। ज्ञान तो संपूर्ण दे ही दिया है। लेकिन उनके (प्रत्यक्ष) दर्शन करने से ही, उस मूर्ति को देखने से ही हम वैसे हो जाएँगे, बस। इसलिए सिर्फ दर्शन ही बाकी रहे हैं। तीर्थंकर भगवान के दर्शन किए बगैर मोक्ष में नहीं जा सकते।

सीमंधर स्वामी को नमस्कार, निश्चय से

प्रश्नकर्ता : यहाँ हम सीमंधर स्वामी के दर्शन करते हैं तो वह निश्चय से है या व्यवहार से?

दादाश्री : वह तो निश्चय से है। सीमंधर स्वामी को तो हम निश्चय से नमस्कार करते हैं। महावीर भगवान को, चौबीस तीर्थंकरों को व्यवहार से।

[2] परिचय, सीमंधर स्वामी का

पूरे ब्रह्मांड के भगवान

प्रश्नकर्ता : हमें सीमंधर स्वामी के दर्शन का वर्णन कीजिए न।

दादाश्री : सीमंधर स्वामी अभी पौने दो लाख साल की उम्र के हैं। अभी सवा लाख साल तक और जीएँगे। वे भी ऋषभदेव भगवान जैसे हैं। ऋषभदेव भगवान पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहे जाते हैं, उसी प्रकार ये भी पूरे ब्रह्मांड के भगवान कहे जाते हैं। ज्ञानी खुद की शक्ति को वहाँ पर भेजते हैं। वह पूछकर फिर वापस आ जाती है। वहाँ पर स्थूल देह से नहीं जा सकते, लेकिन वहाँ पर जन्म हो, तभी जा सकते हैं।

प्रश्नकर्ता : वे अंतर्यामी हैं?

दादाश्री : वे हमें देखते हैं। हम उन्हें नहीं देख सकते। वे पूरी दुनिया को देख सकते हैं।

सीमंधर स्वामी अन्य क्षेत्र में हैं, वह सारी बुद्धि से बाहर की

बात है, लेकिन मेरे ज्ञान में आई है। लोगों को ये समझ में नहीं आ सकता लेकिन हमें एक्ज़ेक्ट (ज्यों का त्यों) समझ में आता है। अब उनके दर्शन करने से लोगों का बहुत कल्याण हो जाएगा।

उनका स्वरूप कैसा है?

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी का स्वरूप कैसा है? देह स्वरूपी हैं या निरंजन-निराकार हैं?

दादाश्री : देह स्वरूपी हैं।

प्रश्नकर्ता : उनका शरीर कैसा है?

दादाश्री : आपको शरीर दिखाई देता है और हमें आत्मा दिखाई देता है। आपको आत्मा नहीं दिखाई देता और हमें आत्मा दिखाई देता है।

प्रश्नकर्ता : उनका शरीर कैसा होता है, मनुष्य जैसा? अपने जैसा?

दादाश्री : शरीर अपने जैसा ही। शरीर इंसान जैसा ही है।

प्रश्नकर्ता : उनके शरीर का साइज़ क्या है?

दादाश्री : साइज़ बहुत बड़ा होता है। हाइट बहुत बड़ी है। सभी बातें ही अलग हैं। उनकी आयु अलग है। उनका खाना-पीना अलग होता है, सबकुछ अलग ही होता है। कुछ काम शरीर करता रहता है। खिलाने वाले-पिलाने वाले अलग होते हैं, अंदर चलाने वाले अलग होते हैं। और आखिर में मोक्ष में पहुँचाने वाले भी अलग होते हैं।

वहाँ पर भी मनुष्यों की *लागणियाँ* सब अपने जैसी ही होती हैं। महाविदेह क्षेत्र में भी इंसान हैं। वे अपने जैसे हैं, देहधारी ही हैं।

प्रश्नकर्ता : तो वे देहधारी हैं, फिर भी हमें क्यों दिखाई नहीं देते? सामने क्यों नहीं आते?

दादाश्री : आपको, इस पास वाले रूम में पलंग है, ऐसा कुछ दिखाई देता है यहाँ से?

प्रश्नकर्ता : पलंग है, वह पता है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन दिखाई नहीं देता। क्यों नहीं दिखाई देता? यानी कि उसके लिए तो केवलज्ञान होना चाहिए।

वे क्या करते होंगे?

प्रश्नकर्ता : ये सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में क्या करते हैं?

दादाश्री : उन्हें कुछ भी करना ही नहीं होता न! कर्म के उदय के अनुसार, बस! खुद के उदय कर्म जो करवाते हैं वैसा करते रहते हैं। उनका खुद अपने आपका इगोइज़म (अहंकार) खत्म हो चुका होता है और दिन भर ज्ञान में ही रहते हैं। जिस तरह महावीर भगवान रहते थे उस तरह से। उनके फॉलोअर्स (अनुयायी) बहुत सारे हैं न। बस, लोग दर्शन करते हैं और वे वीतराग भाव से वाणी बोलते हैं।

उपदेश नहीं परंतु 'देशना'

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी प्रवचन देते हैं क्या?

दादाश्री : उनके पास प्रवचन नहीं होते, उनके पास देशना होती है। वे प्रवचन नहीं देते। प्रवचन तो अहंकारी देता है। जो छठा गुणस्थानक पार कर लेता है, वह प्रवचन दे सकता है।

प्रश्नकर्ता : तो लोग सीमंधर स्वामी की देशना किस तरह से सुनते हैं?

दादाश्री : वे उपदेश नहीं देते, प्रवचन नहीं देते। उनकी देशना होती है। देशना निकलती है न, तब लोग सुनते हैं। देशना अर्थात् उन्हें खुद को नहीं बोलना पड़ता, टेपरिकॉर्डर बोल देता है। यह हमारी देशना है, जो टेपरिकॉर्डर की तरह निकलती है। भगवान मालिक नहीं बनते। हम भी मालिक नहीं बनते। उपदेशक या प्रवचन वाले की मालिकी होती है कि 'यह मेरी वाणी है', 'माइ स्पीच' ऐसा कहते हैं। यानी कि यह 'माइ स्पीच' नहीं है, यह भी मेरी वाणी नहीं है। यह टेपरिकॉर्डर की वाणी है। भगवान की देशना होती है। उपदेशक छठे गुणस्थानक में होता है, इसलिए थोड़ा अहंकार होता है। कुछ बाकी रह गया, इसलिए अहंकार सहित बोलते हैं। इसलिए कहते हैं, 'मैं बोल रहा हूँ'।

प्रश्नकर्ता : भगवान जो देशना देते हैं, वह कौन सा कर्म कहलाता है?

दादाश्री : पूरी टेप खुलती ही रहती है और टेप बजती ही रहती है। ऐसा कुछ नहीं कि, किसी खास विषय पर हो।

प्रश्नकर्ता : यानी कि अपने आप ही निकलती रहती है?

दादाश्री : अपने आप ही निकलती रहती है। वहाँ पर सिर्फ सुनना ही होता है। देशना उसे कहते हैं जिसे सिर्फ सुनना ही होता है।

हमारी भी देशना ही है, लेकिन हमारी देशना उपदेश-आदेश सहित है। उनकी देशना में तो किसी भी तरह की *खेंच* (अपनी बात को सही मानकर पकड़ रखना, आग्रह) नहीं। सभी जाति के लोग सुनते हैं। सभी अपनी भाषा में समझ जाते हैं, जानवर भी अपनी भाषा में समझ जाते हैं। वह तो हमने भी अनुभव किया है कि जानवर हमारी भाषा समझते हैं लेकिन हमारी कम समझते हैं और तीर्थंकरों की पूरी तरह से समझ जाते हैं।

वाणी : केवली की, तीर्थंकरों की

प्रश्नकर्ता : सामान्य केवली भगवंतों की और तीर्थंकरों की वाणी में क्या फर्क है?

दादाश्री : बहुत फर्क है। तीर्थंकर भगवान की वाणी तो 'अतिशय' सहित होती है और केवली की वाणी तो मेरे जैसी ही होती है। जैसा मैं बोलता हूँ न, तो उनकी वाणी मुझसे चार डिग्री ज़्यादा उच्च प्रकार की होती है। मेरी तीन सौ छप्पन डिग्री के बजाय तीन सौ साठ डिग्री हो जाए न, तो मैं जैसा बोलूँगा वैसा ही केवली बोलते हैं। लेकिन केवली किसी का कल्याण नहीं कर सकते। खुद अकेले ही प्राप्ति कर लेते हैं, लेकिन दूसरों का दीपक प्रकाशित नहीं कर सकते। तीर्थंकर के अलावा या भेदज्ञानी के अलावा कोई भी दूसरों को प्राप्ति नहीं करवा सकता।

करुणा भरी वीतरागता

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी को करुणा आती होगी न?

दादाश्री : वीतराग ऐसी करुणा दर्शाते हैं कि कहना ही क्या! उनके पुण्य की तो बात ही क्या! जिसने यह नहीं जाना उस पर भी करुणा है उन्हें और इन पर भी करुणा है! इन लोगों ने क्या किया है कि उन्हें उससे यह फल प्राप्त हुआ और क्या नहीं किया जिससे यह फल प्राप्त नहीं किया! वह सारी करुणा है। सभी प्राप्ति करो, ऐसी इच्छा। लेकिन यदि हम करेंगे तो हमें फल मिलेगा। वे इस क्षेत्र में नहीं आते।

आप याद करोगे तो आपको फल मिलेगा। आप वहाँ वालों को (सिद्धों को) याद करोगे तो फल नहीं मिलेगा।

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी के आप दर्शन करने जाते हैं, तो वे जैसे इस फोटो में हैं, वैसे ही हैं या दिखने में कुछ अलग हैं?

दादाश्री : इस चित्रपट को देखते हो न, उसमें और उनमें अंतर है। लेकिन चित्रपट में अंतर नहीं देखना है, हमें मूल वस्तु सहित देखना है। चित्रपट में अंतर हो सकता है। और हमारे दर्शन फोटो से नहीं हुए हैं, हमें खुद के स्वाभाविक भाव से उनके दर्शन हुए हैं। हमें तो तीर्थंकरों के दर्शन करने हैं, जो अंदर बैठे हैं, उनके! उसमें

हम समझ लें कि अंदर ये जो भगवान दिखाई दे रहे हैं, वे केवलज्ञानी हैं। अंदर क्या सामान है? तो कहते हैं, 'केवलज्ञान', बस, शॉर्ट में इतना ही समझ लो।

सूचित करते हैं संपूर्ण अकर्ता पद

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी का जो प्रतीक है, वह क्या सूचित करता है?

दादाश्री : वे कहते हैं कि, 'इस तरह से बैठना (पद्मासन) और कुछ भी मत करना। कुछ करने जैसा है ही नहीं इस जगत् में, आराम से बैठना। दिन भर बैल की तरह दौड़ते क्यों रहते हो? जगत् सहज है। इसलिए यदि इस तरह से पद्मासन नहीं लग पाए तो पालथी लगाकर बैठना, लेकिन इस प्रकार हाथ में हाथ रखकर बैठना आराम से।' सब काम हो गया!

प्रश्नकर्ता : यह जागृति का प्रतीक कहलाता है?

दादाश्री : प्रतीक होता ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी अर्थात् सीमा को धारण करने वाले, ऐसा क्यों कहा गया है?

दादाश्री : वह तो किसी ने लिखा होगा। बाकी, वे सीमा-वीमा धारण नहीं करते।

जो खुद हाज़िर हैं उन पर कोई टिप्पणी नहीं होनी चाहिए। अरे, कुछ भी नहीं बोलना चाहिए। उनके दर्शन करो। वे तो हाज़िर हैं। कोई टीका नहीं करनी चाहिए। इस तरह देखना भी नहीं चाहिए। जैसे अपने माँ-बाप की मूर्तियों में गहराई में नहीं उतरते, वैसे ही इसमें भी गहराई में नहीं उतरना है, ऐसा इनका विवरण नहीं होना चाहिए, बुद्धि नहीं चलानी चाहिए। यह चीज़ बुद्धि चलाने के लिए नहीं है। बहुत ज़्यादा अक्लमंदी करने जाए तो उसका दुरुपयोग हो जाएगा। बुद्धि तो हम पर भी चलाने के लिए मना किया है।

उसमें प्रतीक शब्द नहीं होना चाहिए। ऐसा मानो कि अपने पिता जी बहुत लंबे हों तो प्रतीक क्या होगा? इस प्रकार देखते रहेंगे तो पिता जी कहेंगे, 'अरे, मूर्ख है, जो इस तरह से देखता रहता है! मुझे इस तरह से मत देख'। कहीं भी प्रतीक को नहीं देखना चाहिए। प्रतीक तो जड़ वस्तु में से दिखाई देता है और ये तो भगवान हैं! उसमें तो बुद्धि पागलपन करेगी।

इन्हें तो ऐसा विचार ही नहीं आता। यह विचार आता है न, वह सब भी पागलपन कहा जाएगा।

अनंत कौन?

प्रश्नकर्ता : आपने ऐसा कहा कि सीमंधर स्वामी की आयु एक लाख साल है। बाद में फिर वापस उनका जन्म होगा?

दादाश्री : नहीं, उनका जन्म-वन्म होता होगा? वे तो तीर्थंकर भगवान हैं! जगत् का कल्याण करने के लिए आए हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वे तो अनंत होते हैं न, उनकी तो कोई मर्यादा ही नहीं होती न?

दादाश्री : नहीं, वे तो हाज़िर हैं इसलिए देहधारी रूपी हैं। राम मोक्ष में गए, इसलिए अनंत हैं। क्योंकि उनको देह नहीं है। जब तक देहधारी हैं, तब तक हम ऐसे कहते हैं, 'देह इतने साल तक टिकेगी।' बाकी, वे खुद तो अनंत ही हैं। अमर तो आप हो, वे भी अमर हैं और ये सब अमर हैं। तो अमर तो, मेरे माध्यम से भी कितने ही हो गए हैं। जो मरेंगे ही नहीं लेकिन शरीर तो मरेगा ही न! शरीर तो कपड़े की तरह मरेगा ही।

प्रश्नकर्ता : उस दृष्टि से देखें तो सभी शरीरों में जो आत्माएँ हैं, वे सब अमर हैं। सिर्फ शरीर का नाश होगा।

दादाश्री : हाँ, लेकिन खुद शरीर को ऐसा नहीं मानता, 'मैं

हूँ'। उन्हें देहाध्यास नहीं है और दुनिया के लोगों को देहाध्यास है। जिनका देहाध्यास चला जाए, वे अमर हो गए।

अँधेरे में रह गया जगत्

प्रश्नकर्ता : राम, कृष्ण, अल्लाह, क्राइस्ट, ऐसे कितने ही हो चुके हैं। लेकिन डेढ़ लाख साल से जो सीमंधर स्वामी हैं, तो उन्हें लेकर इतना अधिक अज्ञान क्यों है?

दादाश्री : सिर्फ उनके प्रति ही नहीं, लेकिन बहुत लोगों के प्रति अज्ञान है। सारा अज्ञान ही है यह! जगत् अँधेरे में ही है। यह तो जितना दिखाई दिया उतना प्रकाश हुआ। बाकी सारा अँधेरा ही है। जगत् तो बहुत विशाल है और फिर सीमंधर स्वामी जैसे अन्य हैं। यह तो शॉर्ट दृष्टि से-शॉर्ट साइट से अँधेरे में ऐसा दिखाई देता है। बड़े-बड़े इन्द्र लोग भी हैं। उनकी भी दो-दो लाख साल की आयु है। नर्कगति में भी जीव हैं, उनकी भी दो-दो लाख साल की आयु है। वहाँ पर आयु की कमी नहीं है। यहाँ सिर्फ मनुष्यों में ही आयु की कमी है। यहीं पर झंझट है सारी!

उनके गुरु कौन?

प्रश्नकर्ता : श्री सीमंधर स्वामी साकार हैं। भगवान को स्वरूप का ज्ञान हुआ, तो उनके कोई गुरु थे या फिर कैसा था? सच्चे गुरु के अलावा और कोई भी रास्ता नहीं बताता।

दादाश्री : यह बात बहुत करने जैसी नहीं है। यह तो तीर्थंकर गोत्र है! इस जन्म में उनको गुरु नहीं होते। गुरु तो कितने ही जन्मों तक बनाए! उनके पूर्व जन्मों के गुरु से यह प्राप्त हो गया! लेकिन इस जन्म में उनको गुरु नहीं होते।

प्रश्नकर्ता : लेकिन शुरुआत में तो गुरु रहे होंगे न? अभी नहीं हैं लेकिन पहले तो रहे होंगे न? उनके साथ पूर्व जन्मों में मुख्य रूप से क्या हुआ होगा?

दादाश्री : ऐसा है न कि सीमंधर स्वामी लगभग पौने दो लाख साल से हैं और इस जन्म में उनके गुरु नहीं हैं। उनके पिछले जन्म में भी गुरु नहीं थे। उससे पहले के तीसरे जन्म में उनके गुरु रहे होंगे। उसके फलस्वरूप यह सब आया।

प्रश्नकर्ता : श्री सीमंधर स्वामी अभी साधु वेश में हैं?

दादाश्री : उन्हें साधु नहीं कहा जा सकता। वे निर्ग्रंथ हैं।

कैसे हो सकते हैं दर्शन यहाँ से?

प्रश्नकर्ता : यहाँ से सीमंधर स्वामी के दर्शन हो सकते हैं?

दादाश्री : आपको नहीं हो सकते। उसके लिए मीडियम (माध्यम) चाहिए न? दादा भगवान के मीडियम थ्रू हो सकता है। या फिर सीमंधर स्वामी के मंदिर बनवाए जाएँ तो हो सकता है। क्योंकि जीवित तीर्थंकर हैं, अभी वर्तमान तीर्थंकर हैं उनका मंदिर बनवाया जाए तो सीधे ही दर्शन होंगे। बनवाना है मंदिर? इतने करोड़ रुपये तो होंगे नहीं न, आपके पास? मंदिर बनवाएँ तो बनवाएँ कैसे?

प्रश्नकर्ता : वे तो कहते हैं कि कमाने के बाद में बनवा सकते हैं।

दादाश्री : कमाकर भी बनवाओ तो अच्छा है। पूरा नहीं बनवाओ तो थोड़ा बनवाना कि, 'भाई, ये सीढ़ियों का खर्च मेरी तरफ से।'

मेरा यही प्रोपोगेन्डा है कि आप तीर्थंकर को जानो। 'अरिहंत

कौन हैं?' उन्हें जानोगे तो आपके दु:ख कम होंगे। अरिहंत ही इस दुनिया के रोग मिटा सकते हैं, सिद्ध नहीं मिटा सकते।

प्रश्नकर्ता : अरिहंत उपकारी।

दादाश्री : या फिर मेरे जैसे ज्ञानी पुरुष, वे उपकारी हैं। इस जगत् में अन्य कोई उपकारी नहीं है। अत: इन अरिहंत को पहचानने के लिए तो बड़ा मंदिर बन रहा है।

देखना! उन्हें परोक्ष मत मानना!

सीमंधर स्वामी के मंदिर बनने चाहिए तो इस देश का बहुत भला होगा।

प्रश्नकर्ता : वह किस प्रकार से भला होगा?

दादाश्री : वर्तमान तीर्थंकर हैं, इसीलिए। वर्तमान तीर्थंकर के परमाणु घूम रहे होते हैं। वर्तमान तीर्थंकरों से बहुत लाभ होता है।

सीमंधर स्वामी जो वर्तमान तीर्थंकर हैं, उन्हें मूर्ति के रूप में भजते हैं। ऐसा मानो न, कि यदि महावीर होते, महावीर के समय में हम होते और वे विहार करते-करते इस तरफ नहीं आ पाते और हम वहाँ नहीं जा पाते, तब यदि हम यहाँ से 'महावीर-महावीर' करते, तो हमें उतना ही लाभ होता न? लाभ होता या नहीं?

प्रश्नकर्ता : होता। मैं घर बैठकर सीमंधर स्वामी को याद करूँ और मंदिर में जाकर याद करूँ, तो उससे फर्क पड़ता है क्या?

दादाश्री : फर्क पड़ता है।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि उसकी प्रतिष्ठा की हुई है, प्राण प्रतिष्ठा की हुई है इसलिए?

दादाश्री : प्रतिष्ठा की हुई है और वहाँ पर देवी-देवताओं का पूरा रक्षण है न! वहाँ वातावरण है, इसलिए ज़्यादा असर होता है।

वह तो, अभी मन में दादा का करो और यहाँ करो तो उससे फर्क तो बहुत पड़ेगा न?

प्रश्नकर्ता : दादा, आप तो जीवंत हैं।

दादाश्री : नहीं, जितने जीवंत ये हैं, उतने ही जीवंत वे हैं। अज्ञानियों के लिए ये जीवंत हैं, ज्ञानियों के लिए तो वे भी उतने ही जीवंत हैं। क्योंकि उनमें जो भाग दृश्य है, वह सारा भाग मूर्ति ही है। मूर्ति के अलावा अन्य कुछ है नहीं। जो पाँच इन्द्रिय गम्य है, उसमें अमूर्त नाम मात्र को भी नहीं है। वह सारा ही जो मूर्त है, और इस मूर्ति में, अंतर नहीं है। डिफरन्स नहीं है। (लेकिन इस मूर्ति में ज्ञानी द्वारा प्रतिष्ठा हुई है और जीवित भगवान की मूर्ति है।)

प्रश्नकर्ता : लेकिन आप में तो अमूर्त है और वहाँ मूर्ति में तो अमूर्त नहीं है, ऐसा मानते हैं न?

दादाश्री : वहाँ अमूर्त नहीं है, लेकिन उनकी प्रतिष्ठा की हुई होती है। तो जैसा प्रतिष्ठा का बल! इन ज्ञानी द्वारा की गई प्रतिष्ठा की तो बात ही अलग है न! प्रकट ज्ञानी की बात ही अलग है। प्रकट ज्ञानी नहीं हों तो क्या से क्या हो जाए?

प्रश्नकर्ता : और प्रकट ज्ञानी होते ही नहीं हैं, ज़्यादातर कितने ही समय तक तो।

दादाश्री : और वे नहीं होते तो भूतकाल के तीर्थंकर, अपने चौबीस तीर्थंकर तो हैं ही न!

पुण्यानुबंधी पुण्य, और वह भी तार जोड़कर

प्रश्नकर्ता : जब हम तीर्थंकरों की या वीतराग भगवान की स्तुति करते हैं, स्तवन करते हैं तब उससे कर्म की *निर्जरा* होती है या पुण्य बंधन होता है?

दादाश्री : ज्ञान लेने के बाद वे तो डिस्चार्ज कर्म हैं। तीर्थंकर

अर्थात् भूत तीर्थंकरों का आप जो करते हो वह सब डिस्चार्ज कर्म हैं। लेकिन वर्तमान तीर्थंकरों का जो करते हो, वह थोड़ा-बहुत चार्ज कर्म है। एक जन्म के लिए जो चार्ज होता है, यह सब उसमें आता है। एक-दो जन्मों के लिए जो चार्ज बाकी बचा है, वर्तमान तीर्थंकरों की (भक्ति) उसमें आती है और भूतकाल के तीर्थंकरों की (भक्ति) डिस्चार्ज कर्म है।

प्रश्नकर्ता : उसमें से कर्म की *निर्जरा* होती है?

दादाश्री : सारे *निर्जरा* होने के लिए ही आते हैं।

प्रश्नकर्ता : दोनों में *निर्जरा* होती है लेकिन वर्तमान की करें तो ऊपर से पुण्य बंधन भी होता है।

दादाश्री : और वर्तमान तीर्थंकरों की भक्ति कर्म बंधन के लिए आती है। एक जन्म या दो जन्म के लिए जो कर्म बंधते हैं, वे। अतः वे *निकाली* नहीं हैं, लेकिन वे ग्रहणीय हैं। इसीलिए हम वर्तमान तीर्थंकर सीमंधर स्वामी बोलते हैं न! क्योंकि हमें उनके पास जाना है। तो भले कर्म बंधन हो लेकिन वहाँ पर जाना है।

प्रश्नकर्ता : यह जो कर्म बंधन होता है वह पुण्यानुबंधी पुण्य बंधता है?

दादाश्री : पुण्यानुबंधी पुण्य और वह भी संधान पूर्वक। यानी सब उच्चतम प्रकार का है।

[3] भूमिका, तीर्थंकर गोत्र की

वे बनते हैं तीर्थंकर

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर किस तरह बनते हैं?

दादाश्री : इस जगत् का कल्याण करने की ही भावना, अन्य कोई भावना ही नहीं होती। खुद का कल्याण हो या न हो। जो खुद के दुःख के लिए नहीं रोते हैं, लोगों के दुःख के लिए ही रोते हैं,

वे धीरे-धीरे-धीरे तीर्थंकर बनने लगते हैं। जो खुद के सुख के लिए रोते रहते हैं, वे कभी भी कुछ बन नहीं सकते। जिन्हें लोगों के दु:ख सहन नहीं होते, पूरे जगत् का कल्याण करने की इच्छा हो, वे फिर तीर्थंकर बनते हैं।

खाने को जो भी मिले, सोने के लिए जो भी मिले, ज़मीन पर सोने को मिले, फिर भी निरंतर भावना क्या रहती है? कैसे इस जगत् का कल्याण हो! अब वह भावना उत्पन्न किसे होती है? जिनका खुद का कल्याण हो चुका हो उन्हीं में वह भावना उत्पन्न होती है। जिसका खुद का कल्याण नहीं हुआ हो वह जगत् का कल्याण कैसे करेगा? भावना करेगा तो हो सकेगा।

प्रश्नकर्ता : लेकिन मुझे ऐसा लगता है कि वीतराग दशा प्राप्ति के बाद में भावना कैसे हो सकती है? वे तो संपूर्ण इच्छा रहित हो जाते हैं न?

दादाश्री : अब उनकी कल्याण करने की भावना नहीं रहती। उन्हें कल्याण करने की जो भावना थी, तो अभी वे उसका फल भोग रहे हैं, तीर्थंकरपन भोग रहे हैं। मुझे कल्याण करने की भावना है, इसलिए मैं खटपटिया वीतराग कहलाता हूँ और वे वास्तविक वीतराग कहलाते हैं।

जिस प्रकार एक व्यक्ति परीक्षा देने के बाद में, कभी भी स्कूल में नहीं जाए तब भी परिणाम तो आएगा ही न? उसके नाम से परिणाम आएगा या नहीं आएगा?

प्रश्नकर्ता : आएगा।

दादाश्री : उसी प्रकार से यह तीर्थंकर के नाम से परिणाम आया है और मैं यह परीक्षा दे रहा हूँ यानी कि मुझे यह भाव है कि इन लोगों का कल्याण हो। जैसा मेरा कल्याण हुआ, किस प्रकार से लोगों का भी वैसा ही कल्याण हो, ऐसी मेरी भावना है तो सही। उन्हें ऐसा नहीं रहता। उन्होंने पिछले जन्मों में ऐसा किया था। उन्हीं दिनों उन्होंने

तीर्थंकर गोत्र बाँधा था। अब सिर्फ उस तीर्थंकर गोत्र को खपा रहे हैं। उनका डिस्चार्ज ही होता रहता है। इसलिए उन्हें केवल करुणा है!

तीर्थंकर भगवान जो क्रियाएँ करते हैं, वे दिखाई देती हैं लेकिन वे खुद उनमें नहीं होते। और मैं इनमें रहता हूँ, मैं कारण में हूँ और वे कार्य में हैं। कार्य अर्थात् पूर्ण हो गए। उनके बोलने से ही कार्य पूरा हो जाता है। बहुत सूक्ष्म बातें हैं ये सारी।

जहाँ विचरें, वह भूमि तीर्थ

जो तीर्थ बनाएँ वे तीर्थंकर। तीर्थंकर अर्थात् वे जहाँ-जहाँ घूमते हैं वहाँ सभी जगह तीर्थ बन जाते हैं, वे तीर्थ स्वरूप कहलाते हैं। जहाँ-जहाँ पर चरण रखते हैं, वहीं पर तीर्थ। उन्हीं को कहते हैं तीर्थंकर। तीर्थ ही बनाते हैं वे।

प्रश्नकर्ता : ज्ञानी को जंगम तीर्थ कहते हैं न!

दादाश्री : ज्ञानी भी उनके जैसे हैं न! लेकिन उनके पीछे तो तीर्थ ही कहा जाता है लेकिन हमारा उनके जैसा नहीं है! वे तो फुल स्टेज वाले (पूर्ण दशा वाले) पुरुष कहे जाते हैं। अभी फुल स्टेज वाले पुरुष अवतरित नहीं होंगे। इसलिए ज्ञानी की कीमत है! वर्ना ज्ञानी की कीमत इतनी अधिक नहीं होती। यह तो, अभी फुल स्टेज वाले अवतरित नहीं होंगे इसलिए ज्ञानी को फुल स्टेज वाले कहा गया है। सूबेदार का पद ही हटा दिया गया हो फिर, जो मिलें वही ठीक!

भावना की फलश्रुति यह

वास्तव में गुणों से तीर्थंकर, उन्होंने दो जन्मों पहले भावना की थी कि किस प्रकार से इस जगत् का कल्याण हो, किस प्रकार से यह जगत् सुखी हो! मैंने जिस ज्ञान की प्राप्ति की है, जो सुख प्राप्त किया है, वही सुख जगत् किस प्रकार से प्राप्त करे, ऐसी भावनाएँ की हैं। उसी से इस जन्म में यह उदय आया है। उसी का यह फल आया है। इसलिए फिर वे जो भी बोलते हैं न, वह देशना होती है।

वे ऐसी वाणी बोलते हैं, मीठी अंगूर जैसी! उसे सुनते ही इंसान में परिवर्तन हो जाता है। तीर्थंकर अर्थात् जिन्हें देखने से ही कल्याण हो जाता है!

प्रश्नकर्ता : आपको देखते हैं तब लगता है कि, 'दादा आप ऐसे हैं, आप में कितना प्रेम भरा हुआ है तो फिर तीर्थंकर कहाँ! महाविदेह क्षेत्र में तो इससे भी अलग और कैसा होगा!

दादाश्री : वह प्रेम ऐसा नहीं होता। यह खटपटिया प्रेम है और उनका प्रेम खटपटिया नहीं होता।

तीर्थंकर, वह कर्मफल

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर जन्म से ही भगवान होते हैं या फिर पुरुषार्थ से भगवान बनते हैं?

दादाश्री : नहीं-नहीं! जन्म से ही तीन ज्ञान के धारक होते हैं।

प्रश्नकर्ता : तीन ज्ञान होते हैं, लेकिन अन्य दो ज्ञान तो बाकी रहे न?

दादाश्री : उसमें कुछ करना नहीं होता। वह अपने आप ही अनावृत हो जाता है! क्या रात से हम इंतज़ार करते हैं कि सुबह कब होगी? उसके लिए पुरुषार्थ करना होता है या अपने आप ही हो जाएगा? मोक्ष तो अपने आप ही होता है, मार्ग पर आ जाना चाहिए। इन लोगों के मार्ग तो अन्य मार्ग पर हैं, पराये मार्ग पर हैं, उल्टे रास्ते पर हैं।

तीर्थंकर गोत्र बंधता है इस प्रकार से

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर बनने के लिए क्या करना पड़ता है?

दादाश्री : उसके लिए तो बहुत कुछ करना पड़ता है। वह बात पूछने का कोई अर्थ ही नहीं है न!

उल्टा प्रवाह चल रहा है, ऐसे में कोई सीधा कर देगा उसे तीर्थंकर गोत्र बंधेगा।

तीर्थंकर गोत्र की भावना, वह भावना ऐसी नहीं है कि चाहे कोई भी वह भावना करे तो हो जाए। वह भावना तो सतत होनी चाहिए, सातत्य होना चाहिए। किसी भाव का असर नहीं हो, जगत् कल्याण के भाव को अन्य कोई भाव ऑब्स्ट्रक्ट न करे (अवरोध न डाले), तब होता है।

तीर्थंकर पद, वह क्या कोई ऐसी-वैसी चीज़ है? वह किसी के ही उदय में आता है, सभी को नहीं आता।

तीर्थंकरों की सोलह कारण भावनाएँ होती हैं, उन भावनाओं का सारांश अपने वर्तन में होना चाहिए। क्योंकि भावनाओं की ज़रूरत नहीं है लेकिन उनका सारांश आना चाहिए।

किसी को किंचित्मात्र दु:ख न हो उसी तरफ का पक्ष होना चाहिए। दूसरे लोग दु:ख दें तो खुद की ही भूल कबूल कर लें, इतने में ही सोलह भावनाएँ आ जाती हैं। इतने में ही, शॉर्ट में समझ जाओ।

कौन प्राप्त करता है वह पद?

प्रश्नकर्ता : मुझे बार-बार ऐसा होता रहता है कि हम क्यों तीर्थंकर नहीं बन सकते? या फिर सीधे ही मोक्ष में जा सकते हैं? फिर आपसे जानने को मिला था कि तीर्थंकर गोत्र बाँधा हो तभी तीर्थंकर बना जा सकता है, तो हम वह गोत्र कैसे बाँध सकते हैं?

दादाश्री : अभी तुझे फिर से लाखों सालों तक जन्म लेने हों तो बंध सकता है। तो फिर बंधवा देता हूँ और फिर कई बार सातवी नर्क में जाना पड़ेगा। कितनी ही बार नर्क में जाए, उसके बाद इतने अच्छे पद मिलते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन ऐसे अच्छे पद लेने हों तो, नर्क में जाने में क्या हर्ज है?

दादाश्री : तेरी अक्ल तेरे पास रहने दे चुपचाप, सयाना हो

जा। ज़रा तप करना पड़ेगा न, तो उस समय पता चलेगा और वहाँ तो ऐसे तप करने पड़ते हैं। वह तो, नर्क की तो बात भी अगर तुझे बताऊँ न, तो सुनते ही इंसान मर जाए इतना दुःख है वहाँ पर तो! सुनते ही आज के लोग मर जाएँ! कि 'अरेरे... गए काम से!' प्राण की हवा निकल जाएगी। इसलिए ऐसा बोलना ही मत, वर्ना उसका *नियाणां* (अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना) हो जाएगा।

तीर्थंकर, मात्र क्षत्रिय ही

तीर्थंकर बनना हो तो क्षत्रियों का काम है। मोक्ष में तो इन सभी को, सभी जाति, ब्राह्मण, बनिये इन सभी को जाने की छूट है।

प्रश्नकर्ता : उसमें क्या संस्कार भी कोई कारण है? किसी संस्कार की वजह से किसी परिवार में ही जन्म होता है, ऐसा...

दादाश्री : इसमें सिर्फ तीर्थंकरी गुणों को लेकर ही भेद है। बाकी सब के लिए तो समान हैं। क्षत्रियों में प्रताप होता है कि, 'करना ही है', इसलिए फिर उसमें और कुछ नहीं हो सकता। प्रोमिस अर्थात् प्रोमिस। उसका मन दलीलें नहीं करता, वह क्षत्रियपन। जिसका ब्लड एकदम गर्म ही हो, किसी का दुःख न देख पाए, ऐसा ब्लड हो, ऐसे सारे गुण हों, तभी सारा काम होगा न! आप में वे सारे गुण उत्पन्न होने लगे हैं, और हमारा (उन गुणों का) घड़ा भर चुका है, उसके जैसा है। क्षत्रियों का धर्म ही है, वे तो सुनते ही, जो सही लगे तो उसके लिए सिर पर कफन बाँधकर काम ही करने लगते हैं। बाकी सब तो ढुलमुल-ढुलमुल होते रहते हैं। कोई बलवान यदि कमज़ोर को मार रहा हो तो वहाँ पर क्षत्रिय तुरंत ही पहचाना जा सकता है। क्षत्रिय यदि वहाँ से होकर जा रहा हो, तब वह तुरंत पहचाना जा सकेगा। खड़ा रहेगा और कमज़ोर का रक्षण करेगा। बलवान की थोड़ी मार खा लेगा खुद। यह तो मोक्ष का मार्ग है, यदि पार निकल गया तो सारा काम हो जाएगा, ऐसा है।

कलिकाल में मिलावटी

प्रश्नकर्ता : अभी तक कई सारे भगवान, संत पुरुषों ने अधिकतर क्षत्रिय या ब्राह्मण कुल में जन्म लिया है, तो उसमें आपका क्या मानना है?

दादाश्री : सही है, लेकिन इस कलियुग में तो सभी जगह थोड़े-बहुत संतों का जन्म हुआ है। यह कलियुग है इसलिए सब डिफोर्म हो गया है। संत पुरुष हरिजन में भी जन्मे हैं, वैश्यों में भी जन्मे हैं। आपकी यह पहले की बात ठीक है। अभी क्षत्रियों के बहुत से संस्कार कई बार वैश्यों में देखने को मिलते हैं। क्योंकि क्षत्रियों ने ही खुद वहाँ पर जन्म लिया है, वहाँ वैश्यों में। इसीलिए सब मिलावटी हो गया है। जिस तरह इस घी में मिलावट आती है न, वैसा सब। इसलिए फिर वहाँ पर संत जन्म लेते हैं। पहले तो ऐसा नहीं था। जब तक मिलावट नहीं थी न, तब तक ये सब क्षत्रियों में और ब्राह्मणों में ही जन्म लेते थे।

यह तो चोकर का भी चोकर, चोकर को छानते-छानते यह पाँचवे *आरे* वाला सारा बचा-खुचा चोकर है। उसमें यदि एक चुटकी मिट्टी लगी हुई होगी तो गरमी से वह तुरंत ही निकल जाएगी।

अद्‌भुत संगम, विशिष्टता का

प्रश्नकर्ता : दादा, तीर्थंकरों के अन्य विशेष गुणों पर प्रकाश डालिए न!

दादाश्री : उनके अन्य विशिष्ट प्रकार के चौंतीस अतिशय होते हैं। वे सभी मनुष्यों से अलग ही होते हैं। वे यह भोजन नहीं खाते, वे सूक्ष्म भोजन लेते हैं। यह भोजन खाएँगे तो बल्कि दुर्गंध आएगी।

प्रश्नकर्ता : जी।

दादाश्री : हाँ। उनका भोजन तो, सूक्ष्म! किसी को दिखाई नहीं दे, ऐसा। इसीलिए उनकी तो बात ही अलग है! वे तो पूरे वर्ल्ड में,

कोई जीव इतना पुण्याशाली नहीं रहा होगा उतने पुण्यशाली वे होते हैं। यानी कि सभी परमाणु हाई क्वॉलिटी के होते हैं, इसलिए लोग उनके प्रक्षाल का जो पानी नीचे गिर रहा होता है तो वह पी जाते हैं न!

तीर्थंकर भगवान का चरम शरीर वह 'फुल' (पूर्ण) लावण्य वाला होता है। केवलियों का चरम शरीर है लेकिन लावण्य नहीं होता। और तीर्थंकर भगवान का शरीर ग़ज़ब के लावण्य वाला होता है, वर्ल्ड में आश्चर्य कहा जाता है। उनके लावण्य की तो बात ही नहीं हो सकती, वर्णन ही नहीं किया जा सकता! हम सब ने देखा है, लेकिन आप भूल गए हो और मुझे याद है!

तीर्थंकर साहब को देहधारी नहीं कहा जा सकता। देहधारी होने के बावजूद भी वे खुद देहधारी नहीं हैं। खुद के *लक्ष* में ही है कि, 'मैं क्या हूँ।' *लक्ष* में, ज्ञान में, अनुभव में, सभी में वही है। देहधारी तो किसे कहेंगे? जिसे किंचित्मात्र भी देहाध्यास रहा हो, वह देहधारी है। जिसे किंचित्मात्र भी देहाध्यास नहीं रहा हो, वह देह होने के बावजूद भी देहधारी नहीं है।

स्वयंबुद्ध भी सापेक्ष

प्रश्नकर्ता : ये तीर्थंकर तो स्वयंबुद्ध कहे जाते हैं न?

दादाश्री : हाँ, सभी तीर्थंकर स्वयंबुद्ध होते हैं। लेकिन पिछले जन्मों में गुरुओं के माध्यम से उनका तीर्थंकर गोत्र बंध जाता है। इसलिए स्वयंबुद्ध तो उस अपेक्षा से कहे जाते हैं कि इस जन्म में उन्हें गुरु नहीं मिले इसलिए स्वयंबुद्ध कहे जाते हैं। वह सापेक्ष चीज़ है। आज जो स्वयंबुद्ध हुए हैं, वे सभी पिछले जन्मों में पूछ-पूछकर आए हैं। यानी कि पूरा जगत् पूछ-पूछकर ही चलता है। अपने आप तो किसी को ही, स्वयंबुद्ध को ही होता है। वह अपवाद है। बाकी, गुरु के बिना तो ज्ञान है ही नहीं।

उनकी देशना, उदयवर्ती

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर एक ही बार देशना देते हैं न? फिर नहीं देते न?

दादाश्री : वह तो जितनी बार निकले, टेपरिकॉर्डर बजता है, और फिर बंद हो जाता है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह पाँच दिन या सात दिन, उसके बाद नहीं न?

दादाश्री : वह तो बार-बार चलती ही रहती है। समोवसरण रचा जाता है और उसमें उनकी वाणी देशना के रूप में यों अपने आप ही निकलती रहती है, प्रयत्न किए बिना।

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरों को तो कोई प्रश्न पूछे तभी जवाब देते हैं?

दादाश्री : हाँ, प्रश्न पूछने पर जवाब देते हैं।

प्रश्नकर्ता : फिर वे तो जितना पूछा जाए उतना ही बोलेंगे न?

दादाश्री : नहीं! वे तो, जितना बुलवाते हैं उतना भी नहीं बोलते। वे तो, जैसा उदय आता है, उस तरह से बरतते हैं। 'लट्टू' घूमता ही रहता है और उसे 'वे' देखते रहते हैं, बस! देशना निकलती (बोलते) है, वह भी संयोगों के अनुसार है।

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरों की वाणी का जिसे जितना योग है, उस अनुसार उनकी वाणी निकलती है। बाकी, नहीं निकलती। अत: उदय साबित हो जाता है।

दादाश्री : ऐसा है न, अरिहंतों की-तीर्थंकरों की, खुद की वाणी होती ही नहीं है न! उदय में आया हुआ भाव, वह देशना कहलाता है। तीर्थंकरों को इसे बोलना नहीं पड़ा था। उससे किसी का कल्याण होना हो तो हो या नहीं होना हो तो न हो। वह मूर्ति वैसे के वैसे बैठी रहती है। वे देशना देते हैं लेकिन यदि सामने वाले का उदय हो

तभी वह देशना निकलती है, वर्ना देशना भी नहीं निकलती। देवी-देवता सारी तैयारियाँ करते हैं और वहाँ भगवान अपने आप ही आ जाते हैं। आना-जाना उनके खुद के हाथ में नहीं है। उदय के अधीन विचरते रहते हैं। हम भी उदय के अधीन ही घूमते रहते हैं न!

वाणी, तीर्थंकरों की

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरों की देशना को मौन कहा गया है। गुणों को लेकर उसका प्राधान्य समझाइए।

दादाश्री : उनकी देशना, वे खुद नहीं बोलते थे, टेपरिकॉर्डर बोलता था। टेपरिकॉर्डर बोलता था इसीलिए उन्हें बोलना था ही नहीं न! इसलिए मौन ही कहा जाएगा।

भगवान का स्वर कैसा था, वीतरागों का? अरे! जैसे कोई मधुर म्यूज़िकल इंस्ट्रूमेन्ट (साज़) बज रहा हो, उस तरह का! शहद से भी उत्तम माना गया है! अन्य किसी भी मिठास से उत्तम, भगवान के शब्द को कहा गया है।

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकरों की वाणी के कोड कैसे होते हैं?

दादाश्री : उन्होंने ऐसा कोड निश्चित किया होता है कि मेरी वाणी से किसी भी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो। दुःख तो हो ही नहीं लेकिन किंचित्मात्र भी किसी जीव का प्रमाण आहत न हो। पेड़ का भी प्रमाण आहत न हो। ऐसे कोड सिर्फ तीर्थंकरों के ही हुए होते हैं।

फिर विधि नहीं, दर्शन ही

प्रश्नकर्ता : तीर्थंकर विधि करवाते हैं या सिर्फ दर्शन ही?

दादाश्री : विधि वगैरह तो कब तक है? केवलज्ञान न हो जाए, तब तक। केवलज्ञान होने के बाद में नहीं। उन्हें खुद को जब तक केवलज्ञान नहीं हो जाता तभी तक, 'विधि करो'। उन्हें खुद को

केवलज्ञान हो गया तो फिर विधि नहीं। उनके दर्शन से ही हमें फल मिल जाता है। क्योंकि वह फुल दर्शन है, खटपटिया दर्शन है ही नहीं। यह देखो न, हमारी कितनी खटपट है? फिर भी मन में ऐसा नहीं है कि 'मैं कर रहा हूँ।' वैसे भाव भी नहीं हैं। 'यह मुझे करना है' वैसे भाव भी नहीं हैं और है खटपट वाला।

चारित्र मोह, भगवान का

प्रश्नकर्ता : केवलज्ञान होने के बाद तीर्थंकरों में चारित्र मोह नहीं रहता न? वह तो उससे पहले ही रहता है न?

दादाश्री : वह उससे पहले ही रहता है। बारहवे गुणस्थानक तक रहता है। और तेरहवाँ गुणस्थानक अर्थात् केवलज्ञान हुआ। उसके बाद देशना देते हैं। फिर तो कोई सामने आकर खड़ा हो जाए और यों जय, जय करे, तो अब यदि वह नर्क में जाने वाला हो तब भी भगवान उसे ऐसा नहीं कहेंगे कि, 'तुझे ऐसा हो जाएगा।' क्योंकि वे खटपट नहीं करते। एक पर राग और एक पर द्वेष, ऐसा नहीं।

प्रश्नकर्ता : वह तो ठीक है। लेकिन यदि कोई ऐसा पापी हो, वह वहाँ पर आकर तीर्थंकरों के पैर छूए, तो उसके पाप हल्के हो जाएँगे न तुरंत?

दादाश्री : काफी कुछ तो जलकर खत्म हो जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : तो तीर्थंकर उन्हें आत्मा की प्राप्ति नहीं करवाएँगे?

दादाश्री : बोलने की सत्ता ही नहीं है न! खटपट नहीं है न! टेपरिकॉर्डर जितना बजना हो उतना ही बजता है।

प्रश्नकर्ता : उसके बजने से क्या किसी का आत्मा प्रकट हो जाता है?

दादाश्री : अपने आप ही। वे तो निमित्त होते हैं। अंतिम मुहर लगी कि मोक्ष में चला जाता है। कई लोग मोक्ष में चले जाते हैं। पूरा तैयार हो चुका माल और अंतिम हस्ताक्षर उनके।

प्रश्नकर्ता : यानी तीर्थंकरों की मुहर लगने के बाद में ही मोक्ष में जा सकते हैं?

दादाश्री : मोक्ष में जाना अर्थात् क्या? तीर्थंकरों के दर्शन किए हो तभी वह मोक्ष में जा सकता है।

प्रश्नकर्ता : तो उसका मीनिंग यह है कि तीर्थंकरों के दर्शन से कई पाप जल जाते होंगे?

दादाश्री : उससे खुमारी आ जाती है। हमारे दर्शन करने के बाद उसके एक-दो जन्म बाकी रहें, उतनी खुमारी आ जाती है और उनके दर्शन करने पर सिद्धाणं (सिद्ध पद प्राप्त हो जाता है)!

प्रश्नकर्ता : वह तो हमने अनुभव किया है, खुमारी आ जाती है।

दादाश्री : उस व्यक्ति को तीर्थंकरों के दर्शन करने से पूरी खुमारी आ जाती है। क्या उनका रूप और रंग और क्या उनकी वाणी और वह सब! उनकी तो बात ही अलग है न!

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा।

दादाश्री : इस दर्शन से अंतिम मोक्ष नहीं होता। यानी उतना बाकी रहा, एक-दो जन्मों के बाद उन भगवान के दर्शन करके, सीमंधर स्वामी के दर्शन करके फिर मोक्ष में चला जाता है।

सम्यक् दृष्टि, वही है वीज़ा

प्रश्नकर्ता : आपने कहा है न कि तीर्थंकरों के दर्शन करने से इंसान को केवलज्ञान हो जाता है।

दादाश्री : सिर्फ दर्शन से ही नहीं, क्योंकि तीर्थंकरों के दर्शन तो बहुत लोगों ने किए हैं। हम सब ने भी किए हैं लेकिन उस समय हमारी तैयारी नहीं थी, दृष्टि नहीं बदली थी। मिथ्या दृष्टि थी। उस मिथ्या दृष्टि में, तीर्थंकर क्या करें फिर? जिसकी सम्यक् दृष्टि हो उस पर तीर्थंकर की कृपा हो जाती है।

प्रश्नकर्ता : यानी कि अपनी तैयारी हो और उनके दर्शन हो जाएँ तो मोक्ष हो जाएगा।

दादाश्री : इसीलिए हमें यहाँ तैयार हो जाना है। कारण इतना ही है कि तैयार होकर फिर वीज़ा लेकर जाओ। फिर चाहे कहीं भी जाओगे, वहाँ कोई न कोई तीर्थंकर मिल जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : आपने यही कहा था कि तीर्थंकरों को देखने की दृष्टि होनी चाहिए। अर्थात् खुद की दृष्टि काम करती है।

दादाश्री : देखने की दृष्टि काम करती है।

प्रश्नकर्ता : यानी ऐसी दृष्टि से देखे कि उसका कल्याण हो जाए!

दादाश्री : अंदर बिल्कुल ही अलग हो जाता है। वर्ना, भगवान की तो तीन सौ साठ डिग्री हैं ही, लेकिन खुद की दृष्टि होनी चाहिए।

तीर्थंकरों ने हकीकत बताई

प्रश्नकर्ता : कई बार हमें ऐसा कहा जाता है कि भगवान महावीर का तीसरा जन्म था। यह सब जो लिखा हुआ है, वह सब हकीकत किस प्रकार से है? यह सब किसने लिखी होती है?

दादाश्री : वह तीर्थंकरों ने बताया होता है। देखकर बताई हुई और अगली चौबीसी में कौन तीर्थंकर बनेंगे, वह बात भगवान महावीर ने बताई थी। जो अंतिम तीर्थंकर होते हैं, वे खुद अगली चौबीसी के तीर्थंकरों की बात बताकर ही जाते हैं।

सीमंधर स्वामी के बारे में भी महावीर भगवान ने सब बताया था। महावीर भगवान जानते थे कि अब अरिहंत नहीं होंगे। ये लोग किसे भजेंगे? इसलिए उन्होंने बताया कि बीस तीर्थंकर हैं और उनमें सीमंधर स्वामी भी हैं। बताया इसलिए फिर वह शुरू हो गया। मार्गदर्शन महावीर भगवान का है, फिर कुंदकुंदाचार्य को मेल बैठा था।

देशना के समय दशा

प्रश्नकर्ता : महावीर स्वामी ने जब अंतिम देशना दी, तब उस समय भी उनमें विचार थे?

दादाश्री : भगवान महावीर के भी अंत तक विचार तो रहे ही लेकिन उनके विचार कैसे होते हैं कि समय-समय पर एक विचार आता है और जाता है, उसे निर्विचार कहा जा सकता है। हम शादी में खड़े हों, तब सब नमस्ते करने आते हैं न! नमस्ते-नमस्ते करके आगे चलने लगते हैं। यानी एक कर्म का उदय हुआ और उसका विचार आने के बाद वह कर्म चला जाता है। फिर वापस दूसरा कर्म उदय में आता है। इस प्रकार उदय और अस्त होते रहते हैं। कहीं पर रुकते नहीं हैं। उनके मन की सभी ग्रंथियाँ खत्म हो चुकी होती हैं। इसलिए उन्हें विचार परेशान नहीं करते। हमें भी विचार परेशान नहीं करते।

तीर्थंकरों के परमाणु

प्रश्नकर्ता : क्या यह सही बात है कि भगवान महावीर के शरीर में से कोई अद्‌भुत सुगंध आती थी? मैंने ऐसा सुना है, मुझे पता नहीं है।

दादाश्री : उस सुगंध का मतलब ऐसा नहीं है कि चमेली जैसी सुगंध आए या रातरानी जैसी सुगंध आए! ऐसा कुछ नहीं। सुगंध अर्थात् उनके साथ बैठें तो उनके जो परमाणु उड़ते हैं, उससे हमारे अंदर सुगंधी बर्तती है, साधारण रूप से ऐसा लगता रहता है। वे कोई गुलाब के फूल नहीं हैं कि सुगंधीदार हों!

[4] रूपरेखा, महाविदेह क्षेत्र की

महाविदेह क्षेत्र कहाँ पर है? कैसा है?

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी भगवान जहाँ विचरण करते हैं, वह महाविदेह क्षेत्र कहाँ पर है?

दादाश्री : वह तो अपने इस क्षेत्र से बिल्कुल अलग है। सभी क्षेत्र अलग-अलग हैं। वहाँ पर यों स-शरीर जा पाएँ, ऐसा नहीं है।

इस ब्रह्मांड में हैं लेकिन वहाँ पर जाते हुए बीच में खूब ठंड और ऐसा सब होने की वजह से वहाँ प्लेन नहीं जा सकते, मनुष्य नहीं जा सकते। इसलिए वे सभी क्षेत्र अलग-थलग हैं। बीच में ऐसे ठंडे ज़ोन (भाग) हैं न कि कोई भी वहाँ पर नहीं जा सकता!

प्रश्नकर्ता : वह महाविदेह क्षेत्र अपने ब्रह्मांड के सोलर सिस्टम से बाहर है या अंदर है?

दादाश्री : ब्रह्मांड के अंदर है। ब्रह्मांड के बाहर कुछ भी नहीं है।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र ब्रह्मांड में कहाँ पर है?

दादाश्री : ईशान में।

प्रश्नकर्ता : यह ईशान किस तरफ है? ईशान तो रिलेटिव (सापेक्ष) चीज़ हुई न!

दादाश्री : यह पूरा ही जगत् रिलेटिव है। इन इन्द्रियों से जो अनुभव में आता है, वह रियल (निर्पेक्ष) है ही नहीं।

ऐसा है न, हम जिस गाँव में रह रहे हों न, उसी गाँव में नोर्थ-साउथ सब होता है। इस जगत् में नोर्थ-साउथ जैसी कोई चीज़ है ही नहीं। यह तो जिस गाँव में आप रहते हो, वह नोर्थ-साउथ कहलाता है। सूर्यनारायण जब आपके पूर्व में उगते हैं, उस समय दूसरे के लिए पश्चिम में होते हैं। इसलिए वह करेक्ट चीज़ नहीं है। जो आँखों से दिखाई देता है, वह सब करेक्ट नहीं है।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र कैसा है?

दादाश्री : जैसी यह भूमि है, मनुष्यों वाली बस्ती, यहाँ पर जैसा सब दिखाई देता है, महाविदेह क्षेत्र में भी सब वैसा ही दिखाई

देता है। मनुष्यों के रहने लायक ऐसे पंद्रह क्षेत्र हैं। तो आमने-सामने एक से दूसरे क्षेत्र में नहीं जा सकते, वातावरण नहीं है इसलिए। हर एक क्षेत्र के आसपास उसके वातावरण का 'एन्ड' आ जाता है। उसका (वातावरण का) 'एन्ड' हो चुका होता है और इसका (वातावरण का) भी 'एन्ड' हो चुका होता है। इसलिए नहीं जा सकते हैं। ज्ञानियों को दिखाई देता है।

महाविदेह में व्यवहार-व्यापार

प्रश्नकर्ता : आपको महाविदेह क्षेत्र का कोई अनुभव हुआ है? यदि हुआ है तो वहाँ पर क्या है?

दादाश्री : जैसे अपने यहाँ भगवान महावीर के समय में चौथा *आरा* था न, उसी प्रकार वहाँ पर चौथे *आरे* के मनुष्य हैं। वहाँ इसी प्रकार से दुकानें हैं, खेतीबाड़ी है, व्यापार सभी कुछ है। बाकी, वहाँ के लोग भी अपने जैसे हैं और अपने जैसा ही सब कार्य है। अपने जैसा ही सबकुछ है वहाँ पर, सास, बहू, राजा, सुपाल, सरसुपाल...

प्रश्नकर्ता : वहाँ भी ऐसी सभा लगती होगी न?

दादाश्री : अरे, वहाँ पर तो बहुत बड़ी सभा! यह सभा तो क्या है? और वहाँ की सभा की तो बात ही क्या करनी! वहाँ की सभा की बात ही अलग है!

प्रश्नकर्ता : वहाँ आयु लंबी होती है न, दादा?

दादाश्री : हाँ, आयु लंबी होती है, बहुत लंबी होती है। बाकी, अपने जैसे ही लोग हैं, अपने जैसा व्यवहार है। लेकिन जैसा व्यवहार अपने यहाँ चौथे *आरे* में था वैसा है। इस पाँचवे *आरे* के लोग अब तो ऐसे जेब काटना सीख गए हैं और अंदर ही अंदर रिश्तेदारों में भी उल्टा बोलना सीख गए हैं। वहाँ पर ऐसा व्यवहार नहीं है।

हमेशा के लिए चौथा आरा है वहाँ पर

प्रश्नकर्ता : वहाँ हमेशा तीसरा और चौथा *आरा* ही रहता है?

दादाश्री : हमेशा के लिए चौथा *आरा,* तीसरा नहीं। सिर्फ चौथा ही।

प्रश्नकर्ता : लेकिन पूरा संसार इसके जैसा ही है?

दादाश्री : हाँ, सबकुछ ऐसा ही है। वह भी पूरी कर्म भूमि है, वहाँ पर भी 'मैं कर रहा हूँ' ऐसा भान रहता है। अहंकार-क्रोध-मान-माय-लोभ भी हैं। वहाँ पर अभी तीर्थंकर हैं। चौथे *आरे* में तीर्थंकर होते हैं। बाकी, अन्य सारी दशा अपने जैसी ही होती है। यहाँ रामचंद्र जी चौथे *आरे* में थे न!

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर हमेशा चौथा *आरा* क्यों रहता है?

दादाश्री : अपने यहाँ जैसे किसी जगह पर हमेशा छः महीने के लिए रात और दिन रहते हैं, उसी प्रकार वहाँ पर नित्य चौथा *आरा* रहता है। वह क्षेत्र ही ऐसा है। यह पूरा ब्रह्मांड गोल है। तो गोल में उसकी जगह, जब वह किसी खास जगह पर होता है तब वहाँ पर हमेशा ऐसा रहता है और यहाँ पर ऐसा रहता है। समझ में आए ऐसी बात है न?

प्रश्नकर्ता : यह महाविदेह क्षेत्र अपने भरत क्षेत्र से और किस प्रकार से अलग माना जाता है?

दादाश्री : हाँ, अलग है। एक यह महाविदेह क्षेत्र है, जहाँ हमेशा के लिए तीर्थंकर जन्म लेते ही रहते हैं और अपने क्षेत्र में किसी खास समय पर ही तीर्थंकर जन्म लेते हैं, उसके बाद नहीं रहते। अपने यहाँ पर कुछ टाइम के लिए तीर्थंकर नहीं भी होते। लेकिन अभी ये सीमंधर स्वामी महाविदेह क्षेत्र में हैं, अपने लिए वे हैं। वे अभी बहुत काल तक रहेंगे और अठारहवे तीर्थंकर के समय में उनका जन्म हुआ था!

भूगोल महाविदेह क्षेत्र का

प्रश्नकर्ता : अब महाविदेह क्षेत्र के बारे में ज़रा डिटेल में

बताइए न। इतने योजन दूर, यह मेरू पर्वत, वे जो सारी बातें शास्त्र में लिखी हुई हैं, क्या वे सही हैं?

दादाश्री : सही हैं, उसमें फर्क नहीं है। हिसाब वाली चीज़ है कि इतने साल की आयु, अभी और कितने सालों तक रहेंगे, सब (केल्कुलेटेड) हिसाब से है। पूरा जो ब्रह्मांड है उसमें मध्य लोक है। अब इसमें पंद्रह प्रकार के क्षेत्र हैं। यह मध्य लोक इस प्रकार राउन्ड (गोल) है। लेकिन लोगों को और कुछ समझ में नहीं आता है। क्योंकि बीच में ऐसे क्षेत्र हैं कि एक वातावरण में से दूसरे वातावरण में नहीं जा सकते, यानी कि मनुष्य जन्म प्राप्त करने की और मनुष्य लोक में रहने की पंद्रह भूमियाँ हैं। अपनी भूमि उनमें से एक है। इसके अलावा अन्य चौदह हैं। उनमें जहाँ देखो वहाँ अपने जैसे ही लोग हैं। अपने कलियुग वाले हैं और वे सत्युग वाले होते हैं। किसी-किसी जगह पर (पाँच भरत क्षेत्र और पाँच ऐरावत क्षेत्र में) कलियुग है और किसी जगह पर सत्युग भी है। इस प्रकार से हैं मनुष्य और वहाँ पर महाविदेह क्षेत्र में अभी सीमंधर स्वामी खुद विराजमान हैं।

प्रश्नकर्ता : आपने यह महाविदेह क्षेत्र बताया, वहाँ पर भी विज्ञान की इतनी प्रगतियाँ हैं, ऐसे विमान और मोटर गाड़ी वगैरह सब हैं?

दादाश्री : वहाँ पर ऐसे यांत्रिक विमान नहीं हैं, मांत्रिक विमान हैं सारे। यहाँ यांत्रिक हैं और उनके वहाँ मांत्रिक हैं, इसलिए उन्हें तेल या किसी भी चीज़ की ज़रूरत नहीं पड़ती। और यांत्रिक में तो अगर तेल कम पड़ जाए तो नीचे गिर जाएगा या फिर कहेगा 'मशीन बंद हो गई।' इसीलिए तो अपने लोग चार मशीन रखते हैं न! चार में से... यदि चारों न चले तो विमान गिर जाएगा।

भाषा, महाविदेह क्षेत्र में

प्रश्नकर्ता : क्या महाविदेह क्षेत्र में संस्कृत भाषा चलती है?

दादाश्री : वहाँ पर संस्कृत चलती हो या प्राकृत चलती हो,

लेकिन मूल संस्कृत होनी चाहिए। अत: अभी प्राकृत में चल रही हो या जो भी चल रही हो, हम नहीं जानते। हम तो उनके नाम के लिए गुजराती भाषा का उपयोग करते हैं, लेकिन फिर भी पहुँच जाता है। उस नाम के प्रति भाव है न! और अपने पास नाम तो अवश्य है ही न! तब लोग पूछेंगे कि, 'क्या वहाँ पर ऐसे ही नाम होंगे?' हाँ, वहाँ पर नाम ऐसे ही हैं, ऐसे ही नाम हैं।

प्रश्नकर्ता : वे नाम आपने ज्ञान में जाने हैं?

दादाश्री : सभी नहीं जाने हैं, जितने जाने हैं, उनकी बात मैंने बता दी है। अन्य नाम नहीं जाने हैं, अन्य तो ग्रहण किए हैं।

प्रश्नकर्ता : तो अन्य नाम आप शास्त्रों के आधार पर बताते हैं?

दादाश्री : वह चाहे कहीं से भी, लेकिन वह सारा ग्रहण करके आए हैं। कुछ बातें जानी हैं, लेकिन दूसरा कुछ ज़्यादा नहीं जाना है। दूसरा ग्रहण किया हुआ है लेकिन ग्रहण किया हुआ ढूँढ निकाला देखकर कि हकीकत क्या है, इसमें वास्तविकता क्या है? ऐसा है न, हमारा उनके साथ जितना संबंध होता है, हम उतना ही पहचानते हैं। अन्य कहीं पर संबंध नहीं हो तो हमें फोन करके पूछ लेना पड़ेगा न? लेकिन वह सारी बात हकीकत है, वास्तविक है।

मुख्य हेतु, 'काम' साध ले

प्रश्नकर्ता : अपना भरत क्षेत्र जंबू द्वीप में है, तो ऐसे तो कई क्षेत्र होंगे न?

दादाश्री : नहीं, ऐसे अन्य क्षेत्र नहीं हैं। ये पंद्रह क्षेत्र हैं न, बस वही। अन्य क्षेत्र नहीं हैं। हम पंद्रह क्षेत्र कहते हैं न, तो वे भी बहुत बड़े, विशाल हैं। और पूरा ब्रह्मांड बहुत अधिक, विशाल है। वह तो जब बताते हैं तब लोग क्या समझते हैं कि अपने पंद्रह राज्य जैसा होगा, यह गुजरात स्टेट है न, उसके जैसा होगा! नहीं, वैसा नहीं है, बहुत बड़ा, विशाल है। एक-दूसरे से कनेक्शन भी नहीं है। इस भरत क्षेत्र और अन्य भरत क्षेत्रों के बीच भी कनेक्शन नहीं है।

प्रश्नकर्ता : तो ऐसे और कितने क्षेत्र हैं?

दादाश्री : ऐसे कुल पंद्रह क्षेत्र ही हैं। इन सब को जानकर क्या करना है? हमें तो एक बात समझ लेनी है कि महाविदेह क्षेत्र है, वही अपने काम का है। बाकी तो दुनिया बहुत बड़ी है। हम से कोई पूछे कि, 'ये बाल कितने हैं?' 'उसे जानकर क्या करना है, भाई? जितने भी हैं, और तूने अगर रेज़र घुमाया होगा तो फिर से उग निकलेंगे।' जितनी अपने काम की हो उतनी ही बात करनी चाहिए। यह व्यापार किसलिए करते हैं? पैसे कमाने के लिए या मेरे गेहूँ अच्छे हैं ऐसा दिखाने के लिए? पैसे कमाने के लिए है, यानी काम हो जाना चाहिए, उतना ही अपना हेतु है।

हम तो इन तीर्थंकरों को और इन पंच परमेष्ठि भगवंतों को, सभी को नमस्कार करेंगे तो बहुत हो गया। हमें तो काम से काम है न!

विहरमान तीर्थंकर साहब

प्रश्नकर्ता : क्षेत्र तो पंद्रह हैं और ब्रह्मांड में तीर्थंकर तो बीस हैं, तो ऐसा कैसे हो सकता है?

दादाश्री : उसका बहुत हिसाब नहीं लगाना है। वे बीस भी होते हैं और कभी सत्तर भी होते हैं। फिर ऐसा पक्का नहीं है कि बीस ही हों।

प्रश्नकर्ता : एक क्षेत्र में अन्य क्षेत्र होता है इसलिए ऐसा है?

दादाश्री : वे ऐसे कुछ क्षेत्रों में होते ही नहीं हैं। दस क्षेत्रों में तो बिल्कुल भी नहीं होते। पाँच क्षेत्रों में ही होते हैं अभी। हिसाब मत लगाते रहना, नहीं तो दिमाग़ बिगड़ जाएगा पूरा!

हैं, महाविदेह क्षेत्र में ही

प्रश्नकर्ता : नमस्कार विधि में लिखा है कि, 'महाविदेह क्षेत्र

तथा अन्य क्षेत्र में विहरमान तीर्थंकर साहबों को अत्यंत भक्ति पूर्वक नमस्कार करता हूँ', तो तीर्थंकर वर्तमान काल में महाविदेह क्षेत्र के अलावा अन्य किसी क्षेत्र में भी हैं?

दादाश्री : हाँ, अन्य क्षेत्रों में हैं न! उन पाँच महाविदेह क्षेत्रों में अर्थात् वही अन्य। अन्य यानी कि एक महाविदेह क्षेत्र और ऐसे अन्य चार हैं न, वे अन्य क्षेत्र हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ, वह ठीक है। वे अन्य क्षेत्र की तरह सही हैं। तो क्या उसमें ऐसा शब्द सेट करने की ज़रूरत थी?

दादाश्री : नहीं। उसमें फिर बहुत गहरे उतरने की ज़रूरत नहीं है और यह तो ऊपर-ऊपर से ही अच्छा। हम भोले रहकर काम करेंगे न, तो जल्दी मोक्ष होगा। भोलापन चला जाए तो उससे फायदा नहीं है। थोड़ा भोलापन अच्छा।

प्रश्नकर्ता : अत: इसमें जो अन्य क्षेत्र शब्द है, उसे 'भरत क्षेत्र' या लोगों को जो समझना हो वैसा समझ सकते हैं?

दादाश्री : लोगों में इतनी अधिक समझ नहीं है। और यदि अन्य क्षेत्र नहीं लिखेंगे तो एक ही क्षेत्र में हैं, वैसा अर्थ हो जाएगा, पर नहीं, वह कुछ ही लोगों को ऐसा लगेगा, सभी को नहीं। और वे जो पाँच क्षेत्र (पाँच महाविदेह क्षेत्र) हैं न, वे अन्य कहलाते हैं न! एक के अलावा बाकी सब अन्य ही माने जाएँगे न!

महाविदेह क्षेत्र का सबूत क्या है?

प्रश्नकर्ता : हम महाविदेह क्षेत्र की बातें करते हैं, तो हमने कभी देखा नहीं है और हमें उसके बारे में बहुत पता भी नहीं है। तो उसका कोई प्रूफ है कि महाविदेह क्षेत्र है? उसका कोई सबूत है?

दादाश्री : अवश्य, सबूत है। मैं एक-एक शब्द जो बोलता हूँ, वह पक्का करके शब्द बोलता हूँ। मैं कोई कच्ची माया नहीं हूँ कि एक बाल बराबर भी पक्का किए बिना रहूँ! और मेरी पक्का करने

की शक्ति आपसे ज़्यादा है। यह मैं जो बोलता हूँ, वह सोचा-समझा हुआ ही कहता हूँ। अंदर ये दादा भगवान प्रकट हुए हैं, वे भी हंड्रेड परसेन्ट हैं! जो वर्ल्ड में कभी भी नहीं हुआ है, वैसा यह हो गया है!

प्रश्नकर्ता : तो हमें किस तरह पता चलेगा कि यह महाविदेह क्षेत्र आ गया? जिसे हमने कभी देखा ही नहीं है। कभी वह दिखाई देगा तो हमें कैसे पता चलेगा कि यह सिर्फ भ्रम है या रियल है?

दादाश्री : वह तो आपका हिसाब ही आपको वहाँ ले जाएगा। आपको जाने की ज़रूरत नहीं है, न ही आपको सोचने की ज़रूरत है कि, 'मुझे महाविदेह क्षेत्र में जाना है।' आप जिस स्टैन्डर्ड के लायक हो वह स्टैन्डर्ड ही आपको वहाँ खींच ले जाएगा, यहाँ पर रहने नहीं देगा। ज्ञान जो दिया है न, तो वहाँ के स्टैन्डर्ड के लायक हो ही जाओगे।

विशेषता, महाविदेह क्षेत्र की

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में 'डाउन फॉल' होता है? पतन होता है?

दादाश्री : वहाँ 'अप' जैसा कुछ है ही नहीं। वहाँ आगे के स्टेशन पर जा सकें, नीचे के स्टेशन पर जा सकें, ऐसा सब है ही नहीं।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर उन लोगों को कर्म बंधन नहीं होता?

दादाश्री : वहाँ पर सभी को कर्म बंधन होता है, (आत्मज्ञानी के अलावा) कोई कर्म से मुक्त नहीं हो सकता न!

प्रश्नकर्ता : वहाँ जाने के बाद में उसकी गति तो, वह मोक्ष में ही जाएगा न?

दादाश्री : नहीं, ऐसा कोई नियम नहीं है। कितने ही लोग भटक चुके हैं। यह सारी तो भटकने वाली प्रजा ही हैं। महाविदेह क्षेत्र में तो यदि यहाँ से कोई तैयार होकर जाए न, तो उसका काम हो जाएगा। लेकिन वहाँ की काफी कुछ प्रजा तो भटकती ही रहती है।

वह महाविदेह क्षेत्र कैसा है? अपने यहाँ जब चौथा *आरा* था, उसके जैसा है। उस चौथे *आरे* में अपने यहाँ कुछ ही लोग मोक्ष में गए हैं, बाकी कोई नहीं गया। इसमें कोई पास ही नहीं होता न! मोक्ष का मार्ग मिलता ही नहीं है न! और चौथे *आरे* में (मोक्ष की) भूख ही नहीं लगती और पाँचवे *आरे* में भूख लगती है, तब मोक्ष का मार्ग नहीं होता। वहाँ फिर 'रूटीन' (हमेशा की तरह) काम चलता रहता है, धीरे, धीरे, धीरे।

वहाँ है मन-वचन-काया की एकता

दूसरी बात, चौथे और पाँचवे *आरे* में क्या फर्क है? तो कहते हैं कि, चौथे *आरे* में मन-वचन-काया की एकता रहती है और पाँचवे *आरे* में यह एकता टूट जाती है। इसलिए जो मन में होता है, वैसा वाणी में नहीं बोलते और जो वाणी में होता है, वैसा वर्तन में नहीं लाते, उसी को कहते हैं पाँचवाँ *आरा*। और चौथे *आरे* में तो जो मन में होता है वैसा ही वाणी में बोलते हैं और वैसा ही करते हैं। वहाँ चौथे *आरे* में यदि कोई व्यक्ति कहे कि, 'मुझे पूरे गाँव को जला देने का विचार आ रहा है', तो हमें समझना चाहिए कि वह रूपक में आ ही जाएगा और आज कोई कहे कि, 'मैं आपका घर जला दूँगा', तो हमें समझना है कि, 'अभी तो सोच रहा है, तू मुझे मिलेगा कब?' मुँह पर कह दे तब भी कोई बरकत नहीं। 'मैं आपको मार दूँगा कहता है न', लेकिन वह किस आधार पर? आधार नहीं है, मन-वचन-काया की एकता नहीं है, तो जो बोला है उसके अनुसार कार्य किस प्रकार से होगा? कार्य ही नहीं होगा न! आज से तीन हज़ार साल पहले ऐसा नहीं था। जैसा तीन हज़ार साल पहले था, वहाँ पर वैसा ही रहता है। अभी तो मन अलग होता है, वाणी अलग होती है और वर्तन अलग होता है। आपने ऐसा कोई देखा है? चलो, सभी अपना खुद का अनुभव बताओ तो।

अब वहाँ पर कैसा होता है? मन में जैसा होता है वैसा ही वाणी में बोलते हैं और वैसा ही वर्तन करते हैं। और यहाँ पर तो मन में यदि

ऐसा हो कि, 'मुझे नुकसान करना है', लेकिन मुँह पर मीठा-मीठा बोलता है कि, 'मैं आपके लिए, आप जो कहो वह करने के लिए तैयार हूँ।' इतना बदलाव हो गया है। इसलिए यहाँ से सभी अधोगति में जाएँगे और वहाँ से ऊर्ध्वगति में जाएँगे। वहाँ पर तो यदि ऐसा कहे कि, 'आपकी बेटी को उठा ले जाऊँगा', ऐसा कहे तो समझ ही जाना है कि वह उठाकर ले ही जाएगा। और अपने यहाँ कहे कि, 'मैं तुम्हें मार दूँगा', लेकिन कुछ भी नहीं। वह तो खाली मुँह पर कहता है, सिर्फ इतना ही। इन लोगों के वर्तन में ही नहीं आता न! वहाँ पर अगर ऐसा कहा हो तो अवश्य मार ही देता है। यहाँ पर तो बिना ठिकाने वाले हैं, बेकार ही चिढ़ते हैं, बस इतना ही है। चिढ़ते हैं, बस इतना ही है। यहाँ पाँचवाँ *आरा* है, यानी कि दूषमकाल है यह। दूषम अर्थात् ज़रा सी भी समता रखनी हो तो अत्यंत दुःख सहित समता रहती है, बाकी, समता रहती ही नहीं। और वहाँ महाविदेह क्षेत्र में सुषमकाल है।

प्रश्नकर्ता : आपने एक बार कहा था कि, महाविदेह क्षेत्र में भी इर्ष्या, द्वेष व प्रेम, ऐसे भाव रहते हैं न!

दादाश्री : यहाँ जैसा ही है। यहाँ में और वहाँ में फर्क नहीं है।

प्रश्नकर्ता : वे सभी कषाय नहीं कहे जाएँगे?

दादाश्री : कषाय ही हैं न!

प्रश्नकर्ता : तो फिर महाविदेह क्षेत्र में ऐसा क्यों होना चाहिए? फर्क तो होना चाहिए?

दादाश्री : नहीं, ऐसा नहीं है। अपने यहाँ जब चौथा *आरा* था तब भी सारे कषाय तो थे ही और रामचंद्र जी की पत्नी को भी उठाकर ले गए थे, रामचंद्र जी तो राजा थे, फिर भी! ऐसा तो चलता ही रहेगा।

नित्य चौथा आरा, महाविदेह में

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में जन्म हो तो मोक्ष में जा पाएँगे, ऐसा कुछ है?

दादाश्री : नहीं-नहीं! ऐसा कुछ भी नहीं है। वहाँ पर भी जेब काटने वाले हैं, हरण करके ले जाने वाले, सभी हैं। लेकिन वहाँ पर नित्य चौथा *आरा* रहता है, इसलिए वहाँ पर हमेशा तीर्थंकर भगवान होते हैं। और चौथे *आरे* में मन-वचन-काया की एकता थी। यानी झूठे-लपटी ऐसे सब और ऐसा ही, लेकिन वहाँ पर एकता है और यहाँ पर एकता नहीं है। महाविदेह क्षेत्र में भी ऐसा ही है। सब यहाँ जैसे ही हैं, जेब भी काट लेते हैं। लोग भी सब अपने जैसे ही हैं, नाम भी अपने जैसे ही हैं फिर! लेकिन यदि यहाँ पर (मन-वचन-काया की) एकता वाले हो जाएँगे, तो फिर क्षेत्र का स्वभाव ही ऐसा है कि खींच लेगा। वह वहाँ ले जाएगा और वहाँ पर ऐसे जो लोग होंगे जिनकी एकता टूट चुकी होगी, वे क्षेत्र स्वभाव के कारण खिंचकर यहाँ आ जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : हम में मन-वचन-काया की एकता नहीं है, ऐसा हम जानते हैं। मन में जो है वैसा ही बोल रहे हैं, ऐसा क्या वे लोग जानते हैं? उन लोगों में ऐसी अवलोकन शक्ति है?

दादाश्री : हाँ, है न! सारी शक्तियाँ हैं और बहुत ही जागृति है। अपने यहाँ के लोगों में जागृति ही कहाँ है?

प्रश्नकर्ता : तो वहाँ के लोगों में दखलंदाज़ी नहीं होती?

दादाश्री : दखलंदाज़ी तो बहुत ही है।

प्रश्नकर्ता : बहुत दखलंदाज़ी हो तो मन-वचन-काया की एकता कैसे रह पाती है?

दादाश्री : नहीं, एकता रहती है लेकिन दखलंदाज़ी तो करते ही हैं।

महाविदेह क्षेत्र में जाने का हेतु

प्रश्नकर्ता : जब व्यक्ति कुछ बोलता है और उसी अनुसार

करता है और ऐसा जब हो जाता है, तब उसमें उन लोगों का कर्ता पद कैसे छूटेगा? अज्ञान ही ग्रहण होगा न?

दादाश्री : वह दृढ़ ही होगा।

प्रश्नकर्ता : तो यहाँ के सभी लोग तो महाविदेह क्षेत्र की आशा रखते हैं कि वहाँ जाना है।

दादाश्री : महाविदेह तो, वहाँ पर तो क्यों जाना है क्योंकि यहाँ जिसका कर्ता पद छूट चुका हो न, वह वहाँ महाविदेह क्षेत्र में जाएगा। वहाँ पर तीर्थंकर साहब मिलेंगे न, तो उसका मोक्ष हो जाएगा। बस, इतना ही है। उसे तीर्थंकर के दर्शन करने की ही ज़रूरत है और वहाँ पर तीर्थंकर हैं फिर भी लोग दर्शन ही नहीं करते, वहाँ पर किसी को पड़ी ही नहीं है। कुछ लोगों को ही मोक्ष की पड़ी है, बाकी सब लोगों को नहीं पड़ी है।

प्रश्नकर्ता : क्योंकि यहाँ पर तो कई लोग ऐसा ही भाव करते हैं कि यहाँ से महाविदेह क्षेत्र जाना है।

दादाश्री : हाँ, लेकिन वहाँ महाविदेह क्षेत्र में उन्हें तो मोक्ष के लिए जाना है न! वहाँ पर मोक्ष का साधन मिल जाएगा।

प्रश्नकर्ता : यहाँ से डायरेक्ट (सीधे) मोक्ष में नहीं जा सकते?

दादाश्री : नहीं, सीधे नहीं जा सकते। यहाँ से सीधे मोक्ष में जाना बंद हो गया है। क्योंकि यहाँ पर तो मन-वचन-काया की एकता नहीं है न, इसलिए मोक्ष बंद हो गया है।

यहाँ से एकावतारी होकर फिर मोक्ष होगा। एक जन्म बाकी रहे तो वहाँ महाविदेह क्षेत्र में जाना होगा। वहाँ पर हमें तीर्थंकर मिलेंगे न! दर्शन करने से ही मुक्ति हो जाएगी। और कोई उपदेश भी सीखने की ज़रूरत नहीं होगी।

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर जिनमें मन-वचन-काया की एकता हैं, वे

लोग दर्शन नहीं कर सकते, तो यहाँ पर जिनकी मन-वचन-काया की एकता नहीं हैं, वे लोग किस तरह दर्शन कर सकेंगे?

दादाश्री : लेकिन ये लोग कर सकते हैं। क्योंकि उनकी भावना ऐसी है और इसीलिए 'अक्रम ज्ञान' मिला है न! एकता नहीं रहती, वह तो काल के अधीन है। वहाँ पर काल अच्छा है इसलिए एकता रहती है।

कौन सी भूमिका से जा सकते हैं वहाँ?

प्रश्नकर्ता : वहाँ पर जाना हो तो मनुष्य कौन सी स्थिति में वहाँ जा सकता है?

दादाश्री : जब वह वहाँ जैसा ही बन जाएगा, चौथे *आरे* जैसा इंसान बन जाएगा। इस पाँचवे *आरे* के दुर्गुण चले जाएँगे, तब वहाँ जाएगा। कोई गाली दे फिर भी मन में उसके लिए खराब भाव न आएँ तब वहाँ जाएगा।

अतः अभी तो इस जन्म में हमें ऐसा कोई निबेड़ा लाना है जिससे क्षेत्र बदले। लोगों से ऐसी अपेक्षा न रहे। यानी ऐसा कुछ करना। जैसे-जैसे *निकाल* करते जाएँगे वैसे-वैसे उस क्षेत्र के लायक बनते जाएँगे।

यहाँ पर अपने गुणधर्म बदल गए होंगे तो महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे। यहाँ पाँचवाँ *आरा* चल रहा है। अतः चौथे *आरे* के जो मनुष्य थे, उनके बजाय पाँचवे *आरे* के लोगों के स्वभाव बिगड़ गए हैं। अब वह स्वभाव यहाँ पर ज्ञान देने के बाद सुधरता है। फिर दखल नहीं करते, किसी को दुःख नहीं दे ऐसा हो जाता है, तो फिर क्षेत्र का स्वभाव ऐसा है कि यहाँ से खिंचकर जहाँ चौथा *आरा* चल रहा है वहाँ चला जाता है। वहाँ पर महाविदेह क्षेत्र में नित्य चौथा *आरा* चलता है। और चौथा *आरा* हो तभी तीर्थंकर होते हैं। वर्ना किसी भी जगह पर पाँचवे *आरे* में तो तीर्थंकर होते ही नहीं हैं। इसलिए वहाँ महाविदेह क्षेत्र में तीर्थंकर मिलेंगे, यहाँ पर मनुष्य का स्वभाव बदल जाए, उसके बाद।

यह ज्ञान है न, उसके प्रताप से फिर स्वभाव बदल जाता है। अत: यहाँ के लोगों के साथ मेल नहीं बैठता। क्योंकि अपने जैसे स्वभाव वाले चले गए और दूसरे यहाँ पर हों उनके साथ अपना मेल नहीं बैठता। तो यदि हम यहाँ खड़े रहेंगे तो उसका क्या मतलब? अपनी टोली वहाँ चली गई, तो फिर हम यहाँ किसके साथ माथापच्ची करेंगे? अत: अपना ज्ञान देने के बाद में इन सब में से काफी कुछ महात्मा खिंचकर वहाँ चले जाएँगे। लेकिन फिर एकदम ऐसा नहीं कह सकते, एकाध जन्म यहाँ पर लेकर और फिर वहाँ महाविदेह क्षेत्र में जाएँगे।

उनके दर्शन से मोक्ष

और महाविदेह क्षेत्र में क्यों जाना है? क्योंकि वहाँ हमेशा तीर्थंकर के दर्शन होते हैं। इसीलिए वह हितकारी है। और यहाँ का जीव वहाँ जाए तो वह तीर्थंकर भगवान के लिए ही जाएगा, अन्य कोई भाव नहीं है। अत: यहाँ से जो जाएँगे न, वे तो तीर्थंकर भगवान के पीछे ही पड़ जाएँगे न, एक-दो जन्मों में काम निकाल लेंगे!

हम जिन्हें ज्ञान देते हैं न, वे एक-दो अवतारी बन जाते हैं। फिर उन्हें वहाँ सीमंधर स्वामी के पास ही जाना है। उन्हें सिर्फ तीर्थंकर के दर्शन करने ही बाकी रहते हैं। बस, दर्शन होने से ही मोक्ष। यह

अंतिम दर्शन करते हैं न, इन दादा के दर्शन से आगे के वे दर्शन हैं। वे दर्शन हो गए कि तुरंत मोक्ष!

वापस यहाँ आ सकता है?

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में गया हुआ जीव क्या वापस यहाँ आ सकता है?

दादाश्री : आ सकता है यहाँ पर, लेकिन अपने महात्माओं को नहीं आना पड़ेगा। अन्य बहुत से जीव यहाँ पर आते ही हैं न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन सीमंधर स्वामी की उपस्थिति है न वहाँ तो? तो फिर ऐसा सब क्यों होता है? भगवान का प्रभाव तो पड़ेगा न फिर?

दादाश्री : भगवान का भी नहीं मानते, ऐसे लोग हैं। अरे, भगवान महावीर थे न, तो उन्हें भी ऐसी-ऐसी गालियाँ देते थे। 'आप महावीर हो तो हम कहाँ कम हैं?' ऐसा कहते थे। सभी तरह के लोग हैं ये तो! महाविदेह क्षेत्र में तो सबकुछ अपने जैसा ही है। गोरे-काले सारा ही माल है साथ में! उसमें कोई विशेषता नहीं है। विशेषता सिर्फ इतनी ही है कि वहाँ तीर्थंकर भगवान होते हैं।

जैसे मार्क्स हैं न, वैसे ही गुण हैं, उस हिसाब से वहाँ उत्पन्न होते हैं। जीव महाविदेह क्षेत्र के लायक हो जाएगा तो यहाँ पर टिकेगा ही नहीं। वह जीव यहाँ जी ही नहीं पाएगा इसलिए वहाँ चला जाएगा। और महाविदेह क्षेत्र में यहाँ जैसा जीव होगा, जो दूषमकाल जैसा होगा, तो वह यहाँ पर आएगा। इसलिए अंदर कौन से गुण भरे हैं, उस हिसाब से क्षेत्र है, गति है। प्रकृति गुण कौन से हैं, उसके हिसाब से गति है।

अभी जो दूषमकाल का ऐसा माल है न, वैसा माल महाविदेह क्षेत्र में नहीं होता और अपने यहाँ जैसा चौथे *आरे* में था वैसा ही सारा माल वहाँ पर है अभी। अपने यहाँ का सारा माल सड़ा हुआ

कहा जाएगा। वह तो यहीं पर साफ होता रहेगा। वे तो पाँचवाँ *आरा* पार करेंगे और छठा भी पार कर लेंगे। सब वही का वही चलता रहेगा। इनमें से कुछ-कुछ लोग महाविदेह क्षेत्र में चले जाएँगे।

प्रश्नकर्ता : तो लाख में से एकाध ही महाविदेह क्षेत्र में से यहाँ पर आते होंगे न?

दादाश्री : नहीं, थोड़े ज़्यादा, लाख में से लगभग सौ आते रहते हैं न! क्योंकि माल तो बिगड़ता रहता है न! वह बिगड़ा हुआ माल होता है, दाग़ वाला माल, तो वह यहाँ पर आ जाता है लेकिन यहाँ का दाग़ वाला माल ऊपर कैसे जाए? फिर भी यहाँ से कुछ जीव ऐसे होते हैं जो ज़रा ऊपर जाते हैं। महाविदेह क्षेत्र में, महावीर भगवान के जाने के बाद गए हैं लेकिन बहुत कम जीव जाएँगे।

महाविदेह क्षेत्र के ही लायक

अतः अपने महात्मा लायक हो जाएँगे। सामने वाला उल्टा करे फिर भी उसके लिए खराब नहीं सोचते इसलिए लायक हो गए हैं। कोई आपको गालियाँ दे तब क्या आप उसके लिए खराब सोचते हो?

प्रश्नकर्ता : नहीं।

दादाश्री : अतः आप लायक हो गए! समभाव से *निकाल* करना क्या कोई ऐसी-वैसी बात है?

प्रश्नकर्ता : क्या वहाँ पर भी नालायक होते हैं?

दादाश्री : सभी जगह होते हैं। जीव का स्वभाव तो नहीं जाता न! देहधारी का स्वभाव तो बदलता नहीं है न! यहाँ हम आत्मस्वरूप हो गए तो अपने आप ही वह योग हो जाएगा। हम कहें कि, 'मुझे नहीं आना है'। तब वे कहेंगे कि, 'नहीं, लेकिन आपको और कहाँ पर रखें? महाविदेह क्षेत्र के अलावा अन्य किसी क्षेत्र के काम के ही नहीं हो न!'

[5] हल, महात्माओं की उलझनों का

वीज़ा मिले महाविदेह के

प्रश्नकर्ता : दादा, सीमंधर स्वामी को याद करने से सीमंधर स्वामी के पास जाएँगे, ऐसा तय है क्या?

दादाश्री : जाना है वह तो तय ही है। उसमें कोई नई बात नहीं है लेकिन सतत याद रहने से अन्य कुछ नया नहीं घुसेगा।

दादा याद रहा करते हों या तीर्थंकर याद रहा करते हों तो माया नहीं घुसेगी। अभी यहाँ पर माया नहीं आती।

यह ज्ञान लेने के बाद में आपका यह जन्म महाविदेह क्षेत्र के लिए ही गढ़ा जा रहा है। मुझे कुछ करने की ज़रूरत नहीं है। कुदरती नियम ही है।

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में किस तरह से जा सकते हैं? पुण्य से?

दादाश्री : आज्ञा पालन से धर्मध्यान होता है, वही सारा फल देगा। हमारी आज्ञा का पालन करने से इस जन्म में पुण्य बंधन हो ही रहा है। वह महाविदेह क्षेत्र में ले जाएगा। वे फिर वहाँ पर तीर्थंकरों के पास (पुण्य) भोगने होंगे।

प्रश्नकर्ता : हमें महाविदेह क्षेत्र में जन्म लेना है, तो वह मिल सकता है क्या?

दादाश्री : हाँ, क्यों नहीं मिलेगा? सब फोर्थ वालों को ही फिफ्थ में बिठाते हैं न? जो पास होते हैं, उन्हें। इसी प्रकार से क्षेत्र स्वभाव, (मोक्ष से पहले) एक जन्म के लिए इंसान को यहाँ से ले जाता है। अत: यदि चौथे *आरे* के लायक स्वभाव हो जाए तो जहाँ पर चौथा *आरा* चल रहा हो, वह क्षेत्र उसे वहाँ खींच लेता है और चौथे *आरे* में जो जीव पाँचवे *आरे* के लायक होते हैं, उन्हें पाँचवाँ

आरा वहाँ से खींच लेता है। अत: आपको सीमंधर स्वामी के पास बैठना है और वहाँ पर आपको यह प्राप्ति हो जाएगी। वे अंतिम दर्शन होंगे। हमारे दर्शन से भी उच्च प्रकार के दर्शन। हम तीन सौ छप्पन डिग्री पर हैं, उनकी तीन सौ साठ डिग्री है, इसलिए वहाँ पर वे दर्शन होंगे। अब वैसे दर्शन की ही ज़रूरत है। उसमें सभी कुछ आ जाएगा। वे दर्शन होंगे तो मोक्ष हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : हम महात्माओं के कचरे जैसे आचार को देखकर क्या सीमंधर स्वामी हमें वहाँ पर रखेंगे?

दादाश्री : उस समय ऐसे आचार नहीं रहेंगे। अभी आप जो मेरी आज्ञा का पालन करते हो, उसका फल उस समय आकर रहेगा और अभी जो कचरा माल निकल रहा है, वह तो जो मुझसे पूछे बगैर भरा था, वह निकल रहा है।

प्रश्नकर्ता : हम तो दादा का वीज़ा बताएँगे।

दादाश्री : वीज़ा दिखाने से अपने आप ही काम हो जाएगा। तीर्थंकर को देखते ही आपके आनंद का पार नहीं रहेगा, देखते ही आनंद! पूरा संसार विस्मृत हो जाएगा। जगत् का कुछ भी खाना-पीना अच्छा नहीं लगेगा। उस समय वह खत्म हो जाएगा। निरालंब आत्मा प्राप्त होगा! फिर कुछ भी अवलंबन नहीं रहेगा।

महात्मा कहाँ जाएँगे?

प्रश्नकर्ता : सभी महात्मा सीधे महाविदेह क्षेत्र में ही जाएँगे न?

दादाश्री : कुछ को यहाँ पर आने के बाद फिर जाना होगा, एकाध जन्म लेकर। अंदर पूरा हिसाब पड़ा हुआ होता है लोगों का, वह सारा चुका देना पड़ेगा न! जो बंध (कर्मबंध) हो चुका हो वह खत्म करना होगा। दस-पंद्रह साल का जो हिसाब चुकाना बाकी होगा, उसे चुकाने के बाद जाएँगे। हिसाब तो चुकाना पड़ेगा न! यह ज्ञान लेने से पहले ऐसा कुछ खराब कर्म बाँध लिया हो, तो उससे जो दंड

मिला हो, तो वह दंड तो आपको भुगतना ही पड़ेगा न! और एक जन्म का दंड भुगतकर मुक्त।

प्रश्नकर्ता : क्या ज्ञान लेने के बाद कोई भटक भी सकता है?

दादाश्री : नहीं भटक सकता।

प्रश्नकर्ता : ज्ञान लेने के बाद में क्या कोई हमेशा के लिए भटक सकता है?

दादाश्री : नहीं। लेकिन ज्ञान का अनुसरण न करे और फिर उल्टा चले, सभी का उल्टा ही बोलता रहे, तो फिर कोई ठिकाना नहीं!

प्रश्नकर्ता : जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे, वे सभी फिर मोक्ष में जाएँगे न?

दादाश्री : उनके दर्शन करने से सभी मोक्ष में जाएँगे ऐसा कुछ नहीं है। उनकी कृपा प्राप्त होनी चाहिए। वहाँ पर हृदय साफ हो जाने के बाद उनकी कृपा उतरती जाती है। ये तो सुनने के लिए आते हैं और कान को बहुत मीठा लगता है। अतः सुनकर फिर वापस जहाँ थे, वहीं के वहीं। उसे तो सिर्फ चटनी ही अच्छी लगती है। पूरा थाल नहीं खाता, सिर्फ चटनी के लिए ही थाल के पास बैठा रहता है।

प्रश्नकर्ता : तो हम महाविदेह क्षेत्र में जाकर सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे तो फिर हमारा मोक्ष हो जाएगा या नहीं?

दादाश्री : वह तो हो ही जाएगा न! क्योंकि आपने तो यह ज्ञान लिया है न, इसलिए महाविदेह क्षेत्र में जाओगे तब फिर वहाँ संयोग इकट्ठे हो जाएँगे तो हो जाएगा। क्योंकि आपके जो दो-तीन या चार जन्म बाकी रहेंगे, वे हमारी जो आज्ञा दी है उसके फलस्वरूप रहेंगे और ज़बरदस्त पुण्य होगा इसलिए यहाँ से जाते ही बंगला नहीं बनवाना पड़ेगा, बंगले वालों को वहीं पर तैयार बंगला मिलेगा। बंगला तैयार होने के बाद ही भाई का जन्म होगा! पुण्यशाली को कुछ भी मेहनत नहीं करनी होती है। मेहनत तो बेचारे वे माँ-बाप करते रहेंगे।

प्रतिकृति से यहीं पर प्राप्ति

आप एक जन्म में भी वहाँ पर जा सकते हो और उनके शरीर को आप हाथ से छू भी सकते हो।

प्रश्नकर्ता : हाँ, दादा। हमें चान्स मिलेगा न!

दादाश्री : सब मिलेगा। क्यों नहीं मिलेगा? आप तो सीमंधर स्वामी का नाम लेते रहते हो। सीमंधर स्वामी के नाम से आप नमस्कार करते हो। वहाँ तो आपको जाना ही है, इसीलिए तो हम ऐसा कहते हैं कि, 'साहब! आप भले वहाँ बैठे हैं, हमें नहीं दिखाई दे रहे, लेकिन यहाँ हम आपकी प्रतिकृति बनाकर आपके दर्शन करते रहते हैं।' वह बारह फुट की मूर्ति रखकर, हम उनके दर्शन करते हैं, उनका नाम लेकर याद करते हैं, लेकिन यदि वह मूर्ति जीवंत प्रभु की प्रतिकृति हो तो अच्छा रहेगा। जो चले गए हैं उनके हस्ताक्षर काम नहीं आएँगे, उनकी प्रतिकृति बनाकर क्या करना है? ये तो काम आएँगे। ये तो अरिहंत भगवान हैं!

प्रश्नकर्ता : महाविदेह क्षेत्र में हमारे लिए क्रमिक होगा या अक्रम?

दादाश्री : आपका अक्रम ही रहेगा। अहंकार उत्पन्न ही नहीं होगा।

आज्ञा से सामने चल कर आएगा महाविदेह क्षेत्र

प्रश्नकर्ता : अब जिसने 'ज्ञान' लिया हो, उसे यदि मोक्ष में जाना हो, सीमंधर स्वामी के दर्शन करने वहाँ पर पहुँचना हो, तो उसे और क्या करना चाहिए?

दादाश्री : कुछ भी नहीं करना है। हमारी आज्ञा का पालन करो। आज्ञा ही मोक्ष में ले जाएगी। कुछ भी करने जैसा नहीं है। और यह जो आज्ञा पालन करते हो वह तो संयोग है, मेरा संयोग मिलेगा ही। उसे भी ढूँढना नहीं होगा।

जिसे यहाँ शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठ गया हो वह यहाँ पर भरत क्षेत्र में रह ही नहीं सकेगा। जिसे आत्मा का *लक्ष* बैठ चुका हो, वह महाविदेह में पहुँच ही जाएगा, ऐसा नियम है। यहाँ इस दूषमकाल में रह ही नहीं सकेगा। यह शुद्धात्मा का *लक्ष* बैठा वह महाविदेह क्षेत्र में एक जन्म या दो जन्म करके, तीर्थंकर के दर्शन करके मोक्ष में चला जाएगा। ऐसा सीधा-सरल मार्ग है यह! हमारी आज्ञा में रहना। आज्ञा ही धर्म और आज्ञा ही तप। समभाव से *निकाल* करना है। ये जो सभी आज्ञाएँ बताई हैं, उनमें जितना रहा जा सके, उतना रहे। पूरी तरह से रहे तो भगवान महावीर की तरह रह सकता है! ये रियल और रलिेटिव आप देखते-देखते जाओ, उससे आपका चित्त अन्य जगह पर नहीं जाएगा।

यह ज्ञान प्राप्त होने के बाद हमारी पाँच आज्ञा का पालन करे तो, यहीं पर भगवान महावीर जैसा रह सके, ऐसा है। हम खुद ही रहते हैं न! जिस रास्ते हम चले हैं, वही रास्ता आपको बता दिया है और जो *गुंठाणां* (गुणस्थानक) हमें यहाँ पर प्रकट हुआ है, वह *गुंठाणां* आपका भी हो गया है!

प्रश्नकर्ता : दादा, आपकी वाणी, आपकी सरस्वती का हम स्पर्श पाते हैं और आपके शुद्ध चेतन की साक्षी में हम सीमंधर स्वामी को नमस्कार पहुँचाते हैं तो उन्हें पहुँचता है?

दादाश्री : हम जब आपको ज्ञान देते हैं न, तब हम वहाँ (आपके अंदर) बैठ जाते हैं। अत: आपके नमस्कार पहुँच ही जाते हैं। जिसे ज्ञान मिला है, जो आज्ञा में रहा, उसका पहुँच ही जाएगा। फिर आज्ञा का पालन कम-ज़्यादा हो तो वह अलग बात है। फिर भी आज्ञा पालन तो करते हो न! किसी से ज़रा कम हो पाता है।

इस ज्ञान के बाद अब आपको कर्म बंधन नहीं होंगे। जो कर्म कर रहा था, अब वह करने वाला ही छूट गया। अत: कर्म नहीं बंधेंगे। अर्थात् *संवर* (कर्म का चार्ज होना बंद हो जाना) ही रहेगा, निरंतर। *संवरपूर्वक निर्जरा* (नए कर्म बीज नहीं डलें और कर्म पूरा हो जाना) होती रहेगी। सिर्फ एक जन्म या दो जन्म के कर्म बंधेंगे, वे भी मेरी आज्ञा पालन करने के कारण। और तब तो आपको यहाँ से सीमंधर स्वामी के पास ही जाना पड़ेगा। महाविदेह क्षेत्र ही आपको खींच लेगा। क्योंकि जिसके आर्तध्यान-रौद्रध्यान बंद हो जाएँ, वह यहाँ इस क्षेत्र में रह ही नहीं सकेगा। उसे महाविदेह क्षेत्र खींच ही लेगा। कोई ले जाना वाला है नहीं। क्षेत्र ही खींच लेगा!

प्रश्नकर्ता : आप हमें यहाँ से ले जाएँगे न?

दादाश्री : कहाँ?

प्रश्नकर्ता : भगवान सीमंधर स्वामी के पास।

दादाश्री : हाँ। वह तो ले ही जाएँगे न! सभी को ले जाने के लिए ही तो हम बैठे हैं। मैं अकेला वहाँ जाकर क्या करूँगा? और भगवान हम सब से खुश हैं। सीमंधर स्वामी अपने महात्माओं से, अक्रम विज्ञान से खुश हैं। आपको खुश लगते हैं न?

प्रश्नकर्ता : एकदम।

प्रश्नकर्ता : अपने जो महात्मा वहाँ जाएँगे, वे वापस यहाँ आएँगे क्या?

दादाश्री : वे नहीं आएँगे। वे तो आएँगे ही नहीं। इस विज्ञान के आधार पर तो इतने ऊपर चढ़े हैं। फिर वापस नहीं गिरेंगे।

वहाँ जा सकते हैं, लेकिन स-शरीर नहीं

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी वहाँ पर हैं। आप तो रोज़ दर्शन करने जाते हैं, तो वह किस प्रकार से? वह हमें समझाइए।

दादाश्री : हम जाते हैं, लेकिन हम रोज़ दर्शन करने नहीं जा

पाते। हमें, ज्ञानी पुरुष को यहाँ से (कंधे पर से) एक लाइट वाला प्रकाश निकलता है और निकलकर जहाँ तीर्थंकर होते हैं, वहाँ जाता है। वह प्रश्नों का सॉल्यूशन लेकर वापस आ जाता है। जब समझने में कुछ गड़बड़ हो जाए या समझ में भूल हो जाए तब पूछकर आता है। बाकी, हम आ-जा नहीं पाते, महाविदेह क्षेत्र ऐसा नहीं है।

वह अधिकार तो ज्ञानी को ही

प्रश्नकर्ता : जो शरीर सीमंधर स्वामी के पास जाता है, उसमें आत्मा होता है क्या?

दादाश्री : वह प्रतिष्ठित आत्मा होता है। मूल आत्मा चला जाए तो इस शरीर का क्या होगा, लेकिन वह तो आत्मा का ही भाग है। आत्मा के प्रकाश के रूप में, आत्मा का प्रकाश जाता है। यानी कि यदि कभी कुछ पूछना हो न, तो सारा स्पष्टीकरण मिल जाता है। हो सके वहाँ तक बहुत पूछना नहीं पड़ता। लेकिन ऐसा कुछ होता है, उलझन में पड़ जाए तो पूछना पड़ता है तो सारे स्पष्टीकरण आ जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : तो आत्मा का क्षेत्र इतना फैल सकता है?

दादाश्री : वह तो देह के रूप में निकलता है, पौदगलिक भाव है। अर्थात् मिश्रचेतन है, वह वहाँ पर जाकर प्रश्नों के स्पष्टीकरण लेकर वापस आ जाता है। वह सिर्फ ज्ञानियों को ही, अन्य किसी को अधिकार नहीं है।

सीमंधर स्वामी के साथ हमारा तार जॉइन्ट है। हम जो प्रश्न वहाँ पर पूछते हैं न, उन सभी के जवाब आ जाते हैं। इसलिए, अभी तक हम से लाखों प्रश्न पूछे गए होंगे और सभी के हमने जवाब दिए होंगे। लेकिन यह सब स्वतंत्र नहीं है, हमारे सभी जवाब वहाँ से आए हैं। सभी जवाब नहीं दिए जा सकते न! जवाब देना वह कोई आसान चीज़ है? एक भी व्यक्ति पाँच जवाब नहीं दे सकता। जवाब दे तब तक तो वादविवाद शुरू हो जाते हैं। यह तो एक्ज़ेक्ट जवाब आता है। इसलिए सीमंधर स्वामी को भजते हैं न!

वह तो ज्ञानियों की ही समर्थता

प्रश्नकर्ता : पहले के योगी पुरुष सूक्ष्म देह से अन्य क्षेत्रों में जा सकते थे क्या?

दादाश्री : कोई नहीं जा सकता। वह तो ज्ञानियों के यहाँ कंधे से एक 'बॉडी' निकलती है, वह जाकर आती है।

प्रश्नकर्ता : वह कौन सी बॉडी?

दादाश्री : वह अलग तरह की बॉडी है, प्रकाश रूपी है वह बॉडी, वह निकलती है और समाधान लेकर वापस आती है। वहाँ पर और कोई ज़रूरत नहीं है न! दूसरा, वहाँ पर कुछ खाने नहीं जाते, पूछने जाते हैं और केवलज्ञानी से पूछकर वापस आ जाते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह वापस शरीर के साथ ठीक से एडजस्टमेन्ट ले सकता है क्या?

दादाश्री : समा ही जाता है न वह तो। वह शरीर अलग तरह का है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा, क्या ऐसी चीज़ संभव है?

दादाश्री : हाँ, संभव है न! और साइन्टिफिक है। यानी कि साइन्स से प्रूव हो सके, ऐसा है। यह गप्प नहीं है। इसे लोग, 'स-शरीर गए', ऐसा कहते हैं। लेकिन उस स-शरीर का अर्थ लोग अपनी भाषा में समझते हैं कि यह जो दिखाई देता है उस शरीर सहित, ऐसा नहीं है।

दर्शन करने की योग्यता

प्रश्नकर्ता : मुझे आज की तारीख में सीमंधर स्वामी के दर्शन करने हैं। आज आप जितना समय कहो उतने समय तक सत्संग करके करने हैं। आप आज मुझे वचन दीजिए कि, 'तेरा आज का काम आज हो ही जाएगा। क्योंकि मैं पक्का सोचकर आया हूँ। आपसे एक विनती करता हूँ, आजिज़ी करता हूँ, जो योग्य मार्गदर्शन हो, वह मुझे दीजिए।'

दादाश्री : दर्शन करके क्या करोगे?

प्रश्नकर्ता : दर्शन किए तो फिर और क्या बाकी रहेगा?

दादाश्री : कोई शराबी हो, उसे राजा के दर्शन करवाने हैं और राजा के पास ले जाएँ तो शराबी क्या दर्शन करेगा? अरे, बल्कि कुछ उल्टा बोल देगा। इसलिए इस शराबी को राजा के दर्शन नहीं करवाए जा सकते। उसी प्रकार इन मनुष्यों को, जो कि मोह के अधीन जी रहे हैं, मोह की शराब पी हुई है, उन्हें भगवान के दर्शन नहीं करवाए जा सकते। वर्ना अधोगति को न्योता देंगे। इसलिए योग्यता आने के बाद में दर्शन किए जा सकते हैं। शराब हमेशा के लिए छूट चुकी हो, मोह छूट चुका हो तब दर्शन करवाए जा सकते हैं। योग्यता आने से पहले दर्शन करने ले जाएँगे तो उल्टा बोलकर आएगा कि, 'ये बड़े सीमंधर स्वामी, इतने बड़े दिखाई देते हैं। कपड़े नहीं पहने हुए हैं।' योग्यता आने के बाद ही यह सब काम का है। अभी 'दादा भगवान' को नमस्कार करो।

[6] ज्ञानी, तीर्थंकर के प्रतिनिधि

मोक्ष का घड़तर ज्ञानी द्वारा

तीर्थंकरों का चेहरा कब बहुत खुश हो जाता है? तो कहते हैं कि, जब वे ज्ञानी को देखते हैं तब बहुत खुश हो जाते हैं कि यह कौम सब से अच्छी है। सभी को तैयार करके उनके वहाँ पर भेजते हैं। मेहनत ज्ञानी करते हैं। तीर्थंकरों को मेहनत नहीं करनी होती। उनके पास तैयार मसाला जाता है। गढ़ना हमें पड़ता है। उसके बदले में वे हम पर बहुत खुश होते हैं, बहुत खुश! इसीलिए

जब इन दादा भगवान के थ्रू नमस्कार करते हैं न, वह उनके पास पहुँच जाता है। बाकी, किसी का एक भी नमस्कार स्वीकार नहीं होता। क्योंकि, थ्रू (माध्यम) के बिना क्या हो सकता है?

हमारा सीमंधर स्वामी के साथ संबंध है। हमने सभी महात्माओं के मोक्ष की ज़िम्मेदारी ली है। जो हमारी आज्ञा का पालन करेगा, उसकी हम ज़िम्मेदारी लेते हैं।

दूसरा देहधारण कहाँ पर?

प्रश्नकर्ता : आप अभी जगत् कल्याण करते हैं, अब वे इच्छाएँ कुछ समय बाद कम होंगी तो सही न? या फिर वे खत्म हो जाएँगी, तब फिर आपका जन्म कहाँ होगा?

दादाश्री : पूरा होगा ही नहीं। जब शरीर छूटता है तब उसका परिणाम आता है। तो फिर उस समय जो थोड़ा-बहुत बाकी रह गया होता है, बाद में वह पूरा हो जाता है और पूरा हो जाए तब मोक्ष में जाते हैं। यह अंतिम इच्छा है, खुद को कोई लेना-देना नहीं है, फिर भी इच्छा है। जब तक एक भी इच्छा है, तब तक संसार में से छूट नहीं सकते। हालांकि यह हमारी भरी हुई इच्छा है। आज की इच्छा नहीं है। लेकिन भरी हुई इच्छा पूरी होनी चाहिए। भरी हुई जो इच्छाएँ होती हैं न, वे पूरी होंगी, *निकाल* हो जाएगी।

प्रश्नकर्ता : वह आपका चार्ज हुआ है, ऐसा कहा जाएगा?

दादाश्री : नहीं, ये जो इच्छाएँ हैं, वे डिस्चार्ज के रूप में हैं, चार्ज के रूप में नहीं हैं ये। अब खत्म होने लगेगा, इस शरीर के सारे हिसाब पूरे हो जाएँगे तो खत्म, डिस्चार्ज खत्म हो जाएगा। पहले चार्ज किया था, वह अब डिस्चार्ज हो रहा है। मुझे अच्छा लगे या न लगे, लेकिन डिस्चार्ज हुए बिना कोई चारा नहीं है।

प्रश्नकर्ता : जब वे इच्छाएँ पूरी हो जाएँगी, तब क्या यह शरीर हमेशा रहेगा?

दादाश्री : नहीं। तब दूसरा शरीर मिलेगा, वे वहाँ महाविदेह क्षेत्र से होकर और मोक्ष में जाने से पहले एकाध-दो जन्मों में उसके पुण्य वापस भोगकर और फिर मोक्ष में जाएँगे। पुण्य बंधन तो होगा न! जगत् कल्याण किया है, उसका फल तो फिर वही आएगा और तीर्थंकर नाम कर्म भी बंधेगा। तीर्थंकर फल भी आएगा लेकिन वह भोगना पड़ेगा।

प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में

प्रश्नकर्ता : हम सीमंधर स्वामी को नमस्कार करते हैं, तो दादा भगवान की साक्षी में बोलें और डायरेक्ट बोलें, 'सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ' ऐसा बोलें तो उन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : यहाँ पर दर्शन करने के बाद उसका फल अच्छा मिलता है।

प्रश्नकर्ता : दादा के मिलने से पहले भी, 'सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ', ऐसा बोलते थे और दादा के मिलने के बाद भी बोलते हैं, तो इन दोनों में क्या फर्क है?

दादाश्री : बहुत फर्क है।

प्रश्नकर्ता : ज़रा डिटेल में समझाइए न!

दादाश्री : आपने राजा को देखा नहीं हो और राजा को नमस्कार करते रहो लेकिन प्रधान ने तो राजा को देखा होता है न, ऐसे प्रधान की उपस्थिति में कहोगे, तब क्या फर्क नहीं पड़ेगा? वहाँ पर खबर देंगे न, कि आपके नाम का रटन करते हैं।

प्रश्नकर्ता : लेकिन अभी तो सीमंधर स्वामी विचरण कर रहे हैं, उन्हें किसी भी मंदिर में जाकर नमस्कार करें, तो डायरेक्ट लाइन कनेक्ट हो सकती है न?

दादाश्री : नहीं होगी, कौन करेगा?

प्रश्नकर्ता : अंदर आत्मा की परमात्मा के साथ नहीं होगी?

दादाश्री : नहीं, कुछ भी नहीं होगा। आप आत्मा हो जाओगे तो हो जाएगा। आत्मा हुए नहीं हो तो किस तरह से होगा? आत्मा हो जाओगे तो पहुँचेगा। जिसका देहाध्यास छूट चुका होगा, उसका पहुँचेगा।

प्रश्नकर्ता : यानी कि हमें 'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में' ही करना है?

दादाश्री : थ्रू ही करना है। नहीं तो कोई अर्थ ही नहीं है। सीमंधर स्वामी तो बहुत लोगों के नाम होते हैं।

दर्शन, बुद्धि से परे

प्रश्नकर्ता : दादा सीमंधर स्वामी की भक्ति करते होंगे, उनका जो तार जॉइन्ट हुआ है, वह किस प्रकार का तार होगा? दादा वह भक्ति किस प्रकार से करते होंगे वहाँ पर?

दादाश्री : उसका कोई तरीका नहीं होता।

प्रश्नकर्ता : वह कैसा दर्शन है?

दादाश्री : दर्शन बुद्धि से परे की चीज़ है। फिर उसकी बात ही क्या करनी? बात करने का कोई अर्थ ही नहीं है न!

प्रश्नकर्ता : लेकिन वह क्या है? ज़रा समझ में आए न थोड़ा-बहुत...

दादाश्री : नहीं, बुद्धि से परे है, इसलिए समझ में नहीं आएगा। उसका अर्थ ही नहीं है न! वह तो आपको थ्रू (माध्यम से) करना है तो हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : नहीं, ज़रा उसका स्पष्टीकरण हो जाए न, तो पता चले।

दादाश्री : उसका स्पष्टीकरण इससे अधिक नहीं हो सकता। बुद्धि से परे है इसलिए स्पष्टीकरण काम ही नहीं आएगा न। जो वस्तु अदृश्य है, जो वस्तु अदृश्य व अज्ञेय है फिर इसका कोई अर्थ ही नहीं है न।

फर्क, चौदस और पूनम में

प्रश्नकर्ता : लेकिन यह तो फिर अहंकार बिल्कुल निर्मूल हो जाएगा, पूरी तरह से चला जाएगा, जब आप तीन सौ उनसठ डिग्री पर पहुँचेंगे तब फिर तीर्थंकरों में और आप में क्या फर्क रहेगा?

दादाश्री : बहुत फर्क है। एक डिग्री तो बहुत काम करती है। एक डिग्री में तो कितने सारे 'अतिशय' होते हैं, तीर्थंकरों की उस वाणी में! मेरी वाणी में 'अतिशय' नहीं हैं। उनकी वाणी में तो बहुत 'अतिशय' हैं।

प्रश्नकर्ता : तो दादा, चौदस और पूनम में इतना अंतर है, ऐसा है? इतना अधिक अंतर? ऐसा?

दादाश्री : बहुत अंतर है। ये तो हमें पूनम जैसे लगते हैं, लेकिन बहुत अंतर है! हमारे हाथ में तो है ही क्या? और उनके, तीर्थंकरों के हाथ में तो सभी कुछ हैं। हमारे हाथ में क्या है? फिर भी हमें संतोष रहता है, पूनम जितना। हमारी शक्ति अपने खुद के लिए इतना काम करती है कि हमें, पूनम हो गई हो, ऐसा लगता है।

...एकमात्र इतना ही भावार्थ

हमारी मुहर लगाने के बाद सिर्फ तीर्थंकरों को ही देखना बाकी रहा! और उन्हें देख लें तो फिर मुक्ति! तीर्थंकर, वीतराग, अंतिम दशा के दर्शन किए तो मुक्ति! बाकी सब तो यहाँ पर ज्ञानी पुरुष ने तैयार कर दिया है। अब तीर्थंकर द्वारा वर्क लगाना बाकी है! मिठाई कौन बनाता है और वर्क कौन लगाता है?

बिना माध्यम के, नहीं पहुँचता

प्रश्नकर्ता : 'प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ', वह सीमंधर स्वामी तक कैसे पहुँचता है? यह हकीकत है न कि वे देख सकते हैं?

दादाश्री : देखने में तो वे सामान्य भाव से देखते हैं। तीर्थंकर विशेष भाव से नहीं देखते। इसलिए इन दादा भगवान के थ्रू कहा है, तभी वहाँ पर पहुँचता है। यानी इस माध्यम के बिना पहुँचेगा नहीं न!

अब दादा भगवान और तीर्थंकरों में फर्क कितना? चार डिग्री का फर्क है। उसमें ज़्यादा फर्क नहीं है। और मैं तो, 'भगवान हूँ', ऐसा भी नहीं कहता। 'मैं तो पटेल हूँ।'

प्रश्नकर्ता : आपकी बात नहीं है। यह दादा भगवान की बात है।

दादाश्री : हाँ, वह ठीक है। दादा भगवान की बात अलग है और मैं अपने आपको 'ए.एम.पटेल' कहता हूँ। 'मैं भगवान हूँ' ऐसा कब कहूँगा? तीन सौ साठ डिग्री पूरी हो जाएँगी तब ऐसा कहूँगा, 'मैं भगवान हूँ'।

प्रश्नकर्ता : चार डिग्री का, चार की संख्या का क्या मेल?

दादाश्री : हमारी तीन सौ छप्पन डिग्री है। एक तो यह काल है न, उस आधार पर, हमारे कपड़े नहीं हटे। ये कपड़े हैं, यह सारा जो वेष है, वह नहीं गया। इस प्रकार व्यवहार में दसवे *गुंठाणे* से आगे जा पाएँ, ऐसा नहीं है। निश्चय में बारहवाँ है।

प्रश्नकर्ता : दसवाँ या बारहवाँ? उपशम भाव से है या क्षायिक भाव से?

दादाश्री : क्षायिक भाव से ही है। अपने में तो क्षायिक भाव

ही है। अपने यहाँ उपशम भाव नाम मात्र को भी नहीं है। उपशम भाव जैसी चीज़ ही नहीं है यहाँ पर।

अलग, 'मैं' और 'दादा भगवान'

जैसा पुस्तक में लिखा है कि हम 'ए.एम.पटेल' हैं और अंदर 'दादा भगवान' प्रकट हुए हैं और वे चौदह लोकों के नाथ हैं। अतः जो कभी भी सुना नहीं हो, ऐसे यहाँ पर प्रकट हुए हैं।

एक भाई मुझसे कह रहे थे कि, 'आपके पास बैठने से एकदम शांति हो गई।' तब मैंने कहा, 'मैं चौदह लोक के नाथ के साथ बैठा हूँ और आप मेरे साथ बैठे हो। तो वहाँ पर शांति तो क्या, आनंद बरतता है!'

अतः हम कभी भी खुद को, 'मैं भगवान हूँ', ऐसा नहीं कहते हैं। वह तो पागलपन है, मेडनेस है। जगत् के लोग कहते हैं लेकिन हम नहीं कहते कि, 'हम ऐसे हैं।' हम तो साफ-साफ बता देते हैं।

हम तो कहते हैं कि, 'हम तो निमित्त हैं।' हमें और कुछ नहीं चाहिए। हमें तो अंदर बेहिसाब सुख बरतता है। जहाँ पर अंदर सुख नहीं है, उन्हें बाहर से, लोगों के कहने से सुख होता है। उसका क्या करना है? जिसे अपेक्षा ही नहीं है, जो निरपेक्ष दशा है।

अतः दादा भगवान अलग हैं। मैं अलग हूँ। मैं दादा भगवान को नमस्कार करता हूँ। क्योंकि मेरी तीन सौ साठ डिग्री पूरी करनी है।

अब इस भेद के बारे में लोगों को ज़्यादा समझ में नहीं आता, हम 'ए.एम.पटेल' हैं। 'दादा भगवान' अलग हैं। दादा भगवान प्रकट हो चुके हैं। जैसा चाहिए वैसा काम निकाल लो, ऐसा एक्ज़ेक्ट कहता हूँ। कभी ही ऐसे चौदह लोकों के नाथ प्रकट होते हैं। मैं खुद देखकर कह रहा हूँ, इसलिए काम निकाल लो।

[7] भजना, देवी-देवताओं की इस मोक्षमार्ग में

टले विराधना, आराधना से

प्रश्नकर्ता : मोक्षमार्ग मुक्ति का मार्ग है, उसमें कोई अपेक्षा नहीं हो सकती, तो फिर इसमें शासन देवी-देवताओं को खुश रखने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : इन शासन देवी-देवताओं को इसलिए खुश रखना है क्योंकि इस काल के मनुष्य पूर्व विराधक हैं। पूर्व विराधक अर्थात् किसी से छेड़खानी करके आए हैं, इसीलिए तो अभी तक भटक रहे हैं। हमें देवी-देवताओं की आराधना इसलिए करनी हैं ताकि उनकी तरफ से कोई 'क्लेम' न रहे, अपने मार्ग में, बीच में वे अंतराय न डालें और हमें जाने दें और 'हेल्प' करें। मान लीजिए, हमारा इस गाँव के साथ पहले झगड़ा हो गया हो तो अब इस गाँव के लोगों के साथ आराधना का भाव रखेंगे तो झगड़ा मिट जाएगा और बल्कि काम अच्छा होगा। इसी प्रकार पूरे जगत् की आराधना से, सिर्फ शासन देवी-देवता ही नहीं, लेकिन जीवमात्र की आराधना से अच्छा होगा।

शासन देवी-देवता निरंतर शासन पर, धर्म पर यदि कोई भी

अड़चन आए तो वे हेल्प करते हैं और यह अक्रम मार्ग तो निमित्त है। इसमें शासन देवी-देवता ही काम कर रहे हैं। मैं तो निमित्त बन गया हूँ। कोई दूल्हा चाहिए या नहीं चाहिए? और यह मोक्षमार्ग ऐसा है कि, यहाँ से 'डायरेक्ट' मोक्ष में नहीं जा सकते, एक-दो जन्म बाकी रहे ऐसा यह मार्ग है। इस काल में यहाँ से 'डायरेक्ट' मोक्ष नहीं होता है।

इसलिए हमें किसी प्रकार का विरोध नहीं है। किसी बात में विरोध वाले फँस गए हैं। हम नहीं फँसेंगे न! पूरा जगत् क्रमिक मार्ग होने के कारण नीचे वाले को नमस्कार नहीं करते और सिर्फ ऊपर वालों को ही नमस्कार करते हैं। इनका ऐसा स्वभाव है। और अपना अक्रम, नीचे और ऊपर वाले सभी पदों को नमस्कार करता है। इस जगत् में एक भी ऐसा जीव बाकी नहीं रहा, जिनका अपने 'अक्रम' मार्ग वाला दर्शन नहीं करता होगा! क्योंकि क्रमिक मार्ग क्या कहता है? एय, नर्क के जीवों को नमस्कार नहीं करना चाहिए, तिर्यंच के जीवों को नमस्कार नहीं करना चाहिए, भुवनवासी, व्यंतर देवों को नमस्कार नहीं करना चाहिए। उन सभी को तो पर्याय दृष्टि से देखते हैं।

प्रश्नकर्ता : हाँ।

दादाश्री : और हम तो कहते हैं कि हम तीर्थंकरों को, व्यंतर देवों को, भुवनवासियों को, सभी को नमस्कार करते हैं। हम रियल दृष्टि से देखते हैं।

प्रश्नकर्ता : रियल दृष्टि से?

दादाश्री : हाँ, रियल दृष्टि! इसलिए हमें जीवमात्र के साथ किसी भी तरह का झगड़ा नहीं है। और इसलिए यह ज्ञान प्रकट हुआ है। फुल्ली ज्ञान प्रकट होने का कारण यह है कि, 'हमारे द्वारा इस देह से किसी जीव को किंचित्मात्र भी दुःख न हो।' और इन क्रमिक वालों को क्या है? वे ऊपर देखते हैं, 'ये पूज्य और ये अपूज्य।' पूज्य पर प्रेम और अपूज्य पर द्वेष है। ऐ! तू देवियों को नमस्कार करता

है। तू मिथ्यात्वी हो गया। अरे, भाई क्यों बीच में आ रहा है? अगर समझ में नहीं आता है तो वैसा मत बोलना। ये देवी-देवता, भूत, व्यंतर सभी हैं। गप्प नहीं है यह। और सब अपने-अपने स्थान पर रहे हुए हैं। उन्हें क्यों छेड़ते हो, जब तेरा नाम नहीं लेते हैं, फिर? अरे, बिना बात के अहंकार करता रहता है! हमें तो सभी एक्सेप्टेबल हैं। कोई मना ही नहीं करते न!

आरती, सीमंधर स्वामी की

प्रश्नकर्ता : अपने मंदिर में आरती करने का क्या प्रयोजन है?

दादाश्री : अभी जो भगवान ब्रह्मांड में हाज़िर हैं, ये सब उनकी आरती करते हैं, मेरे थ्रू (माध्यम द्वारा) करते हैं और मैं वह आरती उन्हें पहुँचा देता हूँ। मैं भी उनकी आरती करता हूँ। भगवान पौने दो लाख साल से हाज़िर हैं, उन्हें पहुँचा देता हूँ।

आरती में सभी देवी-देवता हाज़िर होते हैं। ज्ञानी पुरुष की आरती ठेठ सीमंधर स्वामी को पहुँचती है। देवी-देवता क्या कहते हैं कि, 'जहाँ परमहंस की सभा हो, वहाँ हम हाज़िर रहते हैं।' अपनी आरती चाहे किसी भी मंदिर में गाओ, तो भगवान को हाज़िर होना पड़ेगा।

कौन, किसे नमस्कार करता है?

प्रश्नकर्ता : अब हम नमस्कार विधि क्यों करते हैं?

दादाश्री : अपनी इस नमस्कार विधि में तो सभी देवी-देवता,

तिर्यंच, नारकी, सभी को, जीवमात्र को नमस्कार किया गया है। हम शुद्धात्मा, उन्हें नमस्कार नहीं करते हैं, जो बोलता है उससे नमस्कार करवाते हैं। हम समझते हैं कि बोलने वाले ने सब को, इतने-इतने नमस्कार किए। अब देवी-देवता, तिर्यंच, नारकी सभी को नमस्कार किए इसलिए वे लोग कहेंगे कि, 'भाई, हम आपको लेट गो करते (जाने देते) हैं, आप हमारे लिए ऐसा कहते थे न कि हम नहीं हैं। लेकिन हम हैं न!' 'हाँ भाई, आप हैं। हम जानते नहीं थे, इसलिए हम कहते थे कि आप नहीं हैं। लेकिन हम साधु-आचार्यों के संग के कारण ऐसा कहते थे कि, आपके दर्शन करने से हम मिथ्यात्वी हो जाएँगे। लेकिन हम समकिती थे ही कहाँ कि मिथ्यात्वी हो जाते?'

यह नमस्कार विधि बोलना। वे सब आज इस भूमि पर नहीं हैं लेकिन अन्य भूमि पर हैं ही और जो पूर्ण स्वरूप तक पहुँच चुके हैं, ऐसे पुरुषों के नाम लिखे हुए हैं। हमने उन्हें देखा है। इसलिए आप 'दादा भगवान थ्रू', 'दादा भगवान की साक्षी में' बोलते हो तो सारे दर्शन वहाँ पहुँच जाते हैं। तो यह बोलना।

यह तो कैश (नकद) है! क्योंकि यह अक्रम विज्ञान है। वह क्रमिक विज्ञान है। क्रमिक अर्थात् स्टेप बाइ स्टेप, सीढ़ी दर सीढ़ी चढ़ना। और अक्रम अर्थात् लिफ्ट! लिफ्ट अच्छी या सीढ़ियाँ अच्छी?

प्रश्नकर्ता : लिफ्ट यदि सीधे पहुँचा दे तो लिफ्ट अच्छी।

दादाश्री : फिर भी, इसमें आखिरी दो सीढ़ियाँ चढ़नी पड़ती है। आखिरी दो सीढ़ियाँ बाकी रहती हैं। तो, वह भी सिर्फ एक जन्म के लिए।

इस जन्म में सीधे डायरेक्ट मोक्ष में जा सके ऐसा नहीं है। इसलिए लिफ्ट तो, एक-दो जन्म बाकी रहें, वहाँ तक ही पहुँचाती है। वह हमें वहाँ पर सीमंधर स्वामी के पास महाविदेह क्षेत्र में बिठा देती है।

हिन्दुस्तान में यदि घर-घर में सीमंधर स्वामी की फोटो होंगी

तो काम ही हो जाएगा। क्योंकि वे हाज़िर हैं। अगर कभी हमारा फोटो नहीं होगा तो चलेगा लेकिन उनका रखना। चाहे लोग उन्हें पहचानें नहीं और यों ही दर्शन करेंगे तब भी काम हो जाएगा। इन सीमंधर स्वामी के चित्रपट बहुत अच्छे बनाए हैं और जगह-जगह पहुँच जाएँगे न, वैष्णव-जैन बाकी सभी के घरों में पहुँच जाएँगे तो काम हो जाएगा क्योंकि वे हाज़िर हैं और नकद फल देते हैं!

टाइम डिफरन्स का क्या?

प्रश्नकर्ता : आपने हमें सुबह चालीस बार सीमंधर स्वामी को नमस्कार करने को कहा है, तो उस समय यहाँ सुबह होती है लेकिन वहाँ का टाइम डिफरन्ट होगा न?

दादाश्री : हमें ऐसा नहीं देखना है। सुबह कहने का भावार्थ इतना ही है कि बाकी के सब काम-धंधे पर जाने से पहले। काम नहीं हो तो चाहे कभी भी, दस बजे करो न, बारह बजे करो न! सुबह कहने का भावार्थ इतना ही है कि चाहे किसी भी टाइम पर लेकिन चित्त की एकाग्रता से करो।

वे दर्शन, तुरंत ही पहुँचते हैं

सुबह के साढ़े चार से साढ़े छः, वह तो ब्रह्म मूहुर्त कहलाता है, उत्तम मूहुर्त है वह। उसमें जिसने ज्ञानी पुरुष को याद किया, तीर्थंकरों को याद किया, शासन देवी-देवताओं को याद किया, तो उन सभी को वह सारा सब से पहले एक्सेप्ट हो जाता है। क्योंकि फिर मरीज़ बढ़ जाते हैं न! पहला मरीज़ आता है, फिर दूसरा आता है। फिर भीड़ होने लगती है न! सात बजे से भीड़ होने लगती है। फिर बारह बजे ज़बरदस्त भीड़ हो जाती है। इसलिए जो मरीज़ सब से पहले जाकर खड़ा रहता है, उसे भगवान के फ्रेश दर्शन होते हैं। 'दादा भगवान की साक्षी में सीमंधर स्वामी को नमस्कार करता हूँ' बोलते ही तुरंत वहाँ सीमंधर स्वामी को पहुँच जाते हैं। उस समय वहाँ कोई भीड़ नहीं होती। फिर भीड़ में भगवान भी क्या करें? इसलिए साढ़े

चार से साढ़े छः, वह तो अपूर्व काल कहा जाता है। जो जवान है, उसे तो यह छोड़ना ही नहीं चाहिए।

उन्हें नमस्कार कितनी बार?

प्रश्नकर्ता : हमें कितनी बार दादा भगवान को नमस्कार करने चाहिए ताकि हमारा तार रोज़ आपके साथ जुड़े?

दादाश्री : उसे गिनने में तो बहुत समय लगेगा। सौ बार कहेंगे तो फिर गिनता रहेगा।

प्रश्नकर्ता : तो दादाजी, ये सीमंधर स्वामी का तो गिनना ही पड़ता है न चालीस बार।

दादाश्री : उनके लिए गिनना। दादा तो निरंतर रहने ही चाहिए।

प्रश्नकर्ता : निरंतर रहने चाहिए। ठीक है, वे रहते ही हैं।

दादाश्री : सीमंधर स्वामी के लिए रखना हो तो चालीस बार, एक-दो-तीन-चार... बोलना।

प्रश्नकर्ता : हम नमस्कार विधि बोलते हैं, पंच परमेष्टि भगवान को, ॐ परमेष्टि, तीर्थंकर साहबों को, शासन देवी-देवताओं को नमस्कार करते हैं, तब अंदर दृष्टि के सामने क्या होना चाहिए?

दादाश्री : नज़र के सामने दादा की मूर्ति होनी चाहिए।

प्रश्नकर्ता : फोटो?

दादाश्री : चित्रपट, फोटो।

प्रश्नकर्ता : हम सब दादा के प्रति जो राग, जितना इकट्ठा करते हैं, तो फिर अगले जन्म में वह राग वापस खाली हो जाएगा न?

दादाश्री : मुझ पर जो राग है न, वह सीमंधर स्वामी को ही पहुँचता है।

महात्मागण : जय सच्चिदानंद! (आत्मोल्लास से)

प्रश्नकर्ता : लेकिन दादा भी सीमंधर स्वामी जैसे ही हो जाएँगे न?

दादाश्री : वैसा बनकर मुझे क्या करना है? वे तो हैं ही न फिर, हमें वैसा बनकर क्या करना है?

प्रश्नकर्ता : दादा, आप बन चुके हैं, क्या ऐसा कह सकते हैं?

दादाश्री : हमारी तो, इन लोगों का कल्याण हो जाए, वही अपनी भावना।

[8] त्रिमंदिर का निर्माण, जगत् कल्याण हेतु

मतार्थ छूटेंगे तो बनेंगे निष्पक्षपाती

प्रश्नकर्ता : आज के पेपर में आया है कि हम सीमंधर स्वामी, कृष्ण भगवान और शंकर भगवान का, सारे मंदिर साथ में बनवाने वाले हैं, तो यह समझ में नहीं आया। वह समझाइए।

दादाश्री : ये मतार्थ खत्म करने के लिए हैं! वहाँ पर तीन मंदिर बन रहे हैं। इन सीमंधर स्वामी का, जो जीवित हैं, उनके लिए बन रहा है। कृष्ण भगवान जीवित हैं, उनका बन रहा है और 'शिव' अर्थात् कल्याण स्वरूप ज्ञानी, वे भी जीवित हैं। अत: तीनों मंदिर बन रहे हैं। वे साथ में नहीं लेकिन अलग-अलग। लेकिन सभी लोग दर्शन करके जाएँगे। उससे इन लोगों के सारे मतार्थ चले जाएँगे। इन मूर्तियों में ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा! मूर्तियाँ बोलेंगी आपसे! मूर्तियाँ बातें करेंगी! प्रतिष्ठा तो, जिनमें अहंकार नहीं हो न, वे ही प्रतिष्ठा कर सकते हैं या फिर जिनका अहंकार उपशम हो चुका है, वे कर सकते हैं।

हिन्दुस्तान में मतार्थ नहीं रहना चाहिए। कृष्ण भगवान को जो भजता है, वह सीमंधर स्वामी को भजे और इस तरफ शिव को भजे। जगह एक लेकिन मंदिर सेपरेट, ऐसा एक संकुल बन रहा है। अभी जगत् के मतार्थ निकालने के लिए यह निष्पक्षपाती धर्म है। पूरा अवसर्पिणी काल बीत गया। अभी तक तो मतार्थ में चले हैं! भगवान

महावीर का शासन है, तभी तक धर्म है। फिर धर्म का अंश भी नहीं रहेगा, मंदिर-पुस्तकें कुछ भी नहीं रहेगा। इसलिए अठारह हज़ार सालों तक यदि सचेत हो जाए और मतार्थ में से छूट जाए और ऋषभदेव भगवान ने जैसे निष्पक्षपाती झुकाव के बारे में बताया था, वैसा निष्पक्षपाती झुकाव वापस हो जाए।

हर कोई चाहे अपने-अपने मंदिर अलग रखे, लेकिन मंत्र तो सब के एक साथ बोलने चाहिए। किसी का किसी से बैर नहीं होना चाहिए। मंत्र साथ में बोलेंगे तो सब पहुँच जाएगा। अपने मन में जुदाई नहीं है, तो कुछ भी अलग है ही नहीं। अतः ये तीनों ही मंदिर इकट्ठे बनेंगे और हिन्दुस्तान में से मतार्थ चले जाएँगे तो शांति हो जाएगी! जैसे शकरकंद भठ्ठी में रखा जाए तो कितनी तरफ से सिकता है? चारों तरफ से। उसी प्रकार ये लोग चारों तरफ से जल रहे हैं। तू अहमदाबाद में, मुंबई में, देख तो सही! यहाँ तो कम सिक रहा है। यहाँ मोहराजा का बल ज़रा कम है, इसीलिए कम जलता है। वहाँ मोहराजा का बल, देखो तो सही! करोड़ों रुपये होने के बावजूद जिस तरह मछली तड़पती है, उस तरह लोग तड़प रहे हैं! इसलिए यह उपाय है। तुझे इसमें कोई आपत्ति है? तू भी इसमें तेरा मत देगा न? तेरी सहमति देगा न?

प्रश्नकर्ता : हाँ, अब सीमंधर स्वामी के साथ कृष्ण भगवान, शिव भगवान भी स्थापित किए हैं। सीमंधर स्वामी तो वीतराग माने जाते हैं न?

दादाश्री : हाँ, वीतराग ही माने जाते हैं और वे भी जो हैं, वे शलाका पुरुष हैं। कृष्ण भगवान तो वासुदेव, नारायण कहे जाते हैं। जो नर में से नारायण बने

हैं, वे। वे तिरसठ शलाका पुरुषों में आते हैं और फिर अगली चौबीसी में तीर्थंकर बनने वाले हैं। तीर्थंकरों ने उन्हें एक्सेप्ट (स्वीकार) किया है। और शिव को ज्ञानी के तौर पर एक्सेप्ट किया हुआ है। जो कोई भी ज्ञानी बनता है, वह शिव कहलाता है। यानी कि इन सभी को एक्सेप्ट किया हुआ है। इन सभी के मतभेद चले जाएँगे।

इन तीन मंदिरों में मूर्तियाँ देखोगे तब आपको भव्यता महसूस होगी।

यह इच्छा है 'हमारी'

हमें जगत् में मतभेद कम कर देने हैं। लोग जब मतभेद से दूर हो जाएँगे न, तब सही बात को समझने लगेंगे। ये तो इतने मतभेद कर दिए हैं कि शिव की ग्यारस और वैष्णव की ग्यारस, ग्यारस भी अलग-अलग! ऐसे में मैंने मंत्र इकट्ठे कर दिए हैं और मंदिर अलग-अलग रखो क्योंकि वह एक तरह की बिलीफ है। शिव में कृष्ण को मत डालो। लेकिन ये जो मंत्र हैं, इन्हें साथ में रखो। क्योंकि मन हमेशा शांत हो जाना चाहिए न! तो इन लोगों ने ये सारे मंत्र बाँट दिए हैं और इन सब को साथ में स्थापित करके मैं ऐसी प्रतिष्ठा करूँगा कि लोग धीरे-धीरे मतभेद भूल जाएँगे। यह इच्छा है हमारी, अन्य कोई इच्छा नहीं है।

मंदिर की रचना किसलिए?

प्रश्नकर्ता : हिन्दुस्तान में कितने सारे भगवानों के कितने सारे मंदिर बने हैं और नए-नए बनते ही जा रहे हैं...

दादाश्री : लेकिन अब जो बना दिए हैं, उन्हें हम कैसे मना कर सकते हैं? जो हकीकत हो चुकी है।

और हम जो मंदिर बनाने वाले हैं, वे तो अनिवार्य (आवश्यक) हो चुके हैं, बनवाने ही पड़ेंगे। यह तो सीमंधर स्वामी का है। जिनका मंदिर बनाओ वे जीवंत होने चाहिए। ये तो तीर्थंकर साहब हैं। ये जगत् के लोगों के कल्याण के लिए बन रहे हैं, मतभेद मिटाने के लिए।

प्रश्नकर्ता : यह जो सीमंधर स्वामी का मंदिर बन रहा है, उसकी बात नहीं कर रहा हूँ। यह तो अन्य जो मंदिर हैं, उनकी बात कर रहा हूँ।

दादाश्री : वह ठीक है। वे जो सारे मंदिर बन रहे हैं, उनमें दखलंदाज़ी नहीं कर सकते! उसकी हम अनुमोदना नहीं कर सकते, न ही उसमें हम कुछ कर सकते हैं। लेकिन यदि लोग कर रहे हों तो उसमें हम अंतराय नहीं डाल सकते! बाकी, आपका कहना सही है। इतने सारे मंदिर हैं, मंदिरों में दर्शन करने की ज़रूरत है।

प्रश्नकर्ता : इसी को लोग धर्म मान लेते हैं, तो रियल धर्म नहीं चूक जाएँगे?

दादाश्री : ऐसा है कि उल्टे रास्ते जाने की बजाय यह अच्छा है। जो धर्म करता है उसे यदि ऐसा कहेंगे कि, 'वह गलत है' तो उल्टे रास्ते पर चला जाएगा। धर्म को छुड़वाएँगे तो वह उल्टे रास्ते पर चला जाएगा। उसे देर ही क्या लगेगी? छुड़वाने जैसा नहीं है। हमें अपना खुद का कर लेने जैसा है। औरों की झंझट करने जैसी नहीं है। यह जगत् तो बहुत बड़ा तूफान है!

मंदिर का महत्व

प्रश्नकर्ता : यदि देरासर नहीं होते, मंदिर नहीं होते, तो फिर जिस तरह से अपने लिए दादाश्री आए हैं, प्रकट हुए हैं, उसी प्रकार से उनके लिए भी कोई न कोई आ जाता न?

दादाश्री : वह तो ठीक है। वह एक तरह का विकल्प है। ऐसा हुआ है, ऐसा नहीं होता तो अन्य कोई उपाय तो होता न?

अन्य कुछ न कुछ मिल जाता। लेकिन यह मंदिरों का उपाय बहुत ही अच्छा है। मूर्तियाँ तो हिन्दुस्तान का सब से बड़ा 'साइन्स' हैं। वे सब से अच्छी परोक्ष भक्ति हैं, लेकिन यदि समझे, तो। मंदिर हो तो भगवान को 'पधारिए' ऐसा कह सकते हैं! नहीं तो भगवान कहाँ पधारेंगे? हवा में उड़ने वाले काम नहीं आएँगे। एक जगह पर स्थिर हो, वहाँ पर 'पधारिए' कहा जा सकता है।

मूर्ति किसलिए रखी है? उसके पीछे क्या भावना है? ''साहब, आप सनातन सुख वाले हैं और मैं तो 'टेम्परेरी' सुख वाला हूँ। मुझे भी सनातन सुख की इच्छा है।'' भगवान सनातन सुख वाले हैं, इसीलिए तो देखो न, मूर्ति में हैं फिर भी हम से अधिक सुंदर दिखाई देते हैं। जैसे, देखते ही रहे!

हम भगवान की मूर्ति के दर्शन करते हैं, तब मूर्ति क्या कहती है? 'भाई, यह माल मेरा नहीं है, यह माल तेरे ही शुद्धात्मा का है।' इसलिए मूर्ति आपके शुद्धात्मा को वापस भेज देती है। इसे परोक्ष भक्ति कहा जाता है!

समकिती को छूट है, सब जगह दर्शन करने की

प्रश्नकर्ता : मेरे जैसे ने ज्ञान लिया है, तो अब, जब मंदिर में जाएँ तब क्या करना चाहिए?

दादाश्री : अब 'चंदूलाल' (पाठक को खुद का नाम समझना है) से ही कहना कि नमस्कार करना, भाई! अंदर भाव हो तो, और नहीं हो तो कोई बात नहीं। लेकिन उसके प्रति घृणा नहीं रहनी चाहिए, अभाव नहीं रहना चाहिए। वह रिलेटिव (व्यवहार) है। रिलेटिव में हर्ज नहीं है। रिलेटिव में तो मस्जिद में जाएँ, तब भी दर्शन कर सकते हैं।

अत: रिलेटिव में निष्पक्षपाती और रियल में (निश्चय) यह सिर्फ शुद्धात्मा ही। रियल भक्ति एक ही है।

सीमंधर स्वामी की ही पूजा करो

ये मंदिर इसलिए हैं कि जगत् सीमंधर स्वामी को पहचान सके। 'सीमंधर स्वामी कौन हैं?' वह पहचान सके। घर-घर में सीमंधर स्वामी के फोटो की पूजा होगी और आरतियाँ होंगी और जगह-जगह सीमंधर स्वामी के मंदिर बनेंगे तब दुनिया का नक्शा कुछ और ही होगा!

अभी बहुत काम होना है, मेरे हाथों तो बहुत काम होना है!

ऐसा कुछ होगा तो इन लोगों का कल्याण होगा, निमित्त चाहिए। अत: यह सीमंधर स्वामी का संकेत अवश्य फल वाला है। अत: लोगों ने ज्ञान नहीं लिया होगा न, और वहाँ सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे न, तब भी उसमें फल है, इसीलिए यह सब बना रहे हैं, वर्ना

हमें कहीं यह सब होता होगा? हमें यह सब शोभा नहीं देता। और ये तो जीवंत तीर्थंकर हैं, इसलिए बात कर रहे हैं। अन्य भूतकाल के तीर्थंकरों की बात करने का अर्थ ही नहीं है। बाकी, जितने मंदिर चाहिए उतने हैं ही। उनकी ज़रूरत है। हम उसके लिए मना नहीं करते। क्योंकि वह मूर्ति पूजा है न! और भूतकाल के तीर्थंकरों की है न! वे तीर्थंकर थे, वह बात तो सही है न! इसलिए कितने ही लोग कहते हैं कि दादा भी इस प्रकार से मंदिर बनाने में पड़े हैं। लेकिन हम अब ऐसे संयोगों में आ गए हैं। हमारी इसमें ऐसी कोई इच्छा ही नहीं है।

अत: यह सीमंधर स्वामी का मंदिर बन रहा है, वह व्यवहार है। भविष्य की प्रजा को उबारने के लिए है यह। और अपने लिए भी, अगर मेरा फोटो हो तो हेल्प फुल है या नहीं?

प्रश्नकर्ता : बहुत हेल्प करेगा।

दादाश्री : क्योंकि दादा खुद हैं। इसी प्रकार (जब तक) सीमंधर स्वामी खुद हैं, तब तक वे हेल्प फुल हैं। और यह तो हम जो करते हैं, वह तो इट हैपन्स है। 'इट हैपन्स' हो रहा है। सीमंधर स्वामी की भजना करेंगे तो हिन्दुस्तान में बदलाव आएगा, वर्ना बदलाव कैसे आएगा?

प्रश्नकर्ता : दादा, अभी देखें तो हिन्दुस्तान में तो घोर कलियुग है।

दादाश्री : वह भले ही रहा घोर! यह सब जब तक सीमंधर स्वामी खुश हैं, जहाँ देवी-देवता भी खुश हैं, फिर वहाँ बाकी क्या रहा?

मंदिर नहीं लेकिन कल्याण का धाम

इन मंदिरों के लिए यह सारी संज्ञा हुई इसलिए बने हैं। हमारी यह संज्ञा जगत् कल्याण के लिए है।

यह सीमंधर स्वामी का मंदिर बन जाए तो अच्छा। लोगों के हित के लिए है। यहाँ जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे न, उतना ही अधिक फलदायी हो जाएगा। क्योंकि ये हाज़िर तीर्थंकर कहलाते हैं, बहुत हेल्प फुल हैं!

प्रश्नकर्ता : सीमंधर स्वामी के मंदिर और जगह भी हैं न? फिर नया बनाने की क्या ज़रूरत है?

दादाश्री : दूसरी जगहों पर सीमंधर स्वामी के जो मंदिर हैं न, वे सब लोगों को एक्सेप्ट नहीं होते। वीतराग सभी लोगों को एक्सेप्ट

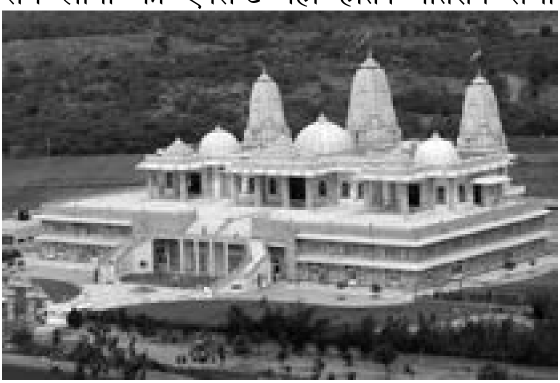

होने चाहिए। पक्षपाती नहीं होने चाहिए। इसलिए यह जो सीमंधर स्वामी का मंदिर बन रहा है न, उसमें चार मूर्तियाँ, अपने जो तीर्थंकर हो चुके हैं, उनकी रहेंगी। पहले और दूसरे – ऋषभदेव और अजीतनाथ भगवान

और तेईसवे और चौबीसवे - पार्श्वनाथ और महावीर भगवान। और सीमंधर स्वामी की बड़ी मूर्ति यहाँ मेहसाणा (नॉर्थ गुजरात का एक शहर) जैसी, बारह फुट की और साथ में हैं कृष्ण वासुदेव का मंदिर और इस तरफ शिवलिंग। अतः इन सब धर्मों का यहाँ संकलन किया गया है और यह सब से बड़ा यात्रा का स्थान बनेगा और इससे लोगों का कल्याण होगा।

अमूर्त का मंदिर है यह

यह इनकी मूर्ति की स्थापना नहीं कर रहे हैं, सीमंधर स्वामी खुद हाज़िर हैं। उनकी मूर्ति यानी कि उनकी खुद की प्रतिनिधि कही जाएगी। जिस प्रकार ये दादा यहाँ पर हैं, उनकी मूर्ति की सब भजना करते हैं। वह मूर्ति उनकी प्रतिनिधि कहलाती है। मैं नहीं होऊँ तब वह मूर्ति कही जाएगी। मूर्ति के दर्शन कब तक करने हैं? अमूर्त प्राप्त होने तक। अमूर्त प्राप्त होने तक मूर्ति का अवलंबन है। फिर क्या मूर्ति को छोड़ देना है? भगवान ने कहा है कि, 'नहीं।' मूर्ति को छोड़ नहीं देना है, वर्ना लोग भी छोड़ देंगे। अतः व्यवहार धर्म है यह, हम भी जाते हैं। वर्ष में दो-तीन बार मैं भी वहाँ जाता हूँ। तो मुहल्ले वाले सभी को समझ में आता है कि दादा जाते हैं। व्यवहार धर्म पूरा खुला रखना है।

प्रश्नकर्ता : वर्तमान में सभी लोग व्यवहार में हैं और भावि प्रजा के लिए तो यह मूर्ति परोक्ष है, तो लोग भक्ति करेंगे ही न?

दादाश्री : नहीं, यह मूर्ति परोक्ष नहीं है।

प्रश्नकर्ता : लेकिन भविष्य की प्रजा, उनके लिए तो परोक्ष जैसा हो जाएगा न?

दादाश्री : सिर्फ उनके लिए ही नहीं। पहले अपने लिए है यह। अपने लिए क्या है? सीमंधर स्वामी आज हाज़िर हैं। अभी तो सवा लाख साल तक हाज़िर हैं। एक कलेक्टर वहाँ पर कुर्सी पर हो, तब तक काम होगा या नहीं होगा?

प्रश्नकर्ता : होगा।

दादाश्री : कोई कलेक्टर आपका काम नहीं कर रहा हो, तो आप घर बैठे उसके फोटो के सामने उसके प्रतिक्रमण करते रहो तो आपका काम हो जाता है। उनके फोटो के पास आप प्रतिक्रमण करते रहो तो भी चलेगा। अब कलेक्टर को देखा है, जाना है इसलिए उसके फोटो की ज़रूरत नहीं है, जबकि इनके फोटो की ज़रूरत है और भविष्य की प्रजा के लिए, पूरे जगत् के कल्याण के लिए है। इस मंदिर का संकुल तो मतार्थ मिटाने के लिए है। सारे मतभेद चले जाएँगे और लोगों को फल देगा।

महाविदेह क्षेत्र में सीमंधर स्वामी भगवान विराजमान हैं। तो यहाँ उनकी मूर्ति स्थापित करनी है, जीवित की मूर्ति होनी चाहिए! कितना अधिक फल देगी? सीमंधर स्वामी का मंदिर, वह मूर्ति का मंदिर नहीं है, वह अमूर्त का मंदिर है।

उनका चित्रपट या मूर्ति सारा काम करेगी। इसलिए अपने महात्माओं को वहाँ दर्शन करते ही रहना है। सामने बैठे रहना है, आप सीमंधर स्वामी के पास बैठे रहो, उस मूर्ति के पास बैठे रहोगे न, तब भी हेल्प होगी।

मैं भी बैठा रहता हूँ न! मुझे तो मोक्ष मिल गया है, फिर भी मैं बैठा हूँ न। वर्ना मुझे उनका क्या काम था? मुझे मोक्ष मिल गया है फिर भी मैं बैठा हुआ हूँ। क्योंकि अभी भी वे *ऊपरी* हैं। उनके दर्शन करते हैं। वे दर्शन किसके? मोक्ष स्वरूप के। देह सहित जिनका स्वरूप मोक्ष है। उनके दर्शन करेंगे तब मोक्ष होगा, वर्ना मोक्ष नहीं होगा।

हितकारी वर्तमान तीर्थंकर ही

प्रश्नकर्ता : दादा, ये मंदिर और ये सब बन रहे हैं, उसमें वास्तव में भाव सारा आत्मा का ही करना है न? वास्तव में तो हमें आत्मा का ही रास्ता ढूँढना है न?

दादाश्री : हमें मोक्ष में जाना है वहाँ पर। मोक्ष में जा सकें,

उतना पुण्य चाहिए। यह अनंत जन्मों का नुकसान खत्म करना है और एक ही जन्म में करना है। इसलिए वास्तव में तो मेरे पीछे पड़ जाना चाहिए, लेकिन वह तो आपके बस में नहीं है। ये उनके साथ तार जुड़वा देता हूँ, क्योंकि वहाँ जाना है। अभी एक जन्म बाकी रहेगा। यहाँ से सीधे मोक्ष नहीं होगा। उनके पास बैठना है इसलिए कनेक्शन करवा देता हूँ और ये भगवान पूरे वर्ल्ड का कल्याण करेंगे। यानी उनके निमित्त से पूरे वर्ल्ड का कल्याण होगा।

यहाँ पर जितना आप सीमंधर स्वामी का करोगे, उतने में आपका सब आ जाएगा। सब हो जाएगा। उसमें ऐसा नहीं है कि यह कम है। इसमें तो आपने जो (देने के लिए) तय किया हो वह सब करो। तो सब हो गया। फिर इससे अधिक करने की ज़रूरत नहीं है। फिर अस्पताल बनाओ या बाकी और कुछ करो। वह सब अलग रास्ते पर जाता है। वह भी पुण्य है लेकिन संसार में ही रखेगा और यह पुण्यानुबंधी पुण्य, जो मोक्ष जाने में हेल्प करेगा!

मोड़ो बहाव लक्ष्मी का 'वहाँ'

यदि मंदिर के लिए लक्ष्मी दोगे तो यह ज्ञान जैसी, क्योंकि सीमंधर स्वामी के लिए हैं। पुस्तकों का दान दोगे तो उससे भी ज़्यादा विशेष यह है, ऐसा है। हाँ, सीमंधर स्वामी के लिए जो कुछ भी किया जाता है उसकी बात ही अलग है। उसका हिसाब ही नहीं लगाया जा सकता। चौबीस तीर्थंकरों की मूर्ति, लेकिन वे जो जा चुके हैं, वे तीर्थंकर। ये हाज़िर तीर्थंकर कहे जाते हैं। अपने यहाँ हाज़िर तीर्थंकरों की मूर्ति या मंदिर पहले से नहीं बनवाते। अपने भारत देश में जब पारसनाथ हाज़िर थे, उस समय उनका मंदिर बना था।

प्रश्नकर्ता : अत: जब तक उनका शरीर है और वे विचरण कर रहे हैं तभी तक हेल्प करते हैं?

दादाश्री : हाँ, लेकिन उनका शरीर कब तक है?

प्रश्नकर्ता : डेढ़ लाख साल की आयु है, तब तक।

दादाश्री : अब जितनी बाकी है, (जब तक) उतनी आयु पूरी होगी तब तक लोगों को लाभ होगा। और हम प्रतिष्ठा भी इतनी अच्छी करेंगे। उससे लोगों का कल्याण हो जाएगा।

प्रश्नकर्ता : लाभ होता है यानी क्या होता है? इन जीवों में जागृति उत्पन्न होगी?

दादाश्री : धर्म के रास्ते पर आ जाएँगे। अच्छा, सत् धर्म, मोक्षमार्ग का रास्ता मिल जाएगा।

जागृति वगैरह सब बढ़ेगा। सर्वोत्तम चीज़ मिलती रहेगी लेकिन मेरी भावना है कि हिन्दुस्तान इस स्थिति में नहीं रहना चाहिए। लोग इस स्थिति में नहीं रहने चाहिए।

सीमंधर स्वामी के रिप्रेज़ेन्टेटिव

प्रश्नकर्ता : हम रोज़ सीमंधर स्वामी से प्रार्थना करते हैं कि एकाध देवता भेजिए, जो हमें वहाँ पर ले जाए।

दादाश्री : वह प्रार्थना फलेगी। उसी के लिए मुझे भेजा है।

प्रश्नकर्ता : जय सच्चिदानंद!

दादाश्री : और मैं तो कितने ही लोगों को अपने हाथों सिद्धि दे देने वाला हूँ। फिर बाद में ज़रूरत पड़ेगी या नहीं पड़ेगी? बाद में लोगों को मार्ग तो चाहिए न?

कामना पूजने की, पूजे जाने की नहीं

हिन्दुस्तान में सभी लोगों ने मुझसे कहा कि हमें मंदिर में आपकी मूर्ति रखनी है। मैंने कहा, 'नहीं, मूर्ति नहीं रखनी है। मैं मूर्ति रखवाऊँगा तो फिर पीछे वालों का भी मनचाहा हो जाएगा। तब फिर बाद में वे भी रखवाएँगे। फिर कोई दूसरा और भी रखवाएगा।'

यानी मैं यहीं से कट कर देता हूँ तो फिर कोई गड़बड़ और

झंझट ही नहीं न! फिर लालच नहीं रहा न! फिर वे अपनी मूर्ति कैसे रखवाएँगे?

प्रश्नकर्ता : मूल ध्येय चूक जाएँगे।

दादाश्री : इसलिए मेरी मूर्ति रखने की ज़रूरत नहीं है। मैं तो मूर्त ही हूँ, जब भी देखो तब। यह मूर्ति तो सभी पहले के लोगों की रखी है। दो तरह के लोगों की मूर्ति रखी गई है। सच्चे पुरुषों की,

मूल पुरुषों की, जिनकी अपने लोगों ने मूर्ति रखी है। और मेरे बाद तो क्या होगा? फिर तो प्रथा चलेगी कि मेरे बाद में जो भी होगा न, वह फिर दादा की रखेगा, अतः मैंने कहा है कि मेरी मूर्ति रखनी हो तो सीमंधर स्वामी के सामने मैं इस तरह करके (हाथ जोड़कर) बैठा होऊँ, वैसी मूर्ति रखना।

प्रश्नकर्ता : मूर्ति रखनी ही पड़ेगी ऐसा हो तो ऐसी बनवा तो सकते हैं न?

दादाश्री : तो उसमें हर्ज नहीं है। उससे लोगों को लगेगा कि इन दादा को पूजे जाने की कामना नहीं है, पूजने की कामना है। ये सीमंधर स्वामी पूजा करने के लिए हैं और इन्हें पूजना है, वह बता रही है!

मेरी तो बहुत-बहुत पूजा हो चुकी है। अनंत जन्मों से तृप्त हो चुका हूँ, पूजा करवा-करवाकर! इसलिए मेरी अब किसी तरह की भीख नहीं रही। वह तो एक तरह की भीख है मान की, पूजे जाने की कामना। इन सभी कामनाओं को छोड़ देंगे, तभी इसका हल आएगा।

– **जय सच्चिदानंद**

वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी से प्रार्थना

प्रत्यक्ष दादा भगवान की साक्षी में महाविदेह क्षेत्र में विचरते तीर्थंकर भगवान श्री सीमंधर स्वामी को अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करता हूँ।

हे निरागी, निर्विकारी, सच्चिदानंद स्वरूप, सहजानंदी, अनंतज्ञानी, अनंतदर्शी, त्रैलोक्य प्रकाशक, प्रत्यक्ष-प्रकट ज्ञानीपुरुष श्री दादा भगवान की साक्षी में, आपको अत्यंत भक्तिपूर्वक नमस्कार करके, आपकी अनन्य शरण स्वीकार करता हूँ। हे प्रभु! मुझे आपके चरणकमलों में स्थान देकर अनंतकाल की भयंकर भटकन का अंत लाने की कृपा कीजिए, कृपा कीजिए, कृपा कीजिए।

हे विश्ववंद्य ऐसे प्रकट परमात्म स्वरूप प्रभु! आपका स्वरूप ही मेरा स्वरूप है। परंतु अज्ञानता के कारण मुझे मेरा परमात्मा स्वरूप समझ में नहीं आता। इसलिए आपके स्वरूप में ही मैं अपने स्वरूप का निरंतर दर्शन करूँ ऐसी मुझे परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

हे परमतारक देवाधिदेव, संसार रूपी नाटक के आरंभ काल से आज दिन के अद्यक्षण पर्यंत, किसी भी देहधारी जीवात्मा के मन-वचन-काया के प्रति, जाने-अनजाने जो अनंत दोष किए हैं, उन प्रत्येक दोषों को देखकर, उनका प्रतिक्रमण करने की मुझे शक्ति दीजिए। इन सभी दोषों की मैं आपसे क्षमा-याचना करता हूँ। आलोचना, प्रतिक्रमण, प्रत्याख्यान करता हूँ। हे प्रभु! मुझे क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए, क्षमा कीजिए। और मुझसे फिर ऐसे दोष कभी भी न हों, ऐसा दृढ़ निर्धार करता हूँ। इसके लिए मुझे जागृति दीजिए, परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए।

अपने प्रत्येक पावन पदचिन्हों पर तीर्थ की स्थापना करनेवाले हे तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी प्रभु! संसार के सभी जीवों के प्रति संपूर्ण अविराधक भाव और सभी समकिती जीवों के प्रति संपूर्ण आराधक भाव, मेरे हृदय में सदा संस्थापित रहे, संस्थापित रहे, संस्थापित

रहे। भूत, भविष्य और वर्तमान काल के सर्व क्षेत्रों के सर्व ज्ञानी भगवंतों को मेरा नमस्कार हो, नमस्कार हो, नमस्कार हो। हे प्रभु! आप मुझ पर ऐसी कृपा बरसाइए कि जिससे मुझे इस भरतक्षेत्र में आपके प्रतिनिधि समान किसी ज्ञानीपुरुष का, सत्पुरुष का सत् समागम हो और उनका कृपाधिकारी बनकर आपके चरणकमलों तक पहुँचने की पात्रता पाऊँ।

हे शासन देव-देवियों! हे पांचागुली यक्षिणी देवी तथा हे चांद्रायण यक्ष देव! हे श्री पद्मावती देवी! हमें श्री सीमंधर स्वामी के चरणकमलों में स्थान पाने के मार्ग में कोई विघ्न न आए, ऐसा अभूतपूर्व रक्षण प्रदान करने की कृपा कीजिए और केवल ज्ञान स्वरूप में ही रहने की परम शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए, शक्ति दीजिए!

- **जय सच्चिदानंद**

श्री सीमंधर स्वामी की आरती

जय ‘सीमंधर स्वामी, प्रभु तीर्थंकर वर्तमान,
महाविदेह क्षेत्रे विचरता, (2) भरत ऋणानुबंध. जय...

‘दादा भगवान’ साक्षीए, पहोंचाडुं नमस्कार ...(स्वामी)(2)
प्रत्यक्ष फल पामुं हुं, (2) माध्यम ज्ञान अवतार. जय...

पहेली आरती स्वामीनी, ॐ परमेष्टि पामे ...(स्वामी)(2)
उदासीन वृत्ति वहे, (2) कारण मोक्ष सेवे. जय...

बीजी आरती स्वामीनी, पंच परमेष्टि पामे ...(स्वामी)(2)
परमहंस पद पामी, (2) ज्ञान-अज्ञान लणे. जय...

त्रीजी आरती स्वामीनी, गणधर पद पामे ...(स्वामी)(2)
निराश्रित बंधन छूटे, (2) आश्रित ज्ञानी थये. जय...

चोथी आरती स्वामीनी, तीर्थंकर भावि ...(स्वामी)(2)
स्वामी सत्ता ‘दादा’ कने, (2) भरत कल्याण करे. जय...

पंचमी आरती स्वामीनी, केवल मोक्ष लहे ...(स्वामी)(2)
परम ज्योति भगवंत ‘हुं’, (2) अयोगी सिद्धपदे. जय...

एक समय स्वामी खोळे जे, माथुं ढाळी नमशे ...(स्वामी)(2)
अनन्य शरणुं स्वीकारी, (2) मुक्ति पदने वरे. जय...

❖❖❖❖❖

श्री सीमंधर स्वामी का जीवनचरित्र

अपने भारत वर्ष के ईशान दिशा में करोड़ों किलोमीटर की दूरी पर जंबू द्वीप के महाविदेह क्षेत्र की शुरुआत होती है। उसमें 32 विजय (क्षेत्र) हैं। इन विजयों में आठवी विजय 'पुष्पकलावती' है। उसकी राजधानी श्री पुंडरिकगिरी है। इस नगरी में गत चौबीसी के सत्रहवे तीर्थंकर श्री कुंथुनाथ भगवान के शासनकाल और अठारहवे तीर्थंकर श्री अरहनाथ जी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी भगवान का जन्म हुआ था। उनके पिता श्री श्रेयांस पुंडरिकगिरी नगरी के राजा थे। भगवान की माता का नाम सात्यकी था।

यथा समय महारानी सात्यकी ने अद्वितीय रूप और लावण्य वाले, सर्वांग-सुंदर स्वर्ण कांति वाले और वृषभ के लांछन वाले पुत्र को जन्म दिया। (वीर संवत् की गणनानुसार चैत्र कृष्णपक्ष दसवी की मध्यरात्रि के समय) बाल जिनेश्वर का जन्म मतिज्ञान, श्रुतज्ञान और अवधिज्ञान सहित ही हुआ था। उनका देह पाँच सौ धनुष्य के बराबर है। राजकुमारी श्री रुकमणी को प्रभु की अर्धांगिनी बनने का परम सौभाग्य प्राप्त हुआ।

भरत क्षेत्र में बीसवे तीर्थंकर श्री मुनिसुव्रत स्वामी और इक्कीसवे तीर्थंकर श्री नेमिनाथ जी के प्राकट्य काल के बीच, अयोध्या में राजा दशरथ के शासनकाल के दौरान और रामचंद्र जी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी ने महाभिनिष्क्रमण उदय योग से फाल्गुन शुक्लपक्ष की तृतीया के दिन दीक्षा अंगीकार की। दीक्षा अंगीकार करते ही उन्हें चौथा मन:पर्यव ज्ञान प्राप्त हुआ। दोष कर्मों की *निर्जरा* होते ही हज़ार वर्ष के छद्मस्थ काल के बाद शेष चार घाती कर्मों का क्षय करके, चैत्र शुक्ल की त्रयोदशी के दिन भगवान केवलज्ञानी और केवलदर्शनी बने। उनके दर्शन मात्र से ही जीव मोक्षगामी बनने लगे।

श्री सीमंधर स्वामी प्रभु के कल्याण यज्ञ के निमित्तों में चौरासी गणधर, दस लाख केवलज्ञानी महाराजा, सौ करोड़ साधु, सौ करोड़ साध्वी जी, नौ सौ करोड़ श्रावक और नौ सौ करोड़ श्राविका हैं।

उनके शासन रक्षक में यक्ष देव श्री चांद्रायण देव और यक्षिणी देवी श्री पांचागुली देवी हैं।

अगली चौबीसी के आठवे तीर्थंकर श्री उदय स्वामी के निर्वाणके पश्चात् और नौवे तीर्थंकर श्री पेढाळ स्वामी के जन्म से पहले श्री सीमंधर स्वामी और अन्य उन्नीस विहरमान तीर्थंकर भगवंत श्रावण शुक्ल पक्ष तृतीया के अलौकिक दिन को चौरासी लाख पूर्व की आयु पूर्ण करके निर्वाणपद प्राप्त करेंगे।

❖❖❖❖❖

मूल गुजराती शब्दों के समानार्थी शब्द

भजना – उस रूप होना

आरा – कालचक्र का बारहवाँ हिस्सा

निर्जरा – आत्म प्रदेश में से कर्मों का अलग होना

निकाल – निपटारा

ऊपरी – पूज्य, बॉस

लक्ष – जागृति

खेंच – अपनी बात को सही मानकर पकड़ रखना, आग्रह

गुंठाणां – 48 मिनट्स, गुणस्थानक

संवर – कर्म का चार्ज होना बंद हो जाना

संवरपूर्वक निर्जरा – नए कर्म बीज नहीं डलें और कर्म पूरा हो जाना

नियाणां – अपना सारा पुण्य लगाकर किसी एक चीज़ की कामना करना

लागणी – सुख-दुःख की अनुभूति, लगाव, भावुकता वाला प्रेम, भावनात्मक प्रेम

दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा प्रकाशित हिन्दी पुस्तकें

1. आत्मसाक्षात्कार
2. ज्ञानी पुरुष की पहचान
3. सर्व दु:खों से मुक्ति
4. कर्म का सिद्धांत
5. आत्मबोध
6. मैं कौन हूँ ?
7. पाप-पुण्य
8. भुगते उसी की भूल
9. एडजस्ट एवरीव्हेयर
10. टकराव टालिए
11. हुआ सो न्याय
12. चिंता
13. क्रोध
14. प्रतिक्रमण (सं, ग्रं)
16. दादा भगवान कौन ?
17. पैसों का व्यवहार (सं, ग्रं)
19. अंत:करण का स्वरूप
20. जगत कर्ता कौन ?
21. त्रिमंत्र
22. भावना से सुधरे जन्मोंजन्म
23. चमत्कार
24. प्रेम
25. समझ से प्राप्त ब्रह्मचर्य (सं, पू, उ)
28. दान
29. मानव धर्म
30. सेवा-परोपकार
31. मृत्यु समय, पहले और पश्चात्
32. निजदोष दर्शन से... निर्दोष
33. पति-पत्नी का दिव्य व्यवहार (सं)
34. क्लेश रहित जीवन
35. गुरु-शिष्य
36. अहिंसा
37. सत्य-असत्य के रहस्य
38. वर्तमान तीर्थंकर श्री सीमंधर स्वामी
39. माता-पिता और बच्चों का व्यवहार (सं)
40. वाणी, व्यवहार में... (सं)
41. कर्म का विज्ञान
42. सहजता
43. आप्तवाणी - 1
44. आप्तवाणी - 2
45. आप्तवाणी - 3
46. आप्तवाणी - 4
47. आप्तवाणी - 5
48. आप्तवाणी - 6
49. आप्तवाणी - 7
50. आप्तवाणी - 8
51. आप्तवाणी - 9
52. आप्तवाणी - 13 (पू, उ)
54. आप्तवाणी - 14 (भाग-1)
55. ज्ञानी पुरुष (भाग-1)

(सं - संक्षिप्त, ग्रं - ग्रंथ, पू - पूर्वार्ध, उ - उत्तरार्ध)

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा गुजराती भाषा में भी कई पुस्तकें प्रकाशित हुई है। वेबसाइट www.dadabhagwan.org पर से भी आप ये सभी पुस्तकें प्राप्त कर सकते हैं।

★ दादा भगवान फाउन्डेशन के द्वारा हर महीने हिन्दी, गुजराती तथा अंग्रेजी भाषा में ''दादावाणी'' मैगेज़ीन प्रकाशित होता है।

संपर्क सूत्र

दादा भगवान परिवार

अडालज : **त्रिमंदिर**, सीमंधर सिटी, अहमदाबाद-कलोल हाईवे,
पोस्ट : अडालज, जि.-गांधीनगर, गुजरात - 382421
फोन : 9328661166, 9328661177
E-mail : info@dadabhagwan.org

मुंबई : **त्रिमंदिर,** ऋषिवन, काजुपाडा, बोरिवली (E)
फोन : 9323528901

दिल्ली	9810098564	**बेंगलूर**	9590979099
कोलकता	9830080820	**हैदराबाद**	9885058771
चेन्नई	7200740000	**पूणे**	7218473468
जयपुर	8890357990	**जलंधर**	9814063043
भोपाल	6354602399	**चंडीगढ़**	9780732237
इन्दौर	6354602400	**कानपुर**	9452525981
रायपुर	9329644433	**सांगली**	9423870798
पटना	7352723132	**भुवनेश्वर**	8763073111
अमरावती	9422915064	**वाराणसी**	9795228541

U.S.A. : **DBVI Tel. :** +1 877-505-DADA (3232),
Email : info@us.dadabhagwan.org

U.K. : +44 330-111-DADA (3232)

Kenya : +254 722 722 063

UAE : +971 557316937

Dubai : +971 501364530

Australia : +61 421127947

New Zealand : +64 21 0376434

Singapore : +65 81129229

www.dadabhagwan.org

अरिहंत के दर्शन से प्राप्त होता है मोक्षफल

हम जिन्हें ज्ञान देते हैं न, वे एक-दो अवतारी बन जाते हैं। फिर उन्हें वहाँ सीमंधर स्वामी के पास ही जाना है। उन्हें सिर्फ तीर्थंकर के दर्शन करने ही बाकी रहते हैं। बस, दर्शन होने से ही मोक्ष। यह अंतिम दर्शन करते हैं न, इन दादा के दर्शन से आगे के वे दर्शन हैं। वे दर्शन हो गए कि तुरंत मोक्ष! बाकी सब तो यहाँ पर ज्ञानी पुरुष ने तैयार कर दिया है। अब तीर्थंकर द्वारा वर्क लगाना बाकी है!

यह सीमंधर स्वामी का मंदिर बन जाए तो अच्छा। लोगों के हित के लिए है। यहाँ जितने लोग सीमंधर स्वामी के दर्शन करेंगे न, उतना ही अधिक फलदायी हो जाएगा। क्योंकि ये हाज़िर तीर्थंकर कहलाते हैं। बहुत हेल्प फुल हैं! सीमंधर स्वामी के मंदिर बनने चाहिए तो इस देश का बहुत भला होगा!

– दादाश्री

मूल दीपक से प्रकटे दीपमाला

dadabhagwan.org

ISBN 978-93-90664-35-1

Printed in India

Price ₹40